WWW.GRADESETTER.COM

तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय
एवं मुंगेर विश्वविद्यालय के लिए न.-1 गेस पेपर

100 %
सुनिश्चित सफलता
का माध्यम

ALKA GUESS PAPER

प्रामाणिकता के लिए देखकर ही खरीदें।
3-D
Hologram Sticker

2020

B.A. PART - I

ECONOMICS-I
(HONOURS)

ALKA Publication
PATNA

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

ALKA GUESS PAPER

With Solved Objective Type Questions

University Exam. 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018

Economics–I (Hons)
Micro Economics
B. A. PART-I

FOR

T. M. BHAGALPUR UNIVERSITY

&

MUNGER UNIVERSITY

- ☐ भागलपुर विश्वविद्यालय परीक्षा में पूछे गये वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
- ☐ विविध वस्तुनिष्ठ प्रश्न एवं उत्तर
- ☐ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न एवं उत्तर
- ☐ विश्वविद्यालय परीक्षा में पूछे गये प्रश्न (Question Bank)

Alka Publication

Patna, Munger

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

विषय-सूची

*भागलपुर विश्वविद्यालय परीक्षा में पूछे गये वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर 5-14

विविध वस्तुनिष्ठ प्रश्न एवं उत्तर (Verious Objective Type Question) 15-22

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न एवं उत्तर (Long type Question Answer)

Q. 1. उदासीनता वक्र विश्लेषण की सहायता से यह स्पष्ट कीजिए कि उपभोक्ता किस प्रकार संतुलनावस्था प्राप्त करते हैं । Explain how the consumer attains equilibrium in terms of Indifference curve analysis. 23

(V.V.I.— Exam. 2012, 2014, 2018)

अथवा, तटस्थता वक्रों की सहायता से उपभोक्ता संतुलन की विवेचना कीजिए। (discuss consumer's equilibrium with the help of indifference curves.)

अथवा, मार्शल तथा हिक्स के अनुसार उपभोक्ता के संतुलन की क्या दशाएँ हैं? (What are the conditions of consumer's equilibrium according to Marshall and Hicks.)

Or, बाज़ार में उपभोक्ता के आचरण के अध्ययन के लिए और उपभोक्ता की संतुलन की प्राप्ति के लिए मार्शल की सीमान्त उपयोगिता विधि की अपेक्षा हिक्स की तटस्थता रेखा किस प्रकार से अधिक अच्छी विधि है ?

Q.2. उत्पादन फलन से आप क्या समझते हैं ? परिवर्तनशील अनुपात के नियम की व्याख्या कीजिए । What do you mean by Production Function ? Explain the Law of Variable Proportions. (V.V.I. Exam. 2014, 2018) 26

Or, परिवर्तनशील अनुपात के नियम की व्याख्या कीजिए । क्या यह नियम केवल कृषि क्षेत्र में लागू होता है ?

Q.3. Discuss Marginal Productivity theory of distribution. 32

वितरण के सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त की विवेचना करें ।

(V.V.I.—Exam. 2007, 2010, 2014, 2016, 2018)

अथवा, वितरण के सीमान्त उपादकता सिद्धान्त की आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए । Critically explain the marginal productivity theory of distribution.

Or, वितरण के सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए । (Examine the marginal productivity theory of distribution.)

Q.4. पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत किस प्रकार कीमत निर्धारित की जाती है ? How the price is determined under Perfect Competition ? 37

(V.V.I.—Exam. 2004, 2012, 2014, 2018)

Or, एक पूर्ण प्रतियोगी बाजार में किस प्रकार मजदूरी निर्धारित होती है ?

Or, पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत मजदूरी का निर्धारण कैसे होता है? रेखाचित्र द्वारा समझाइए। (How are wages determined under perfect competition? Explain with the help of diagram.)

Or, मजदूरी के आधुनिक सिद्धान्त की व्याख्या करें। (Explain the Modern theory of wage.)

Q. 5. कल्याण अर्थशाला में पैरेटो के सिद्धान्त की आलोचनात्मक समीक्षा करें। (Critically examine Parato's theory of Welfare Economics.) 41

(V.V.I.— Exam. 2011, 2013, 2015, 2018)

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

Or, पेरेटो मानदण्ड की सविस्तार व्याख्या करें।

Or, प्रतियोगी बाजार में पेरेटो द्वारा निर्धारित सर्वोतम संयोग की शर्तें बतलाइये।

Q. 6. लगान के आधुनिक सिद्धान्त की व्याख्या करें। किस प्रकार सभी साधनों की आय पर यह सिद्धान्त लागू किया जाता है ? Explain the Modern Theory of Rent. Show how it can be applied to all factor incomes. 49

(V.V.I.—Exam. 2005, 2008, 2012, 2014, 2016, 2018)

Or, Outline the Modern Theory of Rent.

लगान के आधुनिक सिद्धान्त का आकलन करें।

Q. 7. औसत लागत वक्र सामान्यत: 'U' आकार के क्यों होते हैं ? दीर्घकालीन लागत वक्र अपेक्षाकृत फैले हुए क्यों होते हैं ? Why are average cost curves generally 'U' shaped ? Why are long period average cost curves flatter ? 53

(V.V.I.—Exam. 2013, 2015, 2018)

अथवा, किसी फर्म का औसत लागत वक्र U-आकार का क्यों होता है? क्या औसत लागत वक्र के आकार पर समय का कोई प्रभाव पड़ता है ?

(Why is the average cost curve of a firm U-shaped ? Does time bring any effect upon the shape of the average cost curve?)

Q.8. Is the nature of economics related to Art or Science ? Explain. 58

अर्थशास्त्र की प्रकृति कला से सम्बन्धित है अथवा विज्ञान से ? उल्लेख करें।

(Exam. 2016)

Q.9. Explain the conditions of Consumer's Equilibrium with the help of Indifference Curve. 61

तटस्थता वक्र की सहायता से उपभोक्ता के संतुलन की शर्तों का उल्लेख करें।

(Exam. 2016)

Q.10. Discuss the Law of Variable proportions. 63

परिवर्तनशील अनुपात के नियम की विवेचना करें।

(Exam. 2004, 2007, 2009, 2012, 2016)

अथवा, परिवर्तनशील अनुपातों के नियम की व्याख्या कीजिए।

(Explain the law of varioable proportions.)

Q.11. Analyse the conditions of Firm's equilibrium under Perfect Competition. 68

पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत फर्म के संतुलन की शर्तों का विश्लेषण करें।

(Exam. 2004, 2006, 2008, 2009, 2012, 2016)

अथवा, पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म का संतुलन किस प्रकार होता है ?

(Explain the equilibrium of the firm under Perfect competition.)

Or, पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत फर्म की साम्यावस्था की प्राप्ति की शर्तों को विवेचना करें। (Discuss the equilibrium conditions of a firm under perfect competition.)

Or, फर्म के संतुलन से आप क्या समझते हैं ? पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत किसी फर्म के संतुलन की शर्तों की विवेचना कीजिए। What do you mean equilibrium of a firm ? (Discuss the conditions of equilibrium of a firm under perfect competition.)

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

Q. 12. Examine Knight's Theory of Profit. 73
नाइट के लाभ के सिद्धान्त का विश्लेषण करें ।
(Exam. 2006, 2011, 2014, 2016)
अथवा, लाभ के अनिश्चितता वहन सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए ।
Explain the Uncertainity-Bearing theory of Profit.
Or, नाइट के लाभ-सिद्धान्त की आलोचनात्मक समीक्षा कीजिए ।
(Examine critically the Knight's theory of profit.)
Or, नाइट के अनिश्चितता-वहन लाभ सिद्धान्त की समीक्षा कीजिए। (Examine critically Knight's uncertiany-bearing theory of profit.) Or, नाइट के लाभ सिद्धान्त की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए। (Examine critically knight's theory of profit.)
Or, "लाभ अनिश्चितता-वहन का पुरस्कार है।" इस कथन की व्याख्या कीजिए।
(Profit is a payment fet uncertainty bearing." Discuss this statement.)
Q. 13. Is it possible to measure 'Welfare' ? Elucidate. 75
क्या 'कल्याण' की माप संभव है ? स्पष्ट करें । (Exam. 2016)
अथवा, क्या कल्याण की माप सम्भव है ? स्पष्ट करें । (Is it possible to mesure welfare ? Elucidate.)
Or, क्या सामाजिक कल्याण मापनीय है ?
(Is social welfare measurable ?)
Q. 14. प्रोफेसर पीगू के कल्याणकारी अर्थशास्त्र की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए। 76
Critically explain the Professor Pigou's Welfare Economics.
(Exam. 2004, 2012, 2014)
Or, कल्याण अर्थशास्त्र के पीगू के सिद्धान्त की आलोचनात्मक समीक्षा कीजिए।
(Explain critically Pigou's theory of Welfare Economics.)
Q. 15. आर्थिक स्थैतिक एवं आर्थिक प्रावैगिक की धारणा की व्याख्या कीजिए। 78
(Explain the concept of economic statics and economic dynamics.)
(Exam. 2012)
अथवा, स्थैतिक एवं प्रावैगिक अर्थशास्त्र में अन्तर बताएँ। इन दोनों में कौन-सा अधिक उपयोगी है। (Distinguish between static and dynamic economics. Which of the two is more useful.)
Q. 16. किसी वस्तु के मूल्य में कमी के फलस्वरूप आय तथा प्रतिस्थापन प्रभावों की व्याख्या कीजिए । (Discuss the income and substitution effects of a fall in price.) 82
Or, मूल्य प्रभाव आय एवं प्रतिस्थापन प्रभावों का योग है।" व्याख्या कीजिए।
(Price effect is the sum total of income and substitution effects. Explain.)
Q. 17. समोत्पाद वक्रों की सहायता से आप उत्पादक संतुलन की व्याख्या कीजिए । 86
Explain the concept of Producer's equilibrium with the help of Equal Product curves.
(Exam. 2013)
विश्वविद्यालय परीक्षा में पूछे गये प्रश्न (Question Bank) 87-96

❖❖❖

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

विश्वविद्यालय में पूछे गये वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

T. M. Bhagalpur University Exam. 2004 में पूछे गये प्रश्नोत्तर

1. निम्नलिखित में से किसने कहा है कि आर्थिक नियम संभावना नियम है, वास्तविक सम्बन्ध नहीं ?
   (a) मार्शल (b) रॉबिन्स
   (c) सेम्युलसन (d) इनमें से कोई नहीं **Ans. (d)**
2. निम्नलिखित में से कौन सही है ?
   (a) आदम स्मिथ ने अर्थशास्त्र का भौतिकीकरण किया
   (b) मार्शल ने अर्थशास्त्र का मानवीयकरण किया
   (c) रॉबिन्सन के अर्थशास्त्र का मितव्ययीकरण किया
   (d) इनमें से सभी **Ans. (d)**
3. आर्थिक विश्लेषण के व्यष्टि और समष्टि दृष्टिकोण होते हैं :
   (a) परस्पर-विरोधी और असम्बन्धित (b) प्रतियोगी एवं स्वतंत्र
   (c) पूरक एवं स्वतंत्र (d) पूरक एवं परस्पर निर्भर **Ans. (d)**
4. मार्शल के अनुसार, उपयोगिता मापी जा सकती है :
   (a) क्रमवाचक रूप में (b) गणनावाचक रूप में
   (c) क्रमवचाक एवं गणनावाचक दोनों रूपों में
   (d) किसी भी रूप में नहीं **Ans. (c)**
5. उदासीनता वक्र विश्लेषण के अन्तर्गत, उपभोक्ता का सन्तुलन तब होता है जबकि
   (a) $MRS_{xy} > P_x/P_y$ (b) $MRS_{xy} = P_x/P$
   (c) $MRS_{xy} < P_x/P_y$ (d) इनमें से कोई नहीं **Ans. (b)**
6. दीर्घकालीन उत्पादन विश्लेषण से सम्बन्धित नियम को कहते हैं ।
   (a) आनुपातिकता का नियम (b) परिवर्तनशील अनुपातों का नियम
   (c) पैमाने के प्रतिफल के नियम (d) इनमें से कोई नहीं **Ans. (c)**
7. औसत निश्चित लागत वक्र की आकृति है :
   (a) U-आकृति (b) समानान्तर सरल रेखा
   (c) तस्तरी की आकृति (d) आयताकार अतिपरवलय **Ans. (a)**
8. फर्म के सन्तुलन के लिए MR तथा MC के बीच समानता का :
   (a) कोई शर्त नहीं है (b) आवश्यक शर्त है
   (c) प्रयाप्त शर्त है (d) अप्रासंगिक शर्त है **Ans. (b)**
9. कोई एकाधिकारी औसत आगम वक्र से उस भाग में सन्तुलन स्थापित करना चाहता है, जिसमें मांग की लोच इकाई से अधिक होती हैं, क्योंकि उस भाग में :
   (a) सीमान्त आगम धनात्मक तथा कुल आगम बढ़ता हुआ होता है ।
   (b) सीमान्त आगम शून्य तथा कुल आगम अधिकतम होता है।
   (c) सीमान्त आगम ऋणात्मक तथा कुल आगम घटता हुआ होता है ।
   (d) इनमें से कोई नहीं **Ans. (b)**
10. कल्याणकारी अर्थशास्त्र का प्रारम्भ होता है ।
    (a) जे. बी. से (b) मार्शल
    (c) पीगू (d) परेटो **Ans. (c)**

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

T. M. Bhagalpur University Exam. 2005 में पूछे गये प्रश्नोत्तर

1. निम्नलिखित कथनों के लिए सही या गलत लिखें :
(a) मूल बिन्दु के उन्नतोदर होना तटस्थता वक्र का एक गुण होता है। **Ans.** True
(b) एकाधिकारी अधिकतम लाभ प्राप्त करता है जब सीमान्त आय औसत आय से अधिक होती है । **Ans.** True
(c) उत्पादन का अर्थ है उपयोगिता का सृजन है। **Ans.** True
(d) अर्थशास्त्र में 'व्यष्टि' एवं 'समष्टि' शब्द का प्रयोग मार्शल ने किया था। **Ans.** false

2. प्रत्येक प्रश्न में दिये गये विकल्पों में सही उत्तर का चयन करें :
(a) एकाधिकार वस्तु की माँग की आड़ी लोच है :
(i) 1 (ii) 0 (iii) इकाई से कम (iv) उपर्युक्त में से कोई नहीं **Ans.** (ii)
(b) समोत्पाद वक्र है :
(i) समान लागत रेखाएँ (ii) समान उत्पाद रेखाएँ
(iii) समान आय रेखाएँ (iv) समान कुल उपयोगिता रेखाएँ **Ans.** (ii)
(c) लाभ बराबर होता है :
(i) मूल्य X मात्रा-औसत लागत X मात्रा
(ii) कुल आय-स्पष्ट लागत- आन्तरिक लागत
(iii) उपर्युक्त दोनें (iv) उपर्युक्त में से कोई नहीं **Ans.** (ii)
(d) निम्नलिखित वक्र में कौन-सा वक्र योजना वक्र कहा जाता है?
(i) दीर्घकालीन कुल लागत वक्र (ii) दीर्घकालीन औसत लागत वक्र
(iii)दीर्घकालीन सीमान्त लागत वक्र (iv) उपर्युक्त में से कोई नहीं **Ans.** (iv)
(e) रिकार्डो का लगान सिद्धान्त जाना जाता है :
(i) प्रतिष्ठित लगान सिद्धान्त से (ii) आधुनिक लगान सिद्धान्त से
(iii) आभास लगान सिद्धान्त से (iv) उपर्युक्त में से कोई नहीं **Ans.** (i)

T. M. Bhagalpur University Exam. 2006 में पूछे गये प्रश्नोत्तर

1. (A) निम्न कथनों के लिए सही या गलत लिखें :
(i) आर्थिक नियमों की तुलना गुरुत्वाकर्षण के नियम के साथ किया जाता है। **Ans.** True
(ii) एक उपभोक्ता सीमान्त उपयोगिता की मूल्य के बाराबर करता है । **Ans.** True
(iii) माँग अनुसूची की प्राप्ति एक माँग की रेखा से की जा सकती है । **Ans.** True
(iv) सीमान्त आगम $= \frac{\text{उत्पादन के इकाई में परिवर्तन}}{\text{कुल आम में परिवर्तन}}$ **Ans.** True
(v) वास्तविक मजदूरी $= \frac{\text{मौद्रिक मजदूरी}}{\text{जीवन लागत सूचकांक}}$ **Ans.** false

(B) प्रत्येक प्रश्न में दिये गये विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करें :
(i) उदासीनता वक्र रेखा के अंतर्गत उपभोक्ता के संतुलन के दो आवश्यक शर्तें निम्न प्रकार हैं ।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

(a) MRs for x and y पहली संतुलन दशा
(b) MRs for xy increases द्वितीय संतुलन दशा
(c) उपर्युक्त दोनों में से कोई नहीं **Ans. (a + b)**

(ii) एक वस्तु की मूल्य वृद्धि जिसकी रेखा ऊपर बायें नीचे दाहिनी ओर झुकती है, निम्न परिणामों को उत्पन्न करती है ?
(a) कुल खर्च यथावत् बना रहता है (b) कुल खर्च में वृद्धि
(c) कुल खर्च में कमी (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं **Ans. (b)**

(iii) The Kinky demand curve in the oligopolistic market in made of the following two segments :
(a) सापेक्ष बेलोचदार मांग रेखा (b) सापेक्ष बेलोचदार मांग रेखा
(c) उपर्युक्त दोनों (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं **Ans. (c)**

(iv) निम्नलिखित लागतों में से कौन-सा लागत बिक्री लागत कहा जाता है ?
(a) सभी प्रकार के प्रचार एवं प्रसार पर खर्च
(b) बिक्री विभागों में खर्च (c) व्यापारियों को दिया गया सीमा
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं **Ans. (a)**

(b) किन्स के ब्याज सिद्धान्त में कौन-सा मुख्य तत्व सम्मिलित है ?
(a) वास्तविक ब्याज दर (b) वित्तीय ब्याज दर
(c) मौद्रिक ब्याज दर (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं **Ans. (c)**

T. M. Bhagalpur University Exam. 2007 में पूछे गये प्रश्नोत्तर

(i) Which of the following commodities has the lowest elasticity of demand ?
निम्नलिखित वस्तुओं में किसकी माँग की लोच सबसे कम है ?
(a) Milk दूध (b) Black Pepper काली मिर्च
(c) Eggs अंडे (d) Car कार **Ans. (a)**

(ii) Who wrote the book "Value and Capital" ?
"भैल्यू एवं कैपिटल" नामक पुस्तक किसने लिखी ?
(a) J. R. Hicks जे. आर. हिक्स (b) Marshall मार्शल
(c) Robbins रॉबिन्स (d) J. K. Mehta जे. के. मेहता **Ans. (a)**

(iii) Who said, "Economics is neutral between ends" ?
किसने कहा, "अर्थशास्त्र उद्देश्यों के प्रति तटस्थ है" ?
(a) Ricardo रिकार्डो (b) Robbins रॉबिन्स
(c) Marshall मार्शल (d) Keynes केन्स **Ans. (b)**

(iv) While a seller under perfect competition equales price and marginal cost to maximise profit in order to maximise profit a monopolist should equate :
जहाँ एक विक्रेता पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति को अधिकतम करने के लिये मूल्य और सीमान्त लागत में समानता लाता है तो एकाधिकारी को मुनाफा अधिकतम करने के लिय समानता लाना चाहिए :
(a) AC and MC औसत लागत और सीमान्त लागत में
(b) AR and MR औसत आय और सीमान्त आय में
(c) MR and MC सीमान्त आय और सीमान्त लागत में

WWW.GRADESETTER.COM

(d) TC and TR कुल लागत और कुल आय में Ans. (c)

(v) Accroding to Ricardian theory of rent, rent arises due to the :
रिकार्डो के लगान सिद्धान्त के अनुसार लगान प्राप्त होता है :
(a) Fertility of land भूमि की उर्वराशक्ति के कारण
(b) Scarcity of land भूमि की कमी के कारण
(c) Differential fertility of land भूमि की उर्वराशक्ति में अन्तर के कारण
(d) Fixity of Supply of land भूमि की पूर्ति की निश्चितता के कारण Ans. (c)

(vi) Addition to total utility of commodity is :
वस्तु की कुल उपयोगिता में अतिरिक्त वृद्धि है :
(a) Average utility औसत उपयोगिता
(b) Total utility कुल उपयोगिता
(c) Marginal utility सीमांत उपयोगिता
(d) None of these इनमें से कोई नहीं Ans. (c)

(vii) Paying the labourers is considered as :
श्रमिक को किया गया भुगतान माना जाता है :
(a) Fixed cost स्थायी लागत
(b) Indirect cost अप्रत्यक्ष लागत
(c) Variable cost परिवर्तनशील लागत
(d) Implicit cost अर्न्तनिहित लागत Ans. (c)

(viii) The author of the book Economics of Welfare" is :
'इकोनॉमिक्स ऑफ वेलफेयर'' पुस्तक के लेखक हैं :
(a) Pigou पीगू (b) Adam Smith आदम स्मिथ
(c) Marshall मार्शल (d) Malthus माल्थस Ans. (a)

(ix) Selling cost is necessary
विक्रय-लागत आवश्यक है :
(a) In pure monopoly शुद्ध एकाधिकार में
(b) In perfect competition पूर्ण प्रतियोगिता में
(c) In imperfect competition अपूर्ण प्रतियोगिता में
(d) None of these इनमें से कोई नहीं Ans. (b)

(x) According to F. Knight, Profit is :
एफ. नाइट के अनुसार लाभ है :
(a) A part of the cost of production उत्पादन लागत का एक अंग
(b) A reward for uncertainit bearing अनिश्चितता वहन का पारिश्रमिक
(c) Equal to TR – TC, TR – TC के बराबर
(d) None of these इनमें से कोई नहीं Ans. (b)

WWW.GRADESETTER.COM

T. M. Bhagalpur University Exam. 2008 में पूछे गये प्रश्नोत्तर

1. Select the right answer from the options given below :
नीचे दिये गये विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करे :

(i) यदि कुल उपयोगिता घटती हुई दर से बढ़ती है, तो सीमांत उपयोगिता :
(a) Increases बढ़ती है (b) Ramains constant स्थिर रहती है
(c) Decreases घटती है (d) None of these इनमें से कोई नहीं
Ans. (a)

(ii) मूल्य परिवर्तन के बाद भी यदि कुल आय स्थिर रहती है, तो माँग की लोच होगी :
(a) Greater than unit इकाई से अधिक (b) Less than unit इकाई से कम
(c) Equal to zero शून्य के बराबर (d) Equal to unit इकाई के बराबर
Ans. (d)

(iii) निम्नलिखित में से कौन माँग वक्र की झुकती ढाल की व्याख्या करता है?
(a) Equi- marginal utility सम-सीमान्त उपयोगिता
(b) Substitution and income effects प्रतिस्थापन एवं आय प्रभाव
(c) The law of diminishing marginal utility सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम
(d) All of the above उपर्युक्त सभी
Ans. (b)

(iv) एक पी० सी० बनाने में की बोर्ड एवं मॉनिटर की आवश्यकता पड़ती है। यदि x- axis एवं y- axis पर क्रमशः की-बोर्ड एवं मॉनिटर को मापा जाये तो समुत्पाद वक्र का आकार होगा :
(a) Convex to the origin मूल बिन्दु के प्रति उन्नतोदर
(b) Concave to the origin मूल बिन्दु के प्रति अवनतोदर
(c) L- shaped L- के आकार का
(d) Upward sloping straight line सीधी रेखा की ऊपर बढ़ती ढाल
Ans. (c)

(v) किसी खास उपभोक्ता के लिए उदासीनता वक्र की स्थिति एवं आकार निर्धारित होती है :
(a) केवल खरीदी गयी वस्तुओं की मूल्यों द्वारा
(b) रुचियों, उपलब्ध आय की मात्रा एवं खरीदी गयी वस्तुओं की मूल्यों द्वारा (c) केवल उसकी रुचियों द्वारा
(d) उपर्युकत में से कोई नहीं
Ans. (a)

(vi) लाभ का मजदूरी सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया :
(a) Taussing टॉसिग द्वारा (b) J. B. Clark जे० बी० क्लार्क द्वारा
(c) जे० ए० शुम्पीटर द्वारा (d) हॉले द्वारा **Ans. (a)**

(vii) एक उपभोक्ता संतुलन में होता है :
(a) जब वह न्यूनतम आय व्यय करता है
(b) जब वह अधिकतम आय व्यय करता है

WWW.GRADESETTER.COM

T. M. Bhagalpur University Exam. 2008 में पूछे गये प्रश्नोत्तर

1. Select the right answer from the options given below :
नीचे दिये गये विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करे :

(i) यदि कुल उपयोगिता घटती हुई दर से बढ़ती है, तो सीमांत उपयोगिता :
(a) Increases बढ़ती है (b) Ramains constant स्थिर रहती है
(c) Decreases घटती है (d) None of these इनमें से कोई नहीं
Ans. (a)

(ii) मूल्य परिवर्तन के बाद भी यदि कुल आय स्थिर रहती है, तो माँग की लोच होगी :
(a) Greater than unit इकाई से अधिक (b) Less than unit इकाई से कम
(c) Equal to zero शून्य के बराबर (d) Equal to unit इकाई के बराबर
Ans. (d)

(iii) निम्नलिखित में से कौन माँग वक्र की झुकती ढाल की व्याख्या करता है?
(a) Equi- marginal utility सम-सीमान्त उपयोगिता
(b) Substitution and income effects प्रतिस्थापन एवं आय प्रभाव
(c) The law of diminishing marginal utility सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम
(d) All of the above उपर्युक्त सभी
Ans. (b)

(iv) एक पी० सी० बनाने में की बोर्ड एवं मॉनिटर की आवश्यकता पड़ती है। यदि x- axis एवं y- axis पर क्रमश: की-बोर्ड एवं मॉनिटर को मापा जाये तो समुत्पाद वक्र का आकार होगा :
(a) Convex to the origin मूल बिन्दु के प्रति उन्नतोदर
(b) Concave to the origin मूल बिन्दु के प्रति अवनतोदर
(c) L- shaped L- के आकार का
(d) Upward sloping straight line सीधी रेखा की ऊपर बढ़ती ढाल
Ans. (c)

(v) किसी खास उपभोक्ता के लिए उदासीनता वक्र की स्थिति एवं आकार निर्धारित होती है :
(a) केवल खरीदी गयी वस्तुओं की मूल्यों द्वारा
(b) रुचियों, उपलब्ध आय की मात्रा एवं खरीदी गयी वस्तुओं की मूल्यों द्वारा (c) केवल उसकी रुचियों द्वारा
(d) उपर्युकत में से कोई नहीं
Ans. (a)

(vi) लाभ का मजदूरी सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया :
(a) Taussing टॉसिग द्वारा (b) J. B. Clark जे० बी० क्लार्क द्वारा
(c) जे० ए० शुम्पीटर द्वारा (d) हॉले द्वारा
Ans. (a)

(vii) एक उपभोक्ता संतुलन में होता है :
(a) जब वह न्यूनतम आय व्यय करता है
(b) जब वह अधिकतम आय व्यय करता है

WWW.GRADESETTER.COM

(c) जब वह अधिकतम संभव संतोष प्राप्त करता है

(d) जब संबंधित वस्तुओं के मूल्य घट रहे हों Ans. (c)

(viii) पैरेटो के सर्वसम्मत नियम का सकारात्मक मौलिक उद्देश्य है :

(a) No damage to any body किसी को हानि नहीं पहुँचाओ

(b) Gain to all सबका भला करो

(c) No damage to society समाज को हानि नहीं पहुँचाओ

(d) All of the above उपर्युकत सभी Ans. (a)

(ix) निम्नलिखित में से किनके निर्धारण में स्थिर लागत एवं कुल परिवर्तनशील लागत की जानकारी मदद करती है?

(a) औसत लागत (b) सीमान्त लागत

(c) औसत कुल लागत (d) इनमें से सभी Ans. (c)

(x) एकाधिकारी वस्तु की माँग की आड़ी लोच है :

(a) 1 (b) 0 (c) इकाई से कम (d) इनमें से कोई नहीं

Ans. (c)

T. M. Bhagalpur University Exam. 2009 में पूछे गये प्रश्नोत्तर

1. नीचे दिये गये विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करे :

(i) समष्टि अर्थशास्त्र की निम्नलिखित में से कौन-सी सीमाएँ है ?

(a) सामूहिक अर्थशास्त्रीय विरोधाभास (b) वैयक्तिक इकाइयों की अवहेलना

(c) (a) और (b) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं Ans. (d)

(ii) जब कुल उपयोगिता अधिकतम होती है, तब सीमान्त उपयोगिता :

(a) धनात्मक (b) ऋणात्मक

(c) शून्य (d) उपरोक्त तीनों दशाएँ होती हैं Ans. (c)

(iii) सम-सीमान्त उपयोगिता के नियम के प्रतिपादक कौन थे ?

(a) मार्शल (b) गोसेन

(c) रिकार्डो (d) जे. एस. मिल Ans. (b)

(iv) किस प्रकार की वस्तुओं के मूल्य में कमी होने से माँग में वृद्धि नहीं होती ?

(a) अनिवार्य वस्तुयें (b) आरामदायक वस्तुयें

(c) विलासिता की वस्तुयें (d) इनमें से कोई नहीं Ans. (a)

(v) 'गिफिन वस्तुओं' के लिए कीमत मांग की लोच होती है :

(a) ऋणात्मक (b) धनात्मक

(c) शून्य (d) इनमें कोई नहीं Ans. (a)

(vi) उत्पादन फलन को व्यक्त करता है :

(a) $Qx = Px$ (b) $Qx = f(A, B, C, D)$

(c) $Qx = Dx$ (d) इनमें से कोई नहीं Ans. (d)

(vii) किसी स्थिति में फर्म संतुलन में होता है ?

(a) $MR = MC$ (b) $MR > MC$

(c) $MR < MC$ (d) $MR = MC = 0$

Ans. (a)

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

(viii) लगान = ?

(a) वास्तविक आय-हस्तान्तरित आय (b) वास्तविक आय + हस्तान्तरित आय

(c) हस्तान्तरित आय (d) इनमें से कोई नहीं **Ans. (a)**

(ix) 'लाभ' के नव-प्रवर्तन सिद्धान्त के प्रतिपादक कौन थे ?

(a) जे. बी. क्लार्क (b) शुम्पीटर

(c) कार्ल मार्क्स (d) वाकर **Ans. (b)**

(x) उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ कुल लागत एवं कुल परिवर्तनशील लागत में अन्तर

(a) घटता जाता है (b) बढ़ता जाता है

(c) स्थिर रहता है (d) इनमें से कोई नहीं **Ans. (a)**

T. M. Bhagalpur University Exam. 2010 में पूछे गये प्रश्नोत्तर

1. नीचे दिये गये विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करे :

(a) तटस्थता वक्र का एक गुण होता है मूल बिन्दु के उन्नतोदर होना । **उत्तर-सही**

(b) उत्पादन का अर्थ है उपयोगिता का सृजन । **उत्तर-सही**

(c) माँग की रेखाएँ साधारणतया नीचे की ओर बाईं तरफ झुकती है। **उत्तर-गलत**

(d) एक तटस्थता वक्र रेखा एक समान उपयोगिता देनेवाली .रेखा नहीं है। **उत्तर-गलत**

(e) उत्पादन वृद्धि नियम मुख्यत: कृषि में लागू होता है। **उत्तर-सही**

(f) लगान का सिद्धान्त मार्शल से जुड़ा हुआ है । **उत्तर-गलत**

(g) एकाधिकार वस्तु की माँग की आड़ी लोच 1 है । **उत्तर-सही**

(h) आभास-लगान रिकार्डो से सम्बन्धित है । **उत्तर-सही**

(i) लाभ का नव-प्रवर्त्तन सिद्धान्त का प्रतिपादन क्लार्क द्वारा किया गया है **उत्तर-गलत**

(j) सर्वसममत नियम पैरेटो द्वारा प्रतिपादित है । **उत्तर-सही**

T. M. Bhagalpur University Exam. 2011 में पूछे गये प्रश्नोत्तर

1. नीचे दिये गये विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करे :

(a) मार्शल के अनुसार अर्थशास्त्र भौतिक कल्याण का विज्ञान है ।

(b) किसी वस्तु में मानव आवश्यकताओं को संतुष्ट करने की क्षमता को उपयोगिता कहते हैं ।

(c) उपभोग सभी आर्थिक क्रियाओं का आधार है ।

(d) अनिवार्य वस्तुओं की माँग प्राय लोचदार होती है ।

(e) श्रम उत्पादन का सक्रिय साधन है ।

(f) नाशवान वस्तुओं का बाजार अन्तर्राष्ट्रीय होता है।

(g) बाजार काल में माँग अहम भूमिका अदा करती है।

(h) मौद्रिक मजदूरी नकद के रूप में दी जाती है।

(i) लाभ जोखिम वहन का पुरस्कार होता है ।

(j) वस्तु विनिमय प्रणाली सर्वश्रेष्ठ विनिमय प्रणाली है ।

T. M. Bhagalpur University Exam. 2012 में पूछे गये प्रश्नोत्तर

1. नीचे दिये गये विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करे

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

(a) जब सीमान्त उपयोगिता शून्य होती है तब कुल उपयोगिता न्यूनतम होती है।
(b) माँग की रेखा बाएँ से दाएँ की ओर झुकती है ।
(c) औसत लागत एवं सीमान्त लागत एक समान है ।
(d) उत्पादन का अर्थ है उपयोगिता को नष्ट करना ।
(e) विलासिता सम्बन्धी वस्तुओं की माँग अधिक लोचदार होती है।
(f) बाजार काल में पूर्त्ति परिवर्त्तनशील होती है।
(g) एकाधिकार के अन्तर्गत उत्पादकों एवं विक्रेताओं की संख्या अधिक होती है।
(h) माँगएवं पूर्त्ति के संतुलन बिन्दु पर दीर्घकालीन सामान्य मूल्य का निर्धारण होता है।
(i) उत्पादन के प्रत्येक साधन को उसकी सीमान्त उत्पादकता के बराबर पुरस्कार दिया जाता है ।
(j) ब्याज एक विशुद्ध मौद्रिक घटना है ।

T. M. Bhagalpur University Exam. 2013 में पूछे गये प्रश्नोत्तर

1. नीचे दिये गये विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करे :

(a) अर्थशास्त्र कला और विज्ञान दोनों है।
(b) व्यक्ति अर्थशास्त्र सीमान्त विश्लेषण का प्रयोग करता है।
(c) घटिया वस्तु के लिए मांग की आय लोच ऋणात्मक होगी ।
(d) कच्चे माल की लागत परिवर्तनशील लागत है।
(e) दीर्घकालीन औसत लागत वक्र को 'नियोजन वक्र' कहते हैं।
(f) पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत AR = MR वक्र के बराबर होती है।
(g) बाजार कीमत और सामान्य कीमत एक ही है।
(h) एकाधिकारी को कभी हानि नहीं होती है।
(i) स्थैतिक समाज में लाभ प्राप्त होता है।
(j) 'आदर्श उत्पादन' पीगू की एक अवधारणा है।

T. M. Bhagalpur University Exam. 2014 में पूछे गये प्रश्नोत्तर

1. नीचे दिये गये विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करे :

(a) अर्थशास्त्र एक आदर्शात्मक विज्ञान है । सत्य
(b) क्लासिकल अर्थशास्त्री विश्लेषण के निगमन विधि पर विश्वास करते थे। सत्य
(c) उपयोगिता विश्लेषण ''गिफिन के विरोधाभास' की व्याख्या करने में असफल है। असत्य
(d) उपभोक्ता की बचत एक कल्पना है । सत्य
(e) परिवर्तनशील अनुपातों का नियम एक सार्वभौमिक नियम है । सत्य
(f) एकाधिकार के अन्तर्गत वस्तु विभेद पायी जाती है । सत्य
(g) लगान और कीमत में कोई संबंध नहीं है । असत्य
(h) एफ. एच. नाईट लाभ के अनिश्चितता वहन सिद्धानत का प्रतिपादन किये थे। सत्य
(i) दीर्घकाल में पूर्ण प्रतियोगी बाजार के अन्तर्गत सभी फर्मो को सम्भाव्य

WWW.GRADESETTER.COM

लाभ प्राप्त होता है। सत्य

(j) कल्याण अर्थशास्त्र का मुख्य उद्देश्य है सामाजिक कल्याण की माप करना। असत्य

T. M. Bhagalpur University Exam. 2015 में पूछे गये प्रश्नोत्तर

1. नीचे दिये गये विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करे :

(a) उदासीनता वक्र एक सम-सीमान्त उपयोगिता वक्र है। **उत्तर-सत्य**

(b) वर्त्तमान आर्थिक व्यवस्था में समष्टि अर्थशास्त्र का महत्व बढ़ता जा रहा है।

(c) उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ कुल लागत और कुल परिवर्त्तनशील लागत में अन्तर बढ़ता जाता है। उत्तर-गलत

(d) समोत्पाद वक्र का प्रत्यक बिन्दु, उत्पादन का समान मात्रा दर्शाता है।उत्तर-सत्य

(e) पूर्ण प्रतियोगिता में उत्पादित वस्तु को विज्ञापन का जरूरत नहीं होता है। उत्तर-सत्य

(f) बाजार में वास्तविक प्रचलित मूल्य को सामान्य मूल्य कहा जाता है।उत्तर-सत्य

(g) प्रो० जे० एम० कीन्स सर्वप्रथम 'आभास लगान' शब्द का प्रयोग किये थे। उत्तर-गलत

(h) पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में मजदूरी-दर का निर्धारण श्रम की माँग एवम् पूर्ति से होता है। उत्तर-सत्य

(i) व्यापार चक्र का जोखिम बीमा योग्य जोखिम है। उत्तर-सही

(j) कल्याणकारी अर्थशास्त्र का आधार सीमान्तवाद है। उत्तर-गलत

T. M. Bhagalpur University Exam. 2016 में पूछे गये प्रश्न

1. नीचे दिये गये विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करे :

(a) 'व्यष्टि अर्थशास्त्र' शब्द का प्रतिपादन रैगनर फ्रिश द्वारा किया गया।

(b) मांग की लोच जितनी अधिक होगी, कीमत में परिवर्तन उतना ही ज्यादा होगा।

(c) उपभोक्ता-संतुलन की आवश्यकता शर्त्त है: $MRS_{XY} = \frac{Px}{Py}$

(d) पूरक वस्तुओं के सन्दर्भ में 'तिरछी मांग वक्र' की ढाल ऋणात्मक होती है।

(e) अल्पकाल में उत्पादन के सभी साधन परिवर्त्तनशील होते हैं।

(f) जब कुल उत्पादन अधिकतम होता है, तो सीमान्त उत्पादन शून्य के बराबर हो जाता है।

(g) कुल स्थिर लागत, उत्पादन की मात्रा से स्वतंत्र होता है।

(h) एक फर्म तब सामान्य लाभ अर्जित करता है जब AR > AC

(i) एक एकाधिकारी, दीर्घकाल में केवल सामान्य लाभ अर्जित करता है।

(j) औसत स्थिर लागत वक्र U-आकार का होता है।

T. M. Bhagalpur University Exam. 2017 में पूछे गये प्रश्न

1. नीचे दिये गये विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करे :

(a) वर्त्तमान आर्थिक व्यवस्था में समष्टि अर्थशास्त्र का महत्व बढ़ता जा रहा है। उत्तर-सही

WWW.GRADESETTER.COM

(b) एक फर्म सामान्य लाभ अर्जित करता है जब P = AC ।
(c) राशिपातन कीमत विभेद का उदाहरण है ।

उत्तर-सही

(d) उपयोगिता एक मनोवैज्ञानिक अवधारणा है ।

उत्तर-गलत

(e) पूर्ण प्रतियोगिता में सीमांत आगम, उत्पादकता और सीमांत उत्पादकता का मूल्य बराबर होता है ।

(f) संतुलित कीमत पर समय तत्व के प्रभाव की व्याख्या रिकार्डो ने की थी ।

उत्तर-गलत

(g) कल्याणकारी अर्थशास्त्र का आधार सीमान्तवाद है ।

उत्तर-गलत

(h) शून्य उत्पादन पर, RC = TFC ।

(i) 'अभासी लगान' का प्रतिपादन माल्थस ने किया था ।

उत्तर-गलत

(j) बाजार में वास्तविक प्रचलित मूल्य को सामान्य मूल्य कहा जाता है ।

उत्तर-सही

T. M. Bhagalpur University Exam. 2018 में पूछे गये प्रश्न

1. एकाधिकार वस्तु की मांग की आड़ी लोच शून्य है। उत्तर–सत्य
2. बिक्री लागत, उत्पादन लागत से शामिल होता है। उत्तर–सत्य
3. उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ कुल लागत एवं कुल परिवर्तनशील लागत में अन्तर बढ़ता जाता है ? उत्तर–सत्य
4. सम-सीमान्त उपयोगिता नियम के प्रतिपादक प्रो. एच. एच. गोसन थे। उत्तर–सत्य
5. दीर्घ काल लागत में आवरण वक्र उत्पन्न होता है। उत्तर–असत्य
6. पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म की माँग वक्र पूर्णतया लम्बवत् होता है। उत्तर–असत्य
7. एकाधिकारी वस्तु की कीमत और वस्तु की पूर्ति दोनों को नियंत्रित करता है। उत्तर–सत्य
8. वितरण की सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त यह स्पष्ट करता है कि उत्पत्ति के साधनों की कीमत निर्धारण का आधार औसत उत्पादकता है। उत्तर–असत्य
9. कीमत लगान का निर्धारण करती है, पर लगान कीमत का निर्धारण नहीं करती है। उत्तर–सत्य
10. पैरेटो का कल्याणवादी अर्थशास्त्र गणनावाचक विचार पर आधारित है। उत्तर–असत्य

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर (Objective Type Question-Answer)

1. समीकरण A= B= 10 उपयोगिता की इकाइयों से आशय है :
(a) केवल उपयोगिता की क्रमवाचक माप से होता है
(b) केवल उपयोगिता गणनावाचक माप से होता है
(c) उपर्युक्त दोनों से होता है (d) उपर्युक्त में से कोई नही Ans. (c)

2. सर्वप्रथम तटस्थता वक्र का प्रयोग उपभोक्ता बचत को मापने में किसने किया ?
(a) जे० आर० हिक्स (b) गोसन (c) रोबिन्सन (d) सैम्युलसन Ans (a)

3. निम्नलिखित में से कौन-सी धारणा तटस्थता वक्र के सन्दर्भ में लागू नहीं होती है?
(a) ढाल नीचे दायीं ओर (b) उद्गम बिन्दु की ओर उन्नतोदर
(c) एक दूसरे को नहीं काटना (d) गणनावाचक दृष्किीण Ans (d)

4. X एवं Y के बीच पूर्ण प्रतिस्थापना की स्थिति में :
(a) MRS_{xy} बढ़ेगी (b) MRS_{xy} घटेगी
(c) MRS_{xy} स्थिर रहेगी (d) उक्त में से कोई नहीं Ans. (c)

5. उपभोग मूल्य (Value in Use) किसी भी आवश्यकता की प्रबलता या तीव्रता का प्रतीक :
(a) नहीं होता (b) हो सकता है
(c) उपर्युक्त कोई भी (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं Ans. (b)

6. किसी वस्तु की कुल उपयोगिता उस वस्तु के किस मूल्य से मापी जाती है ?
(a) उपयोग मूल्य (Value in Use) (b) विनिमय मूल्य (Value in Exchange)
(c) उपर्युक्त दोनों (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं Ans. (a)

7. वस्तु का उपयोग जितना सीमित होगा उतनी ही तीव्र गति से उसकी अतिरिक्त इकाइयों से प्राप्त सीमान्त उपयोगिता :
(a) बढ़ती जाएगी (b) घटती जाएगी
(c) समान बनी रहेगी (d) अनन्त की ओर चली जायेगी Ans. (b)

8. मार्शल से पूर्व सीमान्त विश्लेषण किसने प्रस्तुत किया था ?
(a) आस्ट्रिया के अर्थशास्त्रियों ने (b) कार्ल मेजर एवं जेवेन्स ने
(c) उपर्युक्त दोनों (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं Ans. (c)

9. "Theory of Games and Economic Behaviour" नामक पुस्तक निम्नलिखित में से किस अर्थशास्त्री द्वारा लिखी गयी है ?
(a) मार्शल (b) हिक्स
(c) न्यूमैन-मारगेन्सटर्न (Newman Margenstern)
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं Ans. (c)

10. घटती हुई सीमान्त उपयोगिता का नियम लागू होता है :
(a) शराबियों पर (b) कंजूसों पर
(c) विभिन्न देशों के डाक टिकट एकत्रित करने की आदत पर
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं Ans. (d)

11. हीरे-पानी का विरोधाभास स्पष्ट किया जा सकता है :
(a) सीमान्त उपयोगिता विचार द्वारा (b) कुल उपयोगिता द्वारा
(c) उपर्युक्त दोनों द्वारा (d) उपर्युक्त दोनों नहीं Ans. (c)

12. किस अर्थशास्त्री ने उपभोक्ता की बचत को 'क्रेता की बचत' नाम दिया ?
(a) रोबर्टसन (b) बोल्डिग (c) केनन (d) चेम्बरलिन Ans. (b)

13. उपभोक्ता की बचत निम्न पर आधारित है :

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

(a) उद्घाटित अधिमान सिद्धान्त (b) माँग का नियम
(c) गोसन का दूसरा नियम (d) प्रतिस्थापन नियम

14. निम्नलिखित में से किस वस्तु से 'उपभोक्ता बचत' सर्वाधिक होगी ? Ans. (b)
(a) कार का एक नया मॉडल (b) नमक (c) कोट (d) फ्रीज

15. अर्थशास्त्र प्रत्येक व्यक्ति में निम्न प्रकार के व्यवहार की आशा करता है : Ans. (b)
(a) विवेकपूर्ण (b) भावुक (c) तटस्थ (d) अविवेकपूर्ण

16. मूल्य विरोधाभास में प्रसिद्ध "हीरक-जल" विरोधाभास का उदाहरण किसने दिया : Ans. (a)
(a) एडम स्मिथ (b) मार्शल (c) हिक्स (d) ऐलन

17. जब उपभोक्ता की आय में वृद्धि के साथ उसके द्वारा माँगी जानेवाली वस्तु की मात्रा कम हो जाए तो यह प्रभाव कहलाता है : Ans. (a)
(a) धनात्मक (b) ऋणात्मक (c) शून्य (d) स्थिर

18. वास्तविक जीवन में उपभोक्ता का सन्तुलन प्रावैगिक होता है जिसे हम व्यक्त कर सकते हैं : Ans. (b)
(a) आय प्रभाव द्वारा (b) कीमत प्रभाव द्वारा
(c) प्रतिस्थापन प्रभाव द्वारा (d) उपर्युक्त सभी

19. आय प्रभाव का धनात्मक होना : Ans. (d)
(a) एक सामान्य घटना है (b) एक असामान्य घटना है
(c) एक अद्वितीय घटना है (d) एक आकस्मिक घटना है

20. जब प्रतिस्थापन प्रभाव में आय में परिवर्तन लागत-अन्तर के बराबर किया जाता है तो इसे कहते हैं : Ans. (a)
(a) स्लट्स्की का प्रतिस्थापन प्रभाव (b) हिक्स का प्रतिस्थापन प्रभाव
(c) ऐलन का प्रतिस्थापन प्रभाव (d) वास्तविक आय प्रभाव

21. गिफिन वस्तुओं के प्रति आय प्रभाव : Ans. (a)
(a) धनात्मक होता है (b) ऋणात्मक होता है
(c) शून्य होता है (d) कभी ऋणात्मक तो कभी धनात्मक होता है

22. आय प्रभाव तथा प्रतिस्थापन प्रभाव समान दिशा में कार्य करते हैं : Ans. (b)
(a) निम्न कोटि की वस्तुओं की दशा में (b) श्रेष्ठ वस्तुओं की दशा में
(c) अधिकांश वस्तुओं की दशा में (d) केवल विलासिता वस्तुओं की दशा में

23. प्रतिस्थापन प्रभाव तथा आय प्रभाव दोनों ही धनात्मक होते हैं : Ans. (c)
(a) गिफिन वस्तुओं के संदर्भ में (b) सामान्य वस्तुओं के सन्दर्भ में
(c) निम्न कोटि की वस्तुओं के सन्दर्भ में (d) आरामदायक वस्तुओं के सन्दर्भ में

24. यदि किसी निम्न कोटि की वस्तु की दशा में ऋणात्मक आय प्रभाव प्रतिस्थापन प्रभाव की तुलना में कम शक्तिशाली है तो उसकी कीमत घटने पर भी उसकी माँग सामान्य वस्तुओं की भाँति : Ans. (b)
(a) घटेगी (b) बढ़ेगी (c) अस्थिर रहेगी (d) शून्य होगी

25. कीमत रेखा को बजट रेखा भी कहते हैं। यह कथन : Ans. (b)
(a) गलत है (b) सही है
(c) अनिश्चित है (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

26. उपभोक्ता कीमत रेखा पर वस्तुओं के उस संयोग का चुनाव करेगा जो सम्भव तटस्थता वक्र स्थित है। यह कथन : Ans. (b)

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

(a) सही है (b) गलत है
(c) अनिश्चित है (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं Ans. (a

27. उपयोगिता 'व्यक्तिनिष्ठ' विचार है, इसका आशय है :
(a) एक वस्तु की उपयोगिता सभी के लिए समान होती है
(b) विभिन्न वस्तुओं की उपयोगिता भिन्न-भिन्न होती है
(c) उपयोगिता मापनीय है (d) उपयोगिता हमेशा धनात्मक होती है Ans. (b

28. स्थायी सन्तुलन में परिवर्तित किया गया चर :
(a) अपनी पूर्वावस्था से दूर हट जाता है (b) अपनी पूर्वावस्था में वापस लौट जाता है
(c) उपर्युक्त दोनों स्थितियाँ सम्भव (d) उपर्युक्त दोनों स्थितियाँ असम्भव
Ans. (b)

29. पीगू के अनुसार भारी पेंदीवाला पानी का जहाज उदाहरण है :
(a) स्थिर साम्य का (b) अस्थिर साम्य का
(c) उदासीन साम्य का (d) उपर्युक्त सभी असत्य Ans. (a)

30. स्थैतिक साम्य में समयावधि :
(a) स्थिर रहती है (b) बदलती रहती है
(c) से कोई सम्बन्ध नहीं (d) बढ़ती है Ans. (a)

31. प्रत्येक वर्ष पेट्रोल के कीमत की वृद्धि उदाहरण है :
(a) स्थिर सन्तुलन का (b) उदासीन सन्तुलन का
(c) अस्थिर सन्तुलन का (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं Ans. (c)

32. सामान्य साम्य विश्लेषण प्रस्तुत करता है :
(a) सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को (b) सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के एक क्षेत्र को
(c) विभिन्न क्षेत्रों की पारस्परिक निर्भरता को (d) उपर्युक्त सभी सत्य Ans. (c)

33. आंशिक साम्य विश्लेषण प्रस्तुत करता है :
(a) सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को (b) सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के एक क्षेत्र को
(c) विभिन्न क्षेत्रों की तुलनात्मक स्थिति को (d) उपर्युक्त सभी सत्य Ans. (b)

34. जंगल की बनावट उदाहरण है :
(a) स्थैतिक साम्य (b) प्रावैगिक साम्य
(c) आंशिक साम्य (d) सामान्य साम्य Ans. (a)

35. दीर्घकालीन साम्य में फर्म अपनी उत्पादन मात्रा का निर्धारण करेगी जहाँ :
(a) $AR = AC \neq MC = MR$ (b) $AR \neq AC = MC = MR$
(c) $AR = AC = MC \neq MR$ (d) $AR = AC = MC = MR$ Ans. (d)

36. कॉबवेब प्रमेय (Cobweb Theorem) उदाहरण है :
(a) आंशिक साम्य (b) सामान्य साम्य
(c) स्थैतिक साम्य (d) प्रावैगिक साम्य Ans. (d)

37. साम्य के स्थायित्व (Stability) की समस्या वास्तव में एक समस्या है :
(a) स्थैतिक (Static) (b) प्रावैगिक (Dynamic)
(c) स्थैतिक तथा प्रावैगिक दोनों (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं Ans. (b)

38. "अन्य बातें समान रहें" वाक्यांश पर आधारित नियम सम्बन्धित हैं :
(a) आंशिक साम्य से (b) विशिष्ट साम्य से
(c) उपर्युक्त दोनों से (d) इनमें से कोई नहीं Ans. (a)

39. बोल्डिंग के अनुसार "एक जंगल में पेड़ों का उगना-बढ़ना और मरना ...
उदाहरण है :

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

(a) स्थैतिक साम्य का (b) घात्वैगिक साम्य का
(c) उपर्युक्त दोनों का (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं Ans. (a)

40. एक समान गति से आगे बढ़ती गेंद उदाहरण है :
(a) स्थिर साम्य का (b) घात्वैगिक साम्य का
(c) उपर्युक्त दोनों का (d) उपर्युक्त किसी का नहीं Ans. (a)

41. मार्शल का विशिष्ट सन्तुलन विश्लेषण का सम्बन्ध है :
(a) सूक्ष्म आर्थिक विश्लेषण (b) बृहत् आर्थिक विश्लेषण
(c) उपर्युक्त दोनों से (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं Ans. (a)

42. किस अर्थशास्त्री का सम्बन्ध विशिष्ट सन्तुलन प्रणाली से नहीं है ?
(a) कूर्नो (b) मेंगोल (c) मार्शल एवं कैम्ब्रिज सम्प्रदाय (d) लाजेन सम्प्रदाय Ans. (b)

43. लियोन्टिफ का आगत-निर्गत विश्लेषण (Input Output Analysis) उदाहरण है :
(a) विशिष्ट सन्तुलन का (b) सामान्य सन्तुलन का
(c) स्थैतिक सन्तुलन का (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं Ans. (a)

44. प्रत्येक उत्पादक का उद्देश्य होता है :
(a) कुल आगम (TR)अधिकतम प्राप्त करना
(b) औसत आगम (AR) वृद्धि करना
(c) एकाधिकार प्राप्त करना (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं Ans. (a)

45. औसत आगम (AR) वक्र को कहा जाता है :
(a) माँग वक्र (b) उत्पादन वक्र (c) पूर्ति वक्र (d) उपर्युक्त सभी Ans. (a)

46. न्यूनतम लागत संयोग वाली फर्म (Least Cost Combination Firm) को कहा जाता है :
(a) साम्य फर्म (b) सीमान्त फर्म (c) प्रतिनिधि फर्म (d) अनुकूलतम फर्म Ans. (d)

47. सिगरेट उद्योग का उदाहरण है :
(a) पूर्ण प्रतियोगिता का (b) अपूर्ण प्रतियोगिता का
(c) एकाधिकरण का (d) अल्पविक्रेताधिकार का Ans. (a)

48. एक फर्म उस समय सन्तुलन में होती है जबकि वह अधिकतम :
(a) लाभ अर्जित कर रही हो (b) उत्पादन कर रही हो
(c) बिक्री कर रही हो (d) कीमत निर्धारित कर रही हो Ans. (a)

49. एक उद्योग के अन्तर्गत सीमान्त फर्म वह है जिसकी :
(a) कार्यक्षमता अधिकतम हो (b) लागत न्यूनतम हो
(c) जिसकी MC=MR हो (d) जो मात्र सामान्य लाभ अर्जित कर रही हो Ans. (d)

50. पूर्ण एकाधिकार :
(a) एक वास्तविकता है (b) एक कल्पना है
(c) सामान्यतया पाया जाता है (d) बहुत कम अवसरों पर पाया जाता है

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

(c) ∩ आकृति की
(d) मूल बिन्दु से 45° का कोण बनाती हुई सीधी रेखा होती है Ans. (d)

52. मार्शल का बाजार सन्तुलन विश्लेषण निम्नलिखित किस प्रकार का है ?
(a) समष्टिपरक विश्लेषण (b) दीर्घकालीन विश्लेषण
(c) अल्पकालीन विश्लेषण (d) आंशिक सन्तुलन विश्लेषण Ans. (c)

53. फर्म के लिए कीमत रेखा सीधी एवं दी हुई होती है, वह बाजार है :
(a) अल्पाधिकार (b) एकाधिकार (c) पूर्ण प्रतियोगिता (d) अपूर्ण प्रतियोगिता
Ans. (c)

54. किस बाजार में क्रेताओं तथा विक्रेताओं में निकट सम्पर्क पाया जाता है :
(a) एकाधिकार (b) पूर्ण प्रतियोगिता
(c) अपूर्ण प्रतियोगिता (d) अल्पाधिकार Ans. (b)

55. किस अर्थशास्त्री ने पूर्ण प्रतियोगिता और विशुद्ध प्रतियोगिता के बीच अन्तर को प्रमुखता से प्रस्तुत किया :
(a) बोल्डिंग (b) हिक्स (c) चेम्बरलिन (d) पीगू Ans. (c)

56. "जब हम पूर्ण प्रतियोगिता की चर्चा करते हैं तो सुविधा के लिए यह मान लेते हैं कि समस्त उत्पादक एक-दूसरे के बहुत निकट हों जिससे कि कोई परिवहन लागतें न हों।" यह कथन किस विद्वान का है :
(a) बोल्डिंग (b) मार्शल (c) स्टोनियर एवं हेग (d) चेम्बरलिन Ans. (c)

57. यह किस बाजार के बारे में कहा जाता है कि प्रत्येक फर्म Prices taker होती है Price maker नहीं :
(a) पूर्ण प्रतियोगिता (b) अपूर्ण प्रतियोगिता
(c) एकाधिकार (d) द्वियाधिकार Ans. (a)

58. वास्तविक जगत में कौन-से बाजार की स्थिति पाई जाती है :
(a) पूर्ण प्रतियोगिता (b) एकाधिकार
(c) अपूर्ण प्रतियोगिता (d) उपर्युक्त कोई नहीं Ans. (c)

59. किस बाजार में मूल्य एक समान नहीं होता :
(a) पूर्ण प्रतियोगिता में (b) अपूर्ण प्रतियोगिता में
(c) विशुद्ध प्रतियोगिता में (d) उपर्युक्त कोई नहीं Ans. (b)

60. फर्म के सन्तुलन की दो शर्तें -
(i) MR = MC (ii) MC वक्र MR को नीचे काटने पर पूरी होती है
(a) सभी बाजारों में (b) केवल पूर्ण प्रतियोगिता में
(c) केवल अपूर्ण प्रतियोगिता में (d) केवल एकाधिकार में Ans. (a)

61. कीमत-विभेद संभव है-
(a) केवल एकाधिकार में (b) प्रत्येक बाजार परिस्थिति में
(c) एकाधिकारी प्रतियोगिता में (d) पूर्ण प्रतियोगिता में Ans. (a)

62. "ब्याज किसी बाजार में पूँजी के प्रयोग की कीमत है।" किस अर्थशास्त्री का कथन है-
(a) मार्शल का (b) मेयर्स का
(c) कैंज का (d) उपर्युक्त में कोई नहीं Ans. (a)

63. पूर्ण प्रतियोगिता में निम्न में से कौन-सी स्थिति मजदूरी की होती है-
(a) AW = MW = ARP = MRP (b) AW = ARP = MW
(c) MRP > ARP (d) MRP < MW Ans. (a)

64. ब्याज की परिभाषा है-
(a) महाजन द्वारा लिया गया ब्याज, ब्याज है

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

(b) ब्याज पूँजी या ऋण योग्य कोषों के प्रयोग के लिए पुरस्कार है
(c) उपर्युक्त दोनों गलत है (d) उपर्युक्त दोनों सही है Ans. (b)

65. अपूर्ण प्रतियोगिता में मजदूरी की दर निर्धारण में -
(a) ARP > AW (b) AW = MW
(c) MW > AW (d) उपरोक्त सभी ठीक हैं Ans. (c)

66. ब्याज के क्लासीकल सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है-
(a) मार्शल ने (b) पीगू ने (c) वालरस ने (d) नाइट ने
(e) उपर्युक्त सभी ठीक है Ans. (c)

67. "ब्याज तरलता के त्याग का पुरस्कार है।" किस अर्थशास्त्री का यह कथन है-
(a) मार्शल (b) मेयर्स (c) केन्स (d) एडम स्मिथ Ans. (c)

68. प्रसिद्ध अर्थशास्त्री राबर्टसन किस देश से सम्बद्ध हैं-
(a) स्वीडन से (b) अमेरिका से
(c) इंग्लैंड से (d) जापान से Ans. (c)

69. निम्नलिखित समीकरणों में कौन-सा समीकरण ठीक है ?
(a) $VMP_1 = MPP_1$ (b) $VMP_1 = MPP_1 P_1$
(c) $VMP_1 = MPP_1 P_x$ (d) $VMP_1 = P_x$ Ans. (c)

70. मजदूरी, लाभ, लगान एवं ब्याज प्रमुख तत्व हैं-
(a) साधनों के मालिकों की मौद्रिक आय
(b) साहसी की कुशलता का परिणाम (c) साधनों का अनुकूलतम संयोग
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं Ans. (a)

71. एक फर्म उस समय सन्तुलन में होगी जब :
(a) MC_f = गिरता हुआ MRP_f (b) $MC_f > MRP_f$
(c) $MRP_f > MC_f$ (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं Ans. (a)

72. एक उत्पादक प्रति इकाई भूमि पर अधिक उत्पादन करने के लिये निम्न कार्य करेगा-
(a) गहन कृषि (b) विस्तृत कृषि
(c) सूखी कृषि (d) गहन एवं विस्तृत कृषि Ans. (a)

73. पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म का किसी साधन के लिये माँग वक्र बताया जा सकता है-
(a) VMP वक्र (b) MP वक्र
(c) MFC वक्र (d) MPP वक्र Ans. (a)

74. किसी साधन की माँग-
(a) प्रभावपूर्ण माँग कहलाती है (b) बाजार माँग कहलाती है
(c) सामान्य माँग होती है (d) व्युत्पन्न माँग होती है Ans. (d)

75. किसी साधन का MRP होता है-
(a) MPP×MR (b) MPP× साधन की कीमत
(c) MRP × MR (d) उपरोक्त में कोई नहीं Ans.(a)

76. पूर्ण प्रतियोगिता में दीर्घकाल में साधन बाजार में सन्तुलन पर -
(a) MRP = ARP = MFC = AFC (b) MRP = APC
(c) MFC > MRP (d) ARP = AFC Ans. (a)

77. कल्याणकारी अर्थशास्त्र का सम्बन्ध है-
(a) 'क्या है' से (b) 'क्या होना चाहिए' से
(c) 'कैसे होना चाहिए' से (d) उपर्युक्त कोई नहीं Ans.(b)

78. आर्थिक सिद्धांत के प्रमुख दो पहलू कौन-से हैं-
(a) धनात्मक तथा ऋणात्मक (b) वास्तविक तथा आदर्शात्मक

WWW.GRADESETTER.COM

(c) आर्थिक तथा अनार्थिक (d) उपर्युक्त कोई भी नहीं Ans. (b)

79. कल्याणकारी अर्थशास्त्र का आधार होता है–
(a) उपयोगितावाद (b) सीमान्तवाद
(c) पूँजीवाद (d) समाजवाद Ans. (a)

80. 'लाभ का वेतन सिद्धांत' के प्रतिपादक थे :
(a) एफ० टॉसिंग (b) रिकार्डो
(c) जे० एस० मिल (d) माल्थस Ans. (a)

81. आभास लगान है–
(a) फर्म के कुल लाभों के बराबर (b) फर्म के कुल लाभों से अधिक
(c) फर्म के कुल लाभों से कम (d) उपर्युक्त में कोई नहीं Ans. (b)

82. अनिश्चितता वहन करने का लाभ का सिद्धांत के प्रतिपादक थे–
(a) प्रो० नाइट (b) जे० बी० क्लार्क (c) शुम्पीटर (d) हॉल Ans. (a)

83. उत्पादन साधन की माँग होती है –
(a) व्युत्पन्न माँग (b) साधन की कीमत पर निर्भर होती है
(c) एक सामान्य माँग (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं Ans. (c)

84. आर्थिक लगान होता है–
(a) एक अतिरेक, लागत नहीं (b) एक लागत, अतिरेक नहीं
(c) उपर्युक्त दोनों (d) केवल भूमि पर ही मिलता है Ans. (a)

85. ब्याज के एजियो /आस्ट्रियन सिद्धांत के प्रतिपादक थे–
(a) बाम बावर्क (b) फिशर (c) केन्स (d) हॉल Ans. (a)

86. किसी वर्तमान उद्योग में एक साधन की पूर्ति मूल्य निर्भर करता है–
(a) उसकी इच्छा पर (b) उसकी कार्यकुशलता पर
(c) उसकी अवसर लागत पर (d) उसकी सीमान्त उत्पादकता पर Ans. (c)

87. निम्नलिखित में कौन अर्थशास्त्री वितरण के सीमान्त उत्पादकता सिद्धांत से सम्बन्धित हैं ?
(a) जे० बी० क्लार्क (b) डाल्टन (c) एजवर्थ (d) पीगू Ans. (a)

88. साधनों की कीमत निर्धारण के लिए वस्तु सिद्धांत से अलग सिद्धांत की आवश्यकता पड़ती है, क्योंकि :
(a) साधन की व्युत्पन्न माँग होती है (b) साधन की साधारण माँग होती है
(c) साधन की पूर्ति स्थिर रहती है (d) उपर्युक्त में से कोई भी Ans. (a)

89. 'The Distribution of Wealth' पुस्तक के लेखक हैं–
(a) जे० बी० से (b) रिकार्डो (c) जे० बी० क्लार्क (d) माल्थस Ans. (c)

90. एक अर्थव्यवस्था में श्रम की पूर्ति होती है–
(a) पूर्णतया बेलोचदार (b) पूर्णतया लोचदार
(c) लोचदार (d) बेलोचदार Ans. (a)

91. साधन बाजार में एकाधिकार है तो निम्न शर्त लागू होगी –
(a) VMPt > MRPt (b) MRPt = VMPt
(c) VMPt < MRPt (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं Ans. (a)

92. उत्पत्ति के स्थिर साधनों का अल्पकालीन पुरस्कार कहलाता है –
(a) लगान (b) आभास लगान
(c) अवसर लागत (d) उपर्युक्त सभी Ans. (b)

93. लाभ के सम्भावित विस्मय सिद्धांत का प्रतिपादन किसने किया ?

(a) जे० एस० मिल (b) इरविंग फिसर
(c) एफ० एच० नाइट (d) जी० एल० एस० शैकिल Ans. (d)

94. 'एक दृष्टिकोण में सभी लगान दुर्लभता लगान होते हैं तथा सभी लगान विभेदात्मक लगान हैं।' यह कथन किसका है ?
(a) मार्शल (b) रिकार्डो (c) एडम स्मिथ (d) माल्थस Ans. (a)

95. मजदूरी का सुनहरा सिद्धांत कहलाता है–
(a) मजदूरी का जीवन-स्तर सिद्धांत (b) मजदूरी का जीवन निर्वाह सिद्धांत
(c) मजदूरी कोष सिद्धांत (d) मजदूरी का सीमान्त उत्पादकता सिद्धांत Ans. (a)

96. यदि पूर्ण प्रतियोगिता होती तो AFC = MFC वक्र किस बिन्दु से गुजरता–
(a) बिन्दु A से (b) बिन्दु B से (c) बिन्दु C से (d) बिन्दु D से Ans. (a)

97. लगान की सर्वप्रथम एक स्पष्ट एवं सन्तोषजनक व्याख्या किसने दी–
(a) एडम स्मिथ (b) मार्शल (c) रिकार्डो (d) जे० एस० मिल Ans. (c)

98. रिकार्डो के अनुसार कौन-सा कथन उचित है–
(a) लगान कीमतों में शामिल नहीं होता (b) लगान एक अनार्जित आय है
(c) लगान एक आधिक्य है
(d) उपरोक्त तीनों कथन उचित हैं Ans. (d)

99. वितरण के प्रतिष्ठित सिद्धांत प्रतिपादित करने में प्रमुख योगदान है–
(a) एडम स्मिथ का (a) रिकार्डो का
(c) उपर्युक्त दोनों का (d) इनमें से कोई नहीं Ans. (c)

100. वितरण के सिद्धांत से हमारा तात्पर्य होता है –
(a) व्यक्तियों में वितरण (b) उत्पत्ति के साधनों में वितरण
(c) उपर्युक्त दोनों (d) इनमें से कोई नहीं Ans. (b)

101. किसी साधन की माँग–
(a) प्रभावपूर्ण माँग कहलाती है (b) बाजार माँग कहलाती है
(c) सामान्य माँग कहलाती है (d) व्युत्पन्न माँग कहलाती है Ans. (d)

102. वर्तमान में उत्पादन के साधन होते हैं–
(a) दो (b) तीन (c) चार (d) पाँच Ans. (d)

103. एक फर्म को अधिकतम करने के लिए बराबर करती है–
(a) MR = AR (b) MP = MFC
(c) MRP = MPP (d) VMP = MRP Ans. (b)

104. सीमान्त भौतिक उत्पादकता वक्र का आकार होता है–
(a) U आकार का (b) उल्टे U आकार का
(c) X अक्ष के समानान्तर (d) Y अक्ष के समानान्तर Ans. (b)

105. साधनों की माँग निर्भर करती है साधन की–
(a) कीमत पर (b) उत्पादकता पर
(c) लागत पर (d) व्यक्तियों की माँग पर Ans. (b)

106. 'The Distribution of Wealth' पुस्तक के लेखक हैं–
(a) जे० बी० से (b) रिकार्डो (c) जे० बी० क्लार्क (d) माल्थस Ans. (c)

107. ब्याज का नवीन प्रतिष्ठित सिद्धांत है–
(a) केन्स का सिद्धांत (b) उधार-देय कोष सिद्धांत
(c) तरलता पसन्दगी सिद्धांत (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं Ans. (b)

❖❖❖

WWW.GRADESETTER.COM

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Long Type Question-Answer)

Q. 1. उदासीनता वक्र विश्लेषण की सहायता से यह स्पष्ट कीजिए कि उपभोक्ता किस प्रकार संतुलनावस्था प्राप्त करते हैं । Explain how the consumer attains equilibrium in terms of Indifference curve analysis.

(V.V.I.— Exam. 2012, 2014, 2018)

अथवा, तटस्थता वक्रों की सहायता से उपभोक्ता संतुलन की विवेचना कीजिए। (discuss consumer's equilibrium with the help of indifference curves.)

अथवा, मार्शल तथा हिक्स के अनुसार उपभोक्ता के संतुलन की क्या दशाएँ हैं? (What are the conditions of consumer's equilibrium according to Marshall and Hicks.)

Or, बाजार में उपभोक्ता के आचरण के अध्ययन के लिए और उपभोक्ता की संतुलन की प्राप्ति के लिए मार्शल की सीमान्त उपयोगिता विधि की अपेक्षा हिक्स की तटस्थता रेखा किस प्रकार से अधिक अच्छी विधि है ?

Or, तटस्थता वक्रों द्वारा उपभोक्ता के संतुलन का विश्लेषण करें। (Analyse consumer's equilibrium using indifference curve.)

Or, "उपभोक्ता के संतुलन का निर्धारण उस बिन्दु पर होता है, जहाँ मूल्य रेखा उदासीन वक्र के स्पर्शात्मक रहती है।" विवेचना करें। ("The equilibrium of the consumer is determined at the point, where the price line is tangentical to an indifference curve." Discuss.)

Ans. अधुनिक आर्थिक विश्लेषण के अन्तर्गत उपयोगिता विश्लेषण का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान है। इसके आधार पर यह स्पष्ट किया जा सकता है कि उपभोक्ता किस प्रकार अपनी आय को व्यय करें जिससे उसे अधिकतम संतुष्टि की प्राप्ति हो सके। प्रत्येक उपभोक्ता का उद्देश्य सीमित साधनों या आय से अधिकतम संतोष प्राप्त करना होता है। अत: उपभोक्ता की स्थिति तब होगा जबकि उसे अपनी आय से अधिकतम संतुष्टि की प्राप्ति होती।

मार्शल (Marshall) ने उपभोक्ता संतुलन (Consumer's equilibrium) के लिए सम-सीमान्त उपयोगिता नियम (Law of equi-marginal utility) का प्रयोग किया। मार्शल का उपयोगिता विश्लेषण (Utility analysis) उपयोगिता के परिमाणात्मक माप (Quantitative measurement of utility) या गणनावाचक उपयोगिता (Cardinal utility) पर आधारित है। जैसे– उपभोक्ता अपनी आय को तीन वस्तुओं यथा X, Y तथा Z पर व्यय करता है। X वस्तु की सीमान्त उपयोगिता (MUx) तथा उसी कीमत (Price of X), Y वस्तु की सीमान्त उपयोगिता (M.U.y) तथा उसकी कीमत (Price of Y) तथा Z वस्तु की सीमान्त उपयोगिता (M.U.z) तथा उसकी कीमत (Price of Z) द्वारा स्पष्ट करते हैं। अत: उपभोक्ता के संतुलन के लिए उसे इस प्रकार समीकरण के रूप में व्यक्त कर सकते हैं–

$$\frac{M.U.x}{Px} = \frac{M.U.y}{Py} = \frac{M.U.z}{Pz} etc.$$

इस प्रकार मार्शल के विश्लेषण में एक वस्तु की सीमांत उपयोगिता तथा उसकी कीमत का अनुपात बराबर होना चाहिए। दूसरी वस्तु की सीमांत उपयोगिता तथा उसकी कीमत का अनुपात बराबर हो जाय। इस प्रकार मार्शल के अनुसार, उपभोक्ता का संतुलन उस बिन्दु पर होगा, जबकि विभिन्न वस्तुओं पर किए गये व्यय की मात्रा मुद्रा की प्रत्येक इकाई की सीमान्त उपयोगिता के बराबर हो जाय। उपभोक्ता अधिकतम संतोष उस स्थिति में प्राप्त करता है जबकि व्यक्ति अपने व्यय के विभिन्न वस्तुओं पर इस प्रकार आयोजित करें कि हर स्थिति में वस्तु की सीमांत उपयोगिता उसकी कीमत के बराबर हो जाय। "In order to derive maximum satisfaction a consumer will spend money on different comodities in such a way that the marginal utilities of different commodities are proportional

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

of their prices." अत: उपयोगिता विश्लेषण के अन्तर्गत उपभोक्ता संतुलन के लिए तीन बातों का होना आवश्यक है–

1. हर वस्तु की सीमांत उपयोगिता उसके मूल्य के बराबर हो।
2. सब वस्तु की सीमांत उपयोगिता इनके मूल्य के बराबर हो ।
3. यदि मुद्रा की राशि बच जाय तो उसकी सीमांत उपयोगिता भी सभी वस्तुओं की सीमांत उपयोगिता के बराबर हो।

तटस्थता वक्र विश्लेषण (Iindifference curve analysis) का प्रतिपादन प्रो. एजवर्थ पैरेटो, हिक्स, एलेन (Prof. Edgeworth, Pareto, J.r. Hicks, R.G.d. Allen) आदि ने किया तटस्थता वक्र रेखा के आधार पर उपभोक्ता संतुलन की स्थिति में तब आता है, जबकि कीमत रेखा (Price line) उसकी तटस्थता वक्र रेखा को स्पर्श (Tangent) करती है। तटस्थता वक्र विश्लेषण के अन्तर्गत उपभोक्ता संतुलन के लिए तीन बातों का होना आवश्यक है–

1. उपभोक्ता उस बिन्दु पर संतुलन में होगा जहाँ पर कि कीमत रेखा तटस्थता वक्र रेखा पर स्पर्श करता है।
2. सीमांत प्रतिस्थापन की दर (Marginal Rate of substitution) तथा कीमत अनुपात (Price ratio) बराबर हो अर्थात् $MRSxy = \frac{Px}{Py}$
3. उपभोक्ता के स्थायी संतुलन के लिए सीमांत प्रतिस्थापन की दर संतुलन बिन्दु पर घटती हुई होनी चाहिए। दूसरे शब्दों में, तटस्थता वक्र रेखा मूल बिन्दु की ओर उन्नतोदर (Convex) होनी चाहिए।

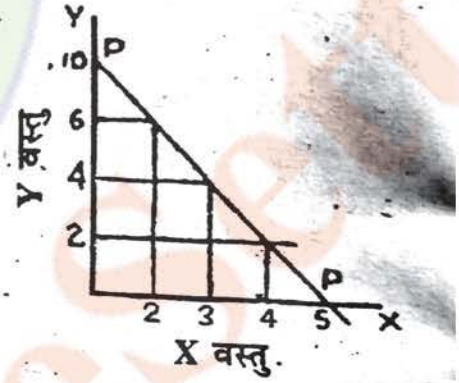

उपभोक्ता संतुलन निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित है–

(i) उपभोक्ता की आय दी हुई है। (ii) दो वस्तुओं की कीमत दी हुई है। (iii) उपभोक्ता अपनी आय के दो वस्तुओं में व्यय करता है। (iv) वस्तुओं के विभिन्न इकाइयों में एकरूपता है। (v) उपभोक्ता का उद्देश्य अधिकतम संतोष (Maximum Satisfaction) प्राप्त करना है।

तटस्थता वक्र रेखा दो वस्तुओं x और y के विभिन्न संयोग को बताता है, जिसके प्रति उपभोक्ता तटस्थ रहता है। अपनी दी हुई आय से उपभोक्ता अधिकतम संतोष प्राप्त करने के उद्देश्य से इन दोनों वस्तुओं का कौन-सा संयोग चुनेगा, वह उन वस्तुओं की सापेक्षिक कीमतों या अधिमान क्रम (Scale of preference) पर निर्भर करता है। मानलिया कि उपभोक्ता के पास एक रूपया (Rs. 1.00) है तथा उसे दो वस्तुओं x तथा y पर व्यय करता है। यह भी मान लें कि कि x की कीमत 20 पैसे प्रति इकाई तथा y की कीमत 10 पैसे प्रति इकाई है। उपभोक्ता अपनी एक रूपया की आय को x तथा y पर कई तरह से व्यय करता है। वह एक वस्तु पर अधिक तथा दूसरी वस्तु पर कम या वह एक रूपया की समस्त राशि केवल x पर या y पर खर्च करे। ऐसी स्थिति में वह 5x तथा y बिल्कुल नहीं खरीद सकता है, या 10y तथा x बिल्कुल नहीं खरीद सकता है। ऐसा भी हो सकता है कि वह दोनों वस्तुओं अर्थात् x तथा y पर व्यय करे तथा 2x तथा 6y या 3x तथा 4y या 4x तथा 2y का संयोग खरीद सकता है। इसे चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। PP मूल्य रेखा है तथा यह दोनों वस्तुओं के संयोग को बताती है, जो कि एक

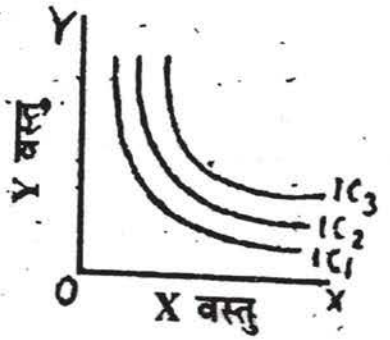

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

उपभोक्ता वस्तुओं को कीमत के आधार पर अपनी दी हुई आय से खरीद सकता है। "The price line represents the opportunities open to the consumer in the market at a given price and his income." इसे उपभोग संभावना रेखा (consumption Possibility Line) भी कहते हैं, क्योंकि यह रेखा इस बात को स्पष्ट करता है कि दी हुई कीमत एवं आय पर उपभोक्ता द्वारा कितनी कितनी मात्रा में दो वस्तुओं का उपभोग संभव है। इसे आय कीमत रेखा (Income Price Line) या बजट रेखा (Budget Line) भी कहते है। प्रत्येक उपभोक्ता के मस्तिष्क में x तथा y के विभिन्न संयोग से बनी तटस्थता की कई रेखाएँ हो सकती है जो विभिन्न स्तर पर उसे संतुष्टि प्रदान करती है। तटस्थता की विभिन्न रेखाएँ उपभोक्ता के पसन्द क्रम को स्पष्ट करती है।इसे तटस्थता के मानचित्र (Indifference Map) से स्पष्ट किया जा सकता है। तटस्थता के मानचित्र में IC_1 सबसे नीचे तथा IC_3 सबसे ऊँची तटस्थता की वक्र रेखा है। IC_2 का हर समूह उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्रदान करता है। अतः उपभोक्ता के समक्ष यह समस्या पैदा होती है कि वह कौन-सी तटस्थता वक्र रेखा का चुनाव करे। इस चुनाव में कीमत रेखा (Price Line) सहायता प्रदान करती है।

उपभोक्ता संतुलन की स्थिति प्राप्त करने के लिए उसी तटस्थता वक्र की रेखा को चुनता है जो कीमत रेखा को स्पर्श (Tangent) करती है। दूसरे शब्दों में, तटस्थता वक्र विश्लेषण के अनुसार उपभोक्ता उस बिन्दु पर संतुलन प्राप्त करता है जिस बिन्दु पर मूल्य रेखा तटस्थता की वक्र रेखा को स्पर्श करती है। (At the point at which the price line tangent to an indifference curve. वह कीमत रेखा से ऊपर की IC को नहीं चुन सकता है, क्योंकि उसकी आय इसके लिए पर्याप्त नहीं है तथा नीचे भी नहीं जा सकता है क्योंकि ऐसी स्थिति में उसे अधिकतम संतुष्टि नहीं प्राप्त होगा। इसे रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। इस रेखाचित्र में Ic_1, Ic_2, Ic_3 है। इन्हें Ic_3 एवं Ic_4 का चुनाव उपभोक्ता नहीं कर सकता है, क्योंकि उसकी आय इतनी नहीं है कि वह इस तटस्थता वक्र रेखा का चुनाव कर सके। यह मूल्य रेखा से ऊपर है। Ic_1 रेखा मूल्य रेखा के नीचे है, जो उपभोक्ता को अधिकतम संतुष्टि नहीं दे सकता है।

अतः Ic_2 ही मूल्य रेखा को R बिन्दु पर स्पर्श करती है तथा X का ON तथा Y का OK मात्रा का उपभोग करेगा। R बिन्दु पर उपभोक्ता को अधिकतम संतुष्टि मिलती है तथा यह वह संतुलन की स्थिति में है। At the point R the indifference curve Ic_2 and price line are tangent to each other इस बिन्दु पर X वस्तु Y वस्तु के लिए सीमांत प्रतिस्थापन की दर (Marginal Rate of Substitution), X तथा Y वस्तुओं की कीमत अनुपात के बराबर है। "The fundamental condition of equilibrium when the consumer gets maximum satisfaction is that the rate of substitution of Commodity X for commodity Y should be equal to the ratio of prices between the two goods."

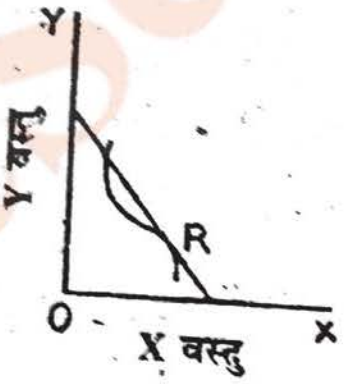

उपभोक्ता संतुलन के लिए यह आवश्यक है कि संतुलन बिन्दु पर X वस्तु की Y वस्तु के लिए प्रतिस्थापन दर घटती हुई होनी चाहिए अर्थात् Ic रेखा मूल बिन्दु की ओर उन्नतोदर (convex) हो अन्यथा संतुलन की दशा स्थायी नहीं होगी। (MRS Marginal Rate of Substitution) स्थिर नहीं हो सकती है, क्योंकि प्रत्येक अतिरिक्त इकाई से प्राप्त उपयोगिता समान होगी जो संभव नहीं है। उसी प्रकार यदि MRS बढ़ती हुई होगी तो X की इकाइयाँ बढ़ने से X वस्तु की अतिरिक्त इकाइयों की उपयोगिता Y वस्तु की अपेक्षा बढ़ती जाती है, परन्तु यह भी संभव नहीं है। अतः संतुलन के लिए MRS घटती हुई होनी चहिए। प्रो. हिक्स (Prof. Hicks) ने इस चित्र द्वारा स्पष्ट किया है–चित्र में R बिन्दु पर स्थायी संतुलन नहीं है, बल्कि बढ़ती हुई है। इसका अर्थ यह है कि उपभोक्ता R बिन्दु से बायें या दायें हटने पर उपभोक्ता ऊँची Ic रेखा पर जायेगा तथा संतुष्टि अधिक मिलेगी। अतः R बिन्दु संतुलन का

WWW.GRADESETTER.COM

बिन्दु नहीं है।

इस प्रकार मार्शल द्वारा उपयोगिता पर आधारित उपभोक्ता का संतुलन का सिद्धांत विभिन्न अवास्तविक मान्यताओं पर आधारित है, जबकि हिक्स का उपभोक्ता संतुलन का सिद्धांत इन अवास्तविक मान्यताओं को त्याग दिया है। हिक्स के सिद्धान्त में उपयोगिता को संख्यात्मक रूप में मापने की समस्या समाप्त हो जाती है। यह सिद्धांत आय-प्रभाव तथा प्रतिस्थापन प्रभाव की व्याख्या स्पष्ट रूप से करता है। इसके अन्तर्गत वस्तु की माँग स्वतंत्र एवं अप्रभावित रहना तथा मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता स्थिर है कि अवास्तविक मान्यताओं को समाप्त कर दिया गया है। इसके अन्तर्गत एक ही साथ दो या उससे अधिक वस्तुओं का उपभोक्ता द्वारा व्यय किये जाने का भी विश्लेषण किया गया है। अतः मार्शल की तुलना में हिक्स द्वारा प्रतिपादित उपभोक्ता का संतुलन का सिद्धांत श्रेष्ठ है।

Q. 2. उत्पादन फलन से आप क्या समझते हैं ? परिवर्तनशील अनुपात के नियम की व्याख्या कीजिए । What do you mean by Production Function ? Explain the Law of Variable Proportions.

(V.V.I. Exam. 2014, 2018)

Or, परिवर्तनशील अनुपात के नियम की व्याख्या कीजिए । क्या यह नियम केवल कृषि क्षेत्र में लागू होता है ?

Ans. आधुनिक समय में आर्थिक विश्लेषण के अन्तर्गत उत्पादन फलन (production Function) की धारणा का महत्वपूर्ण स्थान है। किसी वस्तु का उत्पादन उत्पत्ति के विभिन्न साधनों के सहयोग से होता है। जिस वस्तु का उत्पादन किया जाता है उसे उत्पाद या निपज (output) तथा जिन साधनों के सहयोग से उत्पादन किया जाता है, उसे आगत (input) कहते हैं। किसी फर्म या उद्योग के उत्पाद (output) तथा आगत (input) के बीच के सम्बन्ध को उत्पादन फलन या उत्पादन फंक्शन (production Function) कहते हैं। फलन या फंक्शन (Function) गणित शब्द है। यदि ऐसा कहा जाय कि X फलन है, Y का (X is the function of Y) $X = f(Y)$, अर्थात् X निर्भर करता है Y पर । गणित के तरह अर्थशास्त्र में भी कई फलनीय सम्बन्ध (Functional relationship) पाये जाते हैं । जैसे मांग मूल्य पर निर्भर करती है अर्थात् मांग एवं मूल्य के बीच फलनीय सम्बन्ध है जिसे मांग फलन (Demand Function) कहते है। इसे इस प्रकार भी व्यक्त किया जा सकता है– $D=f(P)$ अर्थात् Demand is the function of price. अथवा मांग मूल्य पर निर्भर करती है। अर्थशास्त्र में उत्पादन के क्षेत्र में उत्पादन फलन (production function) भी महत्वपूर्ण है।

आगत (Input) के अन्तर्गत उत्पादन के साधनों के अतिरिक्त वे सारी वस्तुएँ आती है जिनका उत्पादन में प्रयोग करने के लिए उत्पादक खरीदता है। दूसरी ओर उत्पाद या निपज (output) के अन्तर्गत वे वस्तुएँ सम्मिलित की जाती है, जिन्हें विभिन्न आगतों की सहायता से फर्म उत्पादित करता है वास्तव में उत्पादन की क्रिया आगतों का उत्पादन में रूपान्तरण का द्योतक है। (The act of production involves the transformation of inputs into outputs.) दूसरे शब्दों में, उत्पादन आगत का फलन है। (output is the function of inputs) अतः किसी फर्म के भौतिक आगतों एवं भौतिक उत्पाद के बीच फलनीय सम्बन्ध को उत्पादन फलन कहा जाता है। (The functional relationship between physical input and physical outputs of a firm is called producion function) उत्पादन फलन (production function) को एक समीकरण (equation) के रूप में व्यक्त किया जा सकता है–

$$p = f(a, b, c, d \ldots\ldots n)$$

इसमें —p = कुल उत्पादन की मात्रा, f उत्पादन फलन तथा a, b, c, d.....n उत्पत्ति के साधन है। एक फर्म कुल उत्पादन को बढ़ा सकती है, यदि वह एक दिए हुए समय में साधनों अर्थात् a, b, c d आदि की मात्राओं को बढ़ायें दूसरे शब्द में समीकरण से यह स्पष्ट होता

WWW.GRADESETTER.COM

है कि उत्पादन की मात्रा P उत्पादन के a, b, c, d साधनों की मात्रा, पर निर्भर करता है यदि a, b, c, d साधनों की मात्रा पर निर्भर करता है। यदि a, b, c, d आगतों में परिवर्तन किया जाय तो उत्पादन में व्यापक ही परिवर्तन होगा ।

वाटसन (watson) के अनुसार, "किसी फर्म की भौतिक आगतों एवं भौतिक निपजों के बीच के सम्बन्ध को प्राय: उत्पादन फलन कहा जाता है।" (The relationship between the physical inputs and physical outputs of a firm is generally referred to as production function.)

प्रो० स्टिग्लर (Prof. Stigler) के अनुसार, "उत्पादक सेवाओं की आगतों की दरों तथावस्तु के उत्पादन की दर के बीच के सम्बन्ध को उत्पादन फलन के नाम से पुकारा जाता है। यह तकनीकी ज्ञान का अर्थशास्त्री द्वारा संक्षेपीकरण है।" The production function is the name given to the relationship between the rates of input of productive services and the rate of output of product. It is the economist's summary of technological knowledge) प्रो० सैम्युलसन (Samuelson) के अनुसार, "उत्पादन फलन वह प्राविधिक सम्बन्ध है जो यह बताता है कि आगतों, प्रत्येक विशेष समूह द्वारा कितना उत्पादन किया जाता है, यह किसी दिए हुए प्राविधिक ज्ञान के लिए परिभाषित या सम्बन्धित होता है।"

उत्पादन फलन का सम्बन्ध समय के प्रवाह से है न कि समय रहित स्टॉक से । उत्पादन (output) का तातपर्य प्रतिघंटा, प्रतिवर्ष उत्पादन से है। आगतों (Inputs) का तात्पर्य एक विशिष्ट समय की अवधि में एक मजदूर अथवा एक मशीन की सेवाओं से है। अत: उत्पादन एक कार्य नहीं, बल्कि एक प्रक्रिया (process) है जिसके अन्तर्गत समय को नकारा नहीं जा सकता है। इस सन्दर्भ में प्रो० स्टिग्लर ने कहा है, "उत्पादन फलन समयहीन स्टॉकों के बीच के नहीं वरन् समय प्रवाहों के बीच के सम्बन्ध है। (production functions are relationship between time flows and not between timeless stocks.)

परिवर्त्तनशील अनुपात के नियम की व्याख्या

उत्पादन के क्षेत्र में उत्पत्ति के नियम का अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। **प्रो० मार्शल** (Prof. Marshall) ने क्रमागत उत्पत्ति ह्रास नियम (Law of Diminishing Returns) की क्रियाशीलता को कृषि के क्षेत्र तक ही सीमित रखा । उनके अनुसार, "उत्पादन के उस क्षेत्र में जहाँ प्रकृति की प्रधानता रहती है, क्रमागत उत्पत्ति ह्रास नियम क्रियाशील होता है तथा जहाँ मानव की प्रधानता रहती है, वहाँ क्रमागत उत्पत्ति वृद्धि नियम क्रियाशील होती है।" (While the part which nsture plays in production shows a tendency to diminishing returns, the part which man plays shows a tendency to increasing returne.) किन्तु आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने इस नियम की व्यापक क्रियाशीलता पर बल दिया है। इनके अनुसार, उत्पादन का कृषि क्षेत्र या उद्योग क्षेत्र, सभी क्षेत्रों में यह नियम समान रूप से लागू होता है। आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार उत्पादन के किसी भी क्षेत्र में अन्य साधनों को स्थिर रखकर यदि एक साधन की मात्रा में वृद्धि की जाय तो एक सीमा के बाद सीमात उत्पादन घटने लगता है तथा उत्पत्ति ह्रास नियम लागू होने लगता है। वस्तुत: यह नियम स्थिर एवं परिवर्तशील साधनों (fixed and variable factors)के अनुपात में परिवर्तन के फलस्वरूप लागू होता है। इस नियम की व्यापक क्रियाशीलता के फलस्वरूप ही आधुनिक अर्थशास्त्रियों **बेनहम (Benhm),स्टिग्लर (Stigler), श्रीमती जॉन रॉबिन्सन (Mrs. Joan Robinson),सैम्यूलसन (Samuelson)** आदि ने इसे परिवर्तनशील अनुपातों का नियम (Law of variable proportions)कहा है।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

परिवर्तनशील अनुपातों की नियम (Law of variable proportion) एक टेक्नोलॉजिकल सिद्धान्त है। आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार, किसी एक साधन को स्थिर रखा जाय तथा अन्य साधनों की मात्रा में वृद्धि की जाय अथवा एक साधन को परिवर्तशील रखा जाय तथा अन्ध साधनों को स्थिर रखा जाय तो उत्पत्ति ह्रास नियम लागू होता है। दूसरे शब्दों में, यदि अस्थिर साधनों के साथ किसी स्थिर साधनों को मिलाया जाय तो बढ़े साधनों से प्राप्त उपज क्रमश: घटेगी। (If variable factors are combined with a fixed factor the returns combined will diminish.) प्रारम्भ में उत्पादन बढ़ सकता है, साधनों के आदर्श संयोग के बाद उत्पादन घटने लगता है। इस नियम के अन्तर्गत हम साधनों के अनुपातों में परिवर्तन का उत्पादन पर प्रभाव का अध्ययन करते हैं।

प्रो० स्टिग्लर (Prof. Stigler) के अनुसार, "उत्पादन सेवाओं के अन्य आदानों (inputs) को स्थिर रखते हुए, जैसे-जैसे किसी एक साधन की मात्रा समान दर से बढ़ाई जाय, एक निश्चित बिन्दु के बाद उत्पादन में फलित वृद्धि दर घटती जायेगी, अर्थात् सीमान्त उपज में ह्रास होगा। (If the quantity of one prodcutive service is increased by equal increments, the quantities of other productive services remaining fixed the resulting increment of product will decrease after a certin points."
—Prof. G. J. Stigler, 'The Theory of price.')

प्रो० बोल्डिंग (K. E. Boulding) ने अपनी पुस्तक 'Economic Analysis में लिखा है, जैसे-जैसे उत्पादन के अन्य साधनों की निश्चित मात्रा के साथ हम किसी एक साधन में मात्रा में वृद्धि करते हैं, परिवर्तनशील साधनों की सीमात भौतिक उत्पादकरता अन्तत: अवश्य ही घटती है।" (As we increase the quantity of anyone input which is combined with a fixed quantity of the other outputs, the marginal physical productivity of the variable input must eventually deciline.) प्रो० बोल्डिंग ने Law of Diminishing Return' को 'Law of Eventually. Diminishing Marginal physical productivity.' कहा है। **श्रीमति जॉन रॉबिन्सन** के अनुसार, "क्रमागत उत्पत्ति ह्रास नियम इस बात की जानकारी देता है कि यदि उत्पत्ति के किसी एक साधन को स्थिर रखा जाय तथा अन्य साधनों की मात्रा में उत्तरोत्तर वृद्धि की जाय तो एक बिन्दु ऐसा आता है, जहाँ से उत्पादन में घटती हुई दर से वृद्धि होती है।" (The Law of Diminishing Returns, as it is usually formulated states that with a fixed amount of anyone factor of production successive increases in the amount of other factors will after a point yeild a diminishing increment of out." **—Mrs. Joan Robinson, 'The Economics of Imperfect Competition.)**

प्रो० सैम्युलसन (Prof. P. A. Samuelson) ने अपनी पुस्तक 'Economics' में लिखा है, "यदि तकनीक की स्थिति दी हुई हो तो अन्य स्थिर साधनों के साथ कुछ साधनों में वृद्धि उत्पादन में वृद्धि लायेगी, लेकिन एक बिन्दु के बाद अतिरिक्त साधनों के उसी योग के फलस्वरूप प्राप्त अतिरिक्त उत्पादन कम होता चला जायेगा।" (An increase in some outputs relative to other fixed inputs will, in a given state of technology, cause output to increase, but after a point the extia output resulting from the same addition of extra inputs will become less and less.")

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि बिन्दु के बाद जिस अनुपात में साधनों को बढ़ाया जाता है, उत्पादन उस अनुपात में नहीं बढ़ता है, बल्कि साधनों के अनुपात में उत्पादन के बढ़ने की दर घटती हुई होती है ।

यह सिद्धान्त निम्नलिखित मान्याताओं (Assumptions) पर आधारित है–

WWW.GRADESETTER.COM

1. यह नियम तभी लागू होगा जब उत्पादन के कुछ साधनों को स्थिर रखकर अन्य साधनों में परिवर्तन किया जाय। 2. यह सिद्धान्त इस मान्यता पर आधारित है कि जिस अनुपात में उत्पादन के साधनों का संयोग किया जाता है, वह अनुपात भी परिवर्तशील हैं। 3. तकनीक (Technology) में कोई परिवर्तन नहीं होनी चाहिए।

आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने इस नियम के अन्तर्गत कुल उत्पादन (Total Product) औसत उत्पादन (Average product) तथा सीमान्त उत्पादन (Marginal product) की धारणा पर विशेष ध्यान दिया। सामान्यतया एक साधन को स्थिर रखने के बाद जब अन्य साधनों को उत्तरोत्तर रूप में बढ़ाया जाता है तो उत्पादन की जो मात्रा प्राप्त होती है, उसे कुल उत्पादन (TP) कहते हैं। कुल उत्पादन में साधनों की संख्या से भाग देने पर जो भागफल प्राप्त होता है, उसे औसत उत्पादन (AP) कहते हैं तथा कुल साधनों की मात्रा में साधन की एक इकाई में परिवर्तन करने से कुल उत्पादन में जो परिवर्तन होता है, उसे सीमान्त उत्पादन (MP) कहते हैं। दूसरे शब्दों में, कुल साधनों की मात्रा में एक इकाई कम या वृद्धि करने से कुल उत्पादन में जो कमी या वृद्धि होती है, उसे सीमान्त उत्पादन कहते हैं। यदि उत्पादन का कोई एक साधन स्थिर रहे तथा अन्य साधनों की मात्रा में उत्तरोत्तर वृद्धि की जाय तो एक सीमा के बाद उत्पादन में घटती हुई दर से वृद्धि होती है। यह नियम बताता है कि एक बिन्दु के बाद उत्पादन इसलिए नहीं घटती है कि उत्पादन के साधनों की क्रमशः कम कुशल इकाइयों (less and less efficient units) लगायी जाती है, बल्कि उत्पादन इसलिए घटता है कि साधन की इकाइयों को कम कुशलता के साथ या कम प्रभावपूर्ण ढंग से लगायी जाती है। परिवर्तनशील अनुपातों के नियम की व्याख्या निम्न तालिका से की जा सकती है-

श्रम एवं पूँजी की इकाई	कुल उत्पादन (Total product)	औसत उत्पादन (Average product)	सीमान्त उत्पादन (Marginal product)
1	10	10.0	10
2	25	12.5	15
3	45	15.5	20
4	80	20.0	35
5	110	22.0	30
6	130	21.7	20
7	145	20.7	15
8	155	19.3	10
9	155	17.2	0
10	150	15.0	−5
11	140	12.7	−10
12	125	10.4	−15

तालिका से स्पष्ट है कि जैसे-जैसे परिवर्तशील साधन की अधिक इकाइयाँ लगायी जाती है, वैसे-वैसे प्रारम्भ में औसत एवं सीमान्त उत्पादन (Average and Marginal Product) दोनों बढ़ता है। परिवर्तनशील साधनों की चौथी इकाई तक सीमान्त उत्पादन (MP) बढ़ता है तथा पाँचवीं इकाई से घटने लगता है, नवम् इकाई पर यह शून्य (Zero) तथा उसके बाद ऋणात्मक (Negatives) हो जाता है।

WWW.GRADESETTER.COM

इसी प्रकार परिवर्तनशील साधनों की पाँचवीं इकाई तक औसत उत्पादन (AP) बढ़ता है तथा छठी इकाई से घटने लगता है। इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि परिवर्तनशील साधन की इकाइयों में क्रमशः वृद्धि करने पर एक बिन्दु के बाद औसत एवं सीमान्त उत्पादन दोनों घटने लगता है, क्योंकि उद्योग एवं फर्म पर साधनों की भीड़ हो जाती है तथा साधनों का आदर्श संयोग नहीं रह पाता है। औसत (AP) तथा सीमान्त उत्पादन के सम्बन्ध को एक रेखा चित्र द्वारा दिखाया जा सकता है-

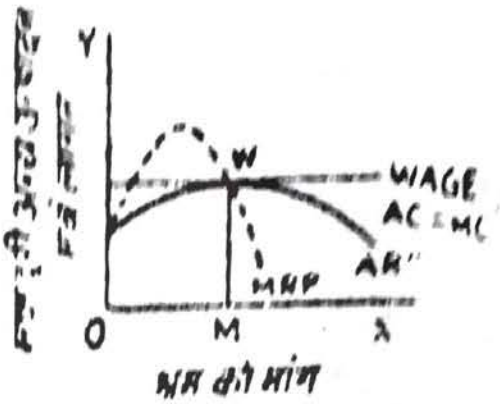

MR की मांग

चित्र से स्पष्ट हो जाता है कि प्रारम्भ में सीमान्त उत्पादन (MP) औसत उत्पादन (AP) की अपेक्षा तेजी से बढ़ता है। पुनः बाद में सीमान्त उत्पादन औसत उत्पादन की अपेक्षा तेजी से घटने लगता है। C बिन्दु पर औसत उत्पादन तथा सीमान्त उत्पादन दोनों बराबर रहता है। यह बिन्दु अधिकतम औसत उत्पादन बिन्दु होता है तथा इस बिन्दु के बाद औसत उत्पादन तथा सीमान्त उत्पादन दोनों गिरने लगता है।

परिवर्तनशील अनुपात के नियम को चित्र स्पष्ट किया जा सकता है-

यदि उत्पादन के अन्य साधनों को स्थिर रखकर किसी एक साधन में परिवर्तन किया जाय तो साधन उत्पादन सम्बन्ध (Input-out-put relationship)को तीन स्तरों (Three stages) में दिखाया जा सकता है-

(i) **प्रथम स्तर** (First Stage)–इस स्तर में कुल उत्पादन बढ़ती हुई दर से बढ़ती है, क्योंकि औसत उत्पादन तथा सीमान्त उत्पादन (AP and M P) दोनों बढ़ते हैं। दूसरे शब्दों में उत्पादन के इस स्तर में उत्पत्ति वृद्धि नियम (Law of increasing returns) लागू होता है।

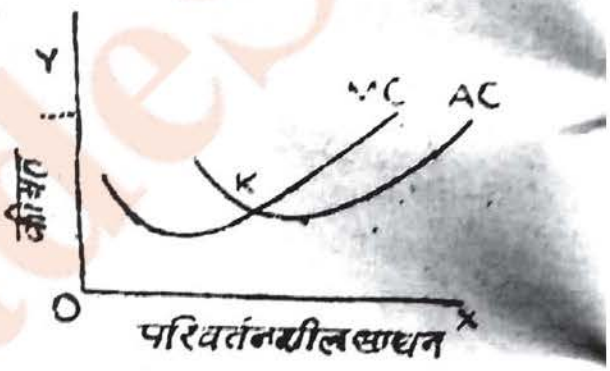

(ii) **द्वितीय स्तर** (Second Stage)– इस स्तर में कुल उत्पादन घटती हुई दर से बढ़ती है, क्योंकि औसत उत्पादन (AP) तथा सीमान्त उत्पादन (MP) दोनों घटने लगता है, लेनिक सीमान्त उत्पादन औसत उत्पादन की अपेक्षा तेजी से घटती है। उत्पादन के इस स्तर पर उत्पादन ह्रास नियम (Law of diminishing retuns) क्रियाशील होता है।

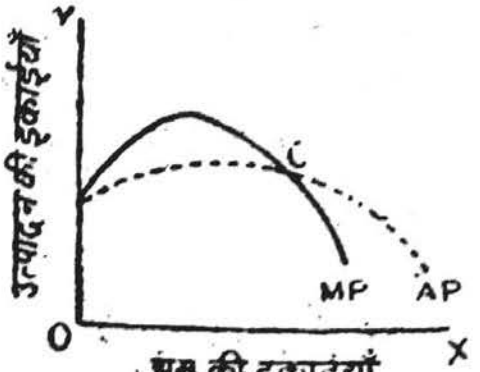

WWW.GRADESETTER.COM

(iii) तृतीय स्तर (Third Stage)– इस स्तर में कुल उत्पादन तथा औसत उत्पादन में कमी आती है तथा सीमान्त उत्पादन ऋणात्मक (Negative) हो जाता है।

यदि परिवर्तनशील अनुपात के नियम के लागत (Cost) के दृष्टि से देखा जाय तो इसे परिवर्तनशील लागत का नियम (Law of variable cost) या लागत वृद्धि नियम (Law of incresasing cost) कहेंगे। प्रारम्भ से अन्य साधनों को स्थिर रखकर जब परिवर्तनशील साधन इकाइयों को बढ़ाते हैं तो उत्पादन अनुपात से अधिक प्राप्त होता है। अत: सीमान्त लागत (MC) तथा औसत लागत (AC) दोनों घटता है। यदि परिवर्तनशील साधनों की और इकाइयों का प्रयोग किया जाय तो पहले सीमान्त लागत एक बिन्दु पर न्यूनतम (Minimum) होकर बढ़ने लगेगा और औसत लागत (AC) भी एक बिन्दु पर निम्नंतम होगा, फिर बढ़ने लगेगा, सीमान्त लागत (MC) रेखा औसत लागत (AC) रेखा के निम्नतम बिन्दु से गुजरती है। इसे रेखा चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता हैं। चित्र से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रारम्भ में MC तथा AC दोनों घटता है, परन्तु MC, AC से अधिक तेजी से घटता है। K बिन्दु तथा AC न्यूनतम हो जाता है तथा इसके बाद AC तथा MC दोनों बढ़ने लगता है, परन्तु MC, AC की तुलना में तेजी से बढ़ता है।

आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार, उत्पत्ति के नियम प्रकृति या मनुष्य की प्रधानता के कारण अलग-अलग नहीं होता, बल्कि आदर्श के अनुपात (Optimum Combination) में साधनों के संयोग के अभाव में होता है। कुछ अर्थशास्त्रियों ने इसे Law of Non-proportional output कह कर पुकारा है। आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार, यह नियम उत्पादन के प्रत्येक क्षेत्र में लागू होता है। यह अवश्य है कि कृषि में यह जल्द लागू होता है कि तथा उद्योग में देर से लागू होता है। कुछ अर्थशास्त्रियों का कहना है कि हम नियम इसलिए लागू होता है कि हम सीमित साधनों के स्थान पर उन साधनों का प्रतिस्थापन्न (Substitution) नहीं कर सकते हैं जो पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं । जैसे–कृषि में भूमि के स्थान पर श्रम एवं पूँजी का प्रतिस्थापन्न नहीं कर सकते हैं। साधनों की प्रतिस्थापन्न की लोच (Elasticity of Substitution) अपूर्ण (Imperfect) होती है। **श्रीमति जॉन रॉबिन्सन** (Mrs. Joan Robinson) के अनुसार, "उत्पादन के किसी एक साधन को दूसरे के स्थान पर एक सीमा तक ही प्रतिस्थापित किया जा सकता है यानी साधनों के प्रतिस्थापन्न की लोच असीमित नहीं होती है।" (The law of diminishing returns really states that there is a limit to the extent to which one factor of production can be substituted for another or in other words that the elasticity of substitution between factors is not infinite.) अत: उत्पादन के किसी भी क्षेत्र में जहाँ साधनों सीमित होता है, वहाँ क्रमागत उत्पत्ति ह्रास नियम लागू होता है। अत: यह नियम कृषि में ही नहीं उत्पादन के प्रत्येक क्षेत्र में लागू होता है। उद्योग में यदि कोई साधन स्थिर रहे और अन्य साधनों को बढ़ाया जाय तो उत्पादन उसी अनुपात में नहीं बढ़ता है, जिस अनुपात में साधनों की मात्रा में वृद्धि की जाती है। प्रारम्भ में संभव है कि कुल उत्पादन बढ़ते हुए दर से बढ़े, लेनिक अन्तत: यह घटने लगती है। **वाँग** (Wangh) के अनुसार, "If we add more of the other factors of production to a fixed amount of land, we reach on the points sooner or later of diminishing

marginal, average and total output diminish," इस प्रकार ऐसा कहा जा सकता है कि परिवर्तनशील अनुपातों का नियम वास्तव में पुराने उत्पत्ति ह्रास नियम का पुनर्निर्मित (reformulated) रूप है।

Q. 3. Discuss Marginal Productivity theory of distribution.
वितरण के सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त की विवेचना करें ।
(V.V.I.—Exam. 2007, 2010, 2014, 2016, 2018)

अथवा, वितरण के सीमान्त उपादकता सिद्धान्त की आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए ।Critically explain the marginal productivity theory of distribution.

Or, वितरण के सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए ।
(Examine the marginal productivity theory of distribution.)

अथवा, वितरण के सीमान्त उत्पादकता सिद्धांत की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए । (Examine critically the marginal productivity theory of distribution.

Ans. अर्थशास्त्र के अन्तर्गत वितरण की समस्या प्राचीन समय से ही जटिल एवं विवादास्पद रहा है । किसी भी देश की राष्ट्रीय आय कुल उत्पादन की मात्रा पर निर्भर करता है । उत्पादन की प्रक्रिया उत्पादन के विभिन्न साधनों के सहयोग से सम्पन्न होती है । $Q = f(X_1 \quad X_2 X_3 \text{-------} X_n)$ उत्पादन की प्रक्रिया में सहयोग के बदले उत्पादन के प्रत्येक साधनों को पुरस्कार देना अविर्नाय है, अर्थात् सम्पूर्ण उत्पादन को भूमि, श्रम, पूँजी, संगठन एवं साहस के बीच वितरण आवश्यक है । अब प्रश्न उठता है कि उत्पादन के प्रत्येक साधन को किस आधार पर पारिश्रमिक दिया जाय कि न्यायोचित हो । कुछ अर्थशास्त्रियों ने इसके लिए वितरण के सीमान्त उत्पादकता सिद्धांत (Marginal productivity theory of distribution) का प्रतिपादन किया है ।

वितरण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धांत का प्रतिपादन सर्वप्रथम **रिकार्डो** (Ricardo) ने किया । विरतण के सामान्य सिद्धांत के रूप में इसका विकास 19वीं शताब्दी के अन्त में **विकस्टीड** (Wicksteed) **वालराज** (Walras), **जे० बी० क्लार्क** (J.B. Clark), **जेवन्स** (Jevons) आदि ने किया । **विकस्टीड** ने 1890 ई० में 'The Co-Ordination of the laws of distribution' नामक पुस्तक में यह बताया किस सम-सीमान्त उत्पत्ति नियम के आधार पर यदि समान पारिश्रमिक वाले वैकल्पिक व्यवसाय सुलभ हो तो कुल उत्पादन, उत्पादन में लगे हुए साधनों के सीमान्त उत्पादन के योग के बराबर होता है । **जे० बी० क्लार्क** ने यह सिद्ध किया कि समान परिस्थितियों के अन्तर्गत व्यवस्थापक सहित उत्पादन के प्रत्येक साधन को उसके सीमान्त उत्पादकता के बराबर पारिश्रमिक मिलता है । 1901 ई० में **विकस्टीड** ने अपनी पुस्तक 'Lectures on political Economy' में समान प्रतिफल के स्थान पर न्यूनतम उत्पादन व्यय की धारणा का प्रयोग किया। आधुनिक समय में **प्रो० मार्शल** (Marshall) **प्रो० जे० आर० हिक्स** (J.R. Hicks). **श्रीमती रॉबिन्स** (Mrs. Joan Robinson) ने इस सिद्धांत का विकास किया । इस सिद्धांत को वितरण का सामान्य सिद्धांत (General theory of distribution) भी कहते हैं ।

इस सिद्धांत के अनुसार, उत्पादन-साधनों के कीमत निर्धारण का आधार सीमान्त उत्पादकता है । (According to the theory, the key of the pricing or factors of production lies in marginal productivity.) दूसरे शब्दों में उत्पादन के प्रत्येक साधन को उसकी सीमान्त उत्पादकता के बराबर पारिश्रमिक दिया जाता है । The theory states that if each factor of production is remunerated according to its marginal product, the total product is just exhausted. अल्पकाल में किसी साधन को पारिश्रमिक सीमान्त उत्पादकता से कम या अधिक मिल सकता है, परन्तु दीर्घकाल में यह सीमान्त उत्पादकता के बराबर होगा, अर्थात् $R = f(MP)$ । प्रत्येक उत्पादक उत्पादन के साधनों को उसकी उत्पादकता के कारण ही उत्पादन के क्षेत्र में नियोजित करता है । अत: उस साधनों का मूल्य

या पारिश्रमिक उसकी उत्पादकता पर निर्भर करता है । उत्पादकता अधिक रहने पर पारिश्रमिक ऊँचा तथा कम रहने पर पारिश्रमिक कम मिलेगा । उत्पादक किसी भी साधन की विभिन्न इकाईयों को उस बिन्दु पर प्रयोग करेगा, जहाँ उस साधन को चुकाये जाने वाला पारिश्रमिक उस इकाई द्वारा कुल इकाई में किये गये अंशदान के बराबर हो जाय । दूसरे शब्दों में साधन की सीमान्त इकाइ का पारिश्रमिक उसकी सीमान्त उत्पादकता के बराबर होता है । (The reward of the unit at the margin, is thus equal to its marginal productivity.)

सीमान्त उत्पादकता को जानने के लिए उत्पादन के किसी कार्य में उत्पादन के विभिन्न साधनों की मात्रा को स्थिर रखकर किसी एक साधन की मात्रा में वृद्धि या कमी करने से कुल उत्पादन में जो कमी या वृद्धि होता है, उसे सीमान्त उत्पादन कहते हैं। जैसे-100 मजदूर द्वारा 500 कलमों का उत्पादन होता है। यदि एक मजदूर बढ़ाने अर्थात् 101 मजदूर लगा देने से 505 कलमों का उत्पादन होता है तो सीमान्त उत्पादन 5 कलम होता है । ठीक उसी प्रकार, यदि एक मजदूर घटाने से अर्थात् 99 लगाने से 495 कलमों का उत्पादन होता है तो 5 कलम सीमान्त उत्पादन होगा तथा मजदूरों का पारिश्रमिक इसी के आधार पर निर्धारण होगा ।

जब सीमान्त उत्पादकता को वस्तु के रूप में व्यक्त किया जाता है तो उसे सीमान्त भौतिक उत्पादकता (Marginal physical product) अर्थात MPP कहते हैं तथा जब इसे मुद्रा के रूप में व्यक्त करते हैं तो इससे सीमान्त आय उत्पादकता (Marginal Revenue productivity) अर्थात् MRP कहते हैं । कुल उत्पादन की मात्रा को इसके मूल्य से गुणा करने पर जो रकम प्राप्त होती है, उसे कुल आय उत्पादकता (Total Revenue Productivity) कहते हैं । कुल आय उत्पादकता में उसे उत्पादित करने वाले साधनों की इकाईयों की संख्या से भाग देने पर जो भागफल होता है, उसे औसत आय उत्पादन (Average Revenue Production) अर्थात् ARP कहते हैं । **जॉन रॉबिन्सन** (Mrs. Joan Robinson) के अनुसार, "यदि अन्य साधनों का कुल मूल्य अपरिवर्तित रहता है तो सीमान्त उत्पादकता कुल उत्पादन के मूल्य में हुई वह वृद्धि है जो अतिरिक्त व्यक्ति को उत्पादन क्रिया में लगाने से होती है । दूसरे शब्दों में सीमान्त भौतिक उत्पादकता को यदि विचाराधीन इकाई अथवा समूह के सीमान्त आय से गुणा कर दिया जाए तो वह सीमान्त उत्पादकता बन जायेगा । (Marginal productivity is the increament of value of the total out put caused by employing an additional man, the total value of other factors remaining unchanged. That is to say, it is the marginal physical productivity multiplied by the marginal revenue to the unit or group under consideration.)

यह सिद्धांत दो तथ्यों पर आधारित हैं–(i) उत्पत्ति ह्रास नियम (Law of Diminishing of Returns) अर्थात् जैसे-जैसे अधिक साधनों का प्रयोग किया जाता है, सीमान्त उत्पादन घटता जाता है । (ii) प्रतिस्थापन का नियम (Law of substitution) अर्थात् कोई भी उत्पादक एक साधन के बदले दूसरे साधनों का प्रयोग तब तक करता है, जब तक कि सभी साधनों की सीमान्त उत्पादकता बराबर न हो जाय । सीमान्त भौतिक उत्पादकता (MPP) रेखा अंग्रेजी अक्षर U का ठीक उल्टा (Invested U) रूप होता है । इसे एक रेखा चित्र द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है । चित्र में MPPC सीमान्त भौतिक उत्पादकता की रेखा है । OM श्रमिक का प्रयोग तक

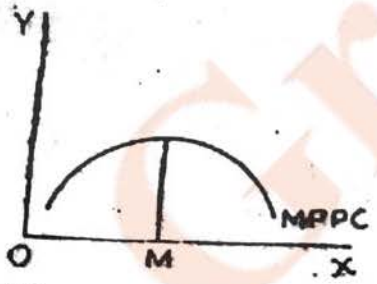

सीमान्त भौतिक उत्पादकता बढ़ती है तथा इसके बाद घटने लगती है । कोई भी उत्पादक किसी साधन का प्रयोग तब तक करता है, जब तक कि साधन की सीमान्त उत्पादकता उसके पारिश्रमिक के बराबर न हो जाय । यदि सीमान्त उत्पादकता से अधिक पारिश्रमिक होगा तो उत्पादक को हानि होगी तथा

WWW.GRADESETTER.COM

उसकी मात्रा में कमी करेगा । पुन: यदि सीमान्त उत्पादकता से पारिश्रमिक कम होगा तो साधनों की मात्रा में वृद्धि करेगा । यह क्रिया तब तक जारी रहेगा जब तक कि सीमान्त उत्पादन उसके पारिश्रमिक के बराबर न हो जाय । इसे रेखा चित्र द्वारा स्पष्ट भी किया जा सकता है–चित्र में MP सीमान्त उत्पादकता की रेखा है तथा WR मजदूरी की रेखा है ।

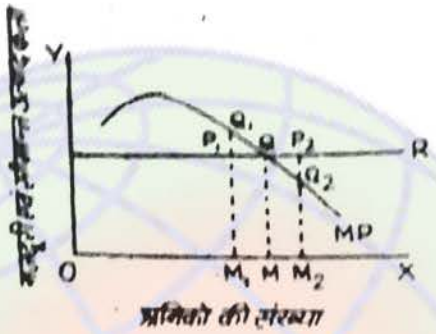

MP रेखा WR से Q बिन्दु पर मिलता है तथा यह संतुलन का बिन्दु है । OW मजदूरी सीमान्त उत्पादकता के बराबर है तथा श्रमिकों की माँग OM के बराबर होगा । Q_1 तथा Q_2 बिन्दु संतुलन का बिन्दु नहीं है । उत्पादक मजदूरों की संख्या OM_1 नहीं लगा सकता, क्योंकि ऐसी स्थिति में सीमान्त उत्पादकता M_1Q_1 होगी तथा मजदूरी M_1A होगी । अत: उत्पादक को लाभ होगा तथा मजदूरों की संख्या में वृद्धि करेगा । पुन: मजदूरों की संख्या OM_2 भी

नहीं लगा सकता, क्योंकि ऐसी स्थिति में सीमान्त उत्पादकता M_2Q_2 होगी तथा मजदूरी M_2P_2 होगी । उत्पादक को Q_2P_2 के बराबर हानि होगी तथा वह मजदूरों की संख्या में कमी करेगा । अत: Q बिन्दु पर ही मजदूरी सीमान्त उत्पादकता के बराबर है ।

वितरण के सीमान्त उत्पादकता सिद्धांत के अनुसार पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत अल्पकाल में किसी साधन की पारिश्रमिक उसकी सीमान्त आय उत्पादकता (MRP) के बराबर होता है । यह औसत आय उत्पादकता (ARP) से कम या अधिक भी हो सकता है, परन्तु दीर्घकाल में यह सीमान्त आय उत्पादकता (MRP) तथा औसत आय उत्पादकता (ARP) दोनों के बराबर होगा । इसे चित्र द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है– चित्र में MRP सीमान्त आय उत्पादन तथा ARP औसत आय उत्पादन की रेखा है । प्रारम्भ में MRP तथा ARP की रेखाएँ ऊपर उठती है तथा अधिकतम बिन्दु के बाद गिरने लगती है ।

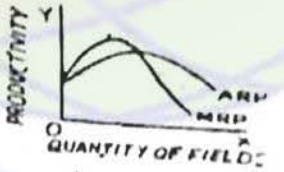

उत्पादन की प्रक्रिया में उत्पादक उत्पादन के साधनों को जो पारिश्रमिक देता है, वह साधन की लागत या मूल्य (Factor cost or price) कहलाता है ।

पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत साधनों की लागत बाजार में निर्धारित रहता है, इसलिए साधनों की सीमान्त एवं औसत लागत की रेखा (MFC तथा AFC) क्षैतिज सीधी रेखा होगी अर्थात् दोनों लागत बराबर होती है । यह चित्र से स्पष्ट हो जाता है । सामान्य आय उत्पादकता (MRP) तथा साधन की लागत या मूल्य के सम्बन्ध को रेखा चित्र द्वारा भी दिखाया जा सकता है–

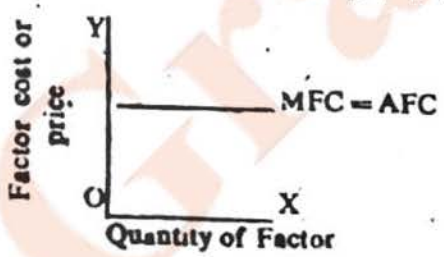

चित्र में Q बिन्दु पर सीमान्त आय उत्पादकता (MRP) तथा साधक का पारिश्रमिक बराबर है । अत: OM मात्रा उत्पादन के साधन का प्रयोग होगा तथा OP उनका मूल्य होगा । स्पष्ट है कि अल्पकाल में सीमान्त उत्पादकता के सिद्धांत के अनुसार साधन का पारिश्रमिक उसकी सीमान्त आय उत्पादकता के बराबर होता है तथा इसी से निर्धारित भी होता है, परन्तु यह औसत आय उत्पादकता (ARP) से कम भी हो सकता है ।

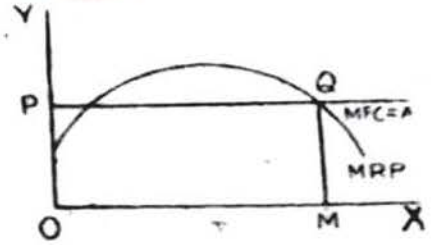

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

परन्तु दीर्घकाल में साधन की पारिश्रमिक उसकी औसत आय उत्पादकता (ARP) तथा सीमान्त आय उत्पादकता (MRP) के बराबर होता है । यदि साधन की पारिश्रमिक औसत आय उत्पादकता से अधिक हो तो उसे असामान्य हानि होगी तथा फर्म उद्योग को छोड़ देगा। इससे साधनों की माँग घटेगी, पारिश्रमिक घटकर औसत आय उत्पादकता के बराबर होगा

पुनः यदि पारिश्रमिक औसत आय उत्पादकता से कम हो तो उत्पादक को असमान्य लाभ होगा । इससे नये फर्म उद्योग में प्रवेश करेंगे, साधनों की माँग बढ़ेगी तथा पारिश्रमिक बढ़कर औसत आय उत्पादकता के बराबर होगा । अतः दीर्घकाल में किसी भी साधन का पारिश्रमिक उसके औसत एवं सीमान्त उत्पादकता के बराबर होता है । इसे रेखा चित्र द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है–

चित्र में Q बिन्दु पर ARP तथा MRP रेखा बराबर है । अतः पारिश्रमिक इसी के बराबर होगा । Q संतुलन का बिन्दु है । स्पष्ट है सीमान्त उत्पादकता सिद्धांत के अनुसार पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत दीर्घकाल में किसी साधन का पारिश्रमिक उसकी सीमान्त एवं औसत आय उत्पादकता के बराबर होता है ।

मान्यताएँ (Assumptions)–यह सिद्धांत निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित हैं-

1. बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता मौजूद है ।
2. किसी एक साधन प्रत्येक इकाई में एकरूपता है ।
3. उत्पादन के विभिन्न साधनों का एक दूसरे के स्थान पर प्रतिस्थापन किया जा सकता है।
4. उत्पादन के साधनों में पूर्ण गतिशीलता है ।
5. यह सिद्धांत दीर्घकाल में लागू होता है ।
6. अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार की स्थिति है ।
7. साधन नियोजन का क्षेत्र व्यापक है।
8. उत्पादन के क्षेत्र में क्रमागत उत्पत्ति ह्रास नियम लागू होना चहिए ।

आलोचनाएँ (Criticisms)—वितरण के सीमान्त उत्पादकता के सिद्धांत की आलोचनाएँ निम्नलिखित हैं– 1. संयुक्त उत्पादन में किसी साधन की सीमान्त उत्पादन को जानना कठिन है । **प्रो० टॉसिंग** (Taussing), **डेवनपोर्ट** (Devonport) ने इस सिद्धांत के विरुद्ध में आलोचना दी है । इन लोगों के अनुसार जिसे हम किसी एक साधन की सीमान्त उत्पादकता कहते हैं, वह वस्तुतः उत्पादन के विभिन्न साधनों से सहयोग का प्रतिफल है । अतः यदि श्रम की सीमान्त उत्पादकता जानना हो तो यह कहना कठिन है कि कुल उत्पादन में कौन-से भाग श्रम का प्रतिफल है ।

2. उत्पादन के किसी साधन की विभिन्न इकाईयों में एकरूपता का अभाव पाया जाता है । अतः यह मान्यता गलत है, बल्कि इसमें अनेकरूपता की प्रधानता रहती है । जैसे-सभी श्रमिक एक समान कार्यकुशल नहीं होते हैं ।

3. उत्पादन के विभिन्न साधनों के बीच प्रतिस्थापन पूर्णतः संभव नहीं है । यह एक सीमा तक ही संभव है । उसके बाद एक साधन का प्रयोग दूसरे साधन के स्थान पर संभव नहीं है।

4. सीमान्त उत्पादकता का सिद्धांत पूर्ण प्रतियोगिता की मान्यता पर आधारित है, जो

WWW.GRADESETTER.COM

वास्तविक जगत् में नहीं पाया जाता है । वास्तविक जीवन में अपूर्ण प्रतियोगिता या एकाधिकार की स्थिति पायी जाती है जिसके अन्तर्गत उत्पादन के साधनों को सीमान्त उत्पादकता के बराबर पारिश्रमिक नहीं मिलता है ।

5. यह सिद्धांत उत्पादन के साधनों को पूर्ण गतिशील मान लेता है, परन्तु वास्तविक जीवन में उत्पादन के साधन विभिन्न व्यवसायों एवं स्थानों के बीच गतिशील नहीं होते हैं जिसके कारण पारिश्रमिक में अन्तर होता है ।

6. यह सिद्धांत दीर्घकाल (Long period) की मान्यता पर आधारित है । परन्तु वास्तविक जीवन में हमारा सम्बन्ध अल्पकाल से है । **Keynes** ने इस संदर्भ में कहा है, "आर्थिक समस्याओं के समाधान में दीर्घकाल का कोई महत्त्व नहीं है, क्योंकि दीर्घकाल में कोई जिन्दा नहीं रह जाता।" (In the long run we are all dead.)

7. यह सिद्धांत उत्पत्ति वृद्धि नियम तथा उत्पत्ति ह्रास नियम के अन्तर्गत लागू नहीं होता है । यह सिद्धांत क्रमागत उत्पत्ति क्षमता नियम पर ही लागू होता है । उत्पत्ति वृद्धि नियम के अन्तर्गत यदि साधनों को उसकी सीमान्त उत्पादकता के आधार पर पारिश्रमिक दी जाय तो उत्पादक को हानि होगा । पुनः उत्पत्ति ह्रास नियम के अन्तर्गत उत्पादक को लाभ होगा । अतः यह सिद्धांत उत्पादन समता नियम के अन्तर्गत लागू होता है, परन्तु यह नियम उत्पादन के क्षेत्र में थोड़े समय के लिए ही चरितार्थ होता है ।

8. इस सिद्धांत में साधनों की पूर्ति पक्ष (Supply side) पर ध्यान नहीं दिया गया है, बल्कि केवल माँग पक्ष (Demand side) पर अधिक जोर दिया गया है । इसमें साधनों की पूर्ति को निश्चित मान लिया है । परन्तु दीर्घकाल में भूमि को छोड़कर सभी साधनों की पूर्ति परिवर्तशील हो जाता है । वास्तविक जीवन में साधनों का पारिश्रमिक उसकी माँग एवं पूर्ति दोनों की शक्तियों से निर्धारित होता है ।

9. **प्रो० हॉब्सन** (Hobson) तथा **वाईजर** (Weiser) के अनुसार उत्पादन के कार्य में यदि किसी साधन विशेष को हटा दिया जाय तो उत्पादन की सारी प्रक्रिया अस्त-व्यस्त हो जाएगी एवं कुल उत्पादन शून्य हो जायेगा । जैसे-कृषि के क्षेत्र में भूमि को हटाने से उत्पादन शून्य हो जायेगा । पुनः कारखाने से साहसी को हटाने से उत्पादन शून्य हो जायेगा ।

10. अधिकांश परिस्थितियों में साधनों के उपयोग में परिवर्तन करना संभव नहीं है । उत्पादन के क्षेत्र में उत्पत्ति के साधनों का जिस अनुपात में उपयोग होता है, उसमें परिवर्तन संभव नहीं है । जैसे-कपड़ा सीने की मशीन में एक साथ दो श्रमिक नहीं लगा सकते हैं । उद्योग में एक समय दो साहसी नहीं रह सकता । ऐसी स्थिति में इसके सीमान्त उत्पादकता का पता लगाना भी कठिन हो जाता है ।

11. यह सिद्धांत पूर्ण रोजगार (Full employment) की मान्यता पर आधारित है जो वास्तविक जीवन में नहीं पाया जाता है ।

12. इस सिद्धांत के विरुद्ध एक आपत्ति व्यावहारिकता के आधार पर भी की जाती है । यह सिद्धांत वस्तुतः हमें यह नहीं बताता कि किसी साधन के पारिश्रमिक का निर्धारण किस प्रकार होता है । यह साधनों के मूल्य को दिया हुआ मानकर केवल इसकी व्याख्या करता है कि एक फर्म किसी साधन की सीमान्त उत्पादकता को उसके पारिश्रमिक के बराबर किस प्रकार करती है । **प्रो० सैम्युलसन** (Samuelson) के अनुसार, "सीमान्त उत्पादकता सिद्धांत ऐसा सिद्धांत नहीं है, जिसके द्वारा मजदूरी, लगान या ब्याज की व्याख्या की जाती है, इसके विरुद्ध केवल इसकी व्याख्या की जाती है कि एक फर्म साधनों के मूल्य के ज्ञान रहने पर उन्हें किस प्रकार नियुक्त करती है । (The marginal productivity theory is not a theory that explains wages, rent or interest, on the contrary it simply explains

WWW.GRADESETTER.COM

how factors of production are hired by the firm, once their prices are known.")

13. इस सिद्धान्त के अनुसार मजदूरी का निर्धारण श्रम की सीमान्त उत्पादकता के द्वारा होता है । लेकिन मजदूरी भी श्रम की सीमान्त उत्पादकता को निर्धारित करती है। यदि श्रमिक की मजदूरी ऊँची रहती है तो उसकी कार्यक्षमता भी अधिक होती है जिसके फलस्वरूप सीमान्त उत्पादन में वृद्धि होती है । मजदूरी की दर कम रहने पर श्रमिकों की कार्यक्षमता एवं सीमान्त उत्पादकता कम होती है। अत: मजदूरी एवं सीमान्त उत्पादकता एक दूसरे पर निर्भर करता है ।

14. इस सिद्धान्त के आधार पर साधनों का कुल पारिश्रमिक कुल उत्पत्ति से कम होता है। सीमान्त उत्पादकता के आधार पर वितरित सभी साधनों का कुल पारिश्रमिक कुल उत्पादन के बराबर होना चाहिए। लेकिन सीमान्त उत्पादन के आधार पर साधनों का कुल पारिश्रमिक कुल उत्पत्ति से कम होता है, क्योंकि सीमान्त उत्पादन किसी साधन की सबसे कम उत्पत्तियों होती हैं तथा सीमान्त इकाई के पहले की इकाइयों की उत्पत्ति अधिक होती हैं। अत: यह सिद्धान्त वितरण की समस्या का समाधान करने में असमर्थ है ।

15. कुछ अर्थशास्त्रियों के अनुसार वितरण के लिए अलग सिद्धान्त की कोई आवश्यकता नहीं बल्कि साधनों का पुरस्कार साधनों की मांग एवं पूर्ति की शक्ति द्वारा निर्धारित होता है ।

इस सिद्धान्त की कटु आलोचनाएँ की गई हैं। इन आलोचनाओं के बावजूद यह सिद्धान्त एक ऐसा उपकरण देता है जिसका उपयोग विभिन्न बाजर-स्थितियों में साधनों के मूल्य निर्धारण के लिए किया जाता है ।

Q. 4. पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत किस प्रकार कीमत निर्धारित की जाती है ? How the price is determined under Perfect Competition ?

(V.V.I. Exam. 2004, 2012, 2014, 2018)

Or, एक पूर्ण प्रतियोगी बाजार में किस प्रकार मजदूरी निर्धारित होती है ?

Or, पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत मजदूरी का निर्धारण कैसे होता है? रेखाचित्र द्वारा समझाइए। (How are wages determined under perfect competition? Explain with the help of diagram.)

Or, मजदूरी के आधुनिक सिद्धान्त की व्याख्या करें। (Explain the Modern *theory of wage.)*

Ans. अर्थशास्त्रियों ने मजदूरी निर्धारण के विभिन्न सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है, परन्तु ये सभी एक पक्षीय, अव्यावहारिक एवं अवास्तविक मान्यताओं पर आधारित है। इन त्रुटियों को दूर करने के लिए आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने मजदूरी निर्धारण के एक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जिसे मजदूरी निर्धारण की माँग-पूर्ति सिद्धान्त (Demand and supply theory) या आधुनिक सिद्धान्त (Modern theory) कहा जाता है। मजदूरी श्रम की सेवाओं की कीमत है। अत: आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार, मजदूर की मजदूरी का निर्धारण उसकी माँग तथा पूर्ति की सापेक्षिक शक्तियों से होता है। यद्यपि मजदूरी, एक वस्तु के मूल्य की भाँति माँग एवं पूर्ति की शक्तियों द्वारा निर्धारित होती है, परन्तु फिर भी मजदूरी के अलग सिद्धान्त की आवश्यकता इसलिए हो जाती है कि श्रम की कुछ विशेषताएँ होती हैं, जो उसे अन्य साधनों से अलग रखती है। मजदूरी का निर्धारण मूल्य के सामान्य सिद्धान्त (General theory of value) का ही एक विशिष्ट रूप (Special case)है।

यह सिद्धान्त मजदूरी निर्धारण का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। जिस प्रकार वस्तु का मूल्य

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

सीमान्त उपयोगिता (Marginal utility) और सीमान्त लागत (Marginal cost) से निर्धारित होता है, उसी प्रकार मजदूरी भी श्रमिक की सीमान्त उत्पत्ति (Marginal product) तथा जीवन-स्तर (Standard of living) से निर्धारित होती है।

श्रम की माँग (Demand for labour)– श्रम की माँग उत्पादकों तथा साहसियों द्वारा की जाती है। उत्पादक द्वारा श्रम की माँग श्रम की सीमान्त उत्पादकता के मौद्रिक मूल्य (Money value of marginal productivity) द्वारा प्रभावित होता है। जिस प्रकार किसी दूसरे साधन की माँग उसे साधन द्वारा बनाये गये पदार्थों की माँग पर निर्भर करती है, ठीक उसी प्रकार श्रम की माँग भी उन पदार्थों की माँग में निहित है, जो श्रमिक तैयार करते हैं। (Demand for labour is derived just as the demand for any other factor is derived from the demand for its output.) यदि किसी वस्तु की माँग बढ़ जाती है, तो उत्पादक को उस वस्तु की पूर्ति बढ़ाने के लिए उन्हें श्रमिकों की माँग बढ़ानी पड़ती है, जो उन पदार्थों का उत्पादन करते हैं। कोई भी उत्पादक अधिक-से-अधिक उतनी मात्रा में श्रम की माँग करते हैं, जहाँ श्रम की सीमान्त उत्पादकता उसके पारिश्रमिक के बराबर हो जाय। इससे अधिक पारिश्रमिक देने से उत्पादक को हानि होगी। अत: श्रम की सीमान्त उत्पादकता या सीमान्त उत्पादकता का मौद्रिक मूल्य श्रम की अधिकतम सीमा है।

श्रम की माँग निम्न तत्वों पर निर्भर करती हैं–

(i) श्रम की माँग व्युत्पन्न माँग (Derived Demand) होती है । दूसरे शब्दों में, श्रम की माँग उसके द्वारा उत्पादित वस्तुओं की माँग पर निर्भर करती है। वस्तु की माँग में परिवर्तन होने पर श्रमिकों की माँग में परिवर्तन होता है।

(ii) श्रम की माँग स्थानापन्न साधनों के मूल्य (Price of the substitutive factors) पर भी निर्भर करता है। यदि स्थानापन्न वस्तुओं का मूल्य अधिक रहता है, तो श्रमिक की माँग में वृद्धि होती है।

(iii) श्रम की माँग उत्पादन की तकनीक (Technology) पर निर्भर करता है। किसी वस्तु के उत्पादन में श्रम का किसी अन्य साधन के साथ मिलने का अनुपात स्थिर या परिवर्तनशील हो सकता है। श्रम की माँग इससे प्रभावित होता है। तकनीक उत्पादन-लागत एवं उत्पादन के आकार को प्रभावित करता है। इसके विकास से श्रमिकों की सीमान्त उत्पादकता में वृद्धि होती है जिससे श्रम की माँग बढ़ती है।

वास्तव में उत्पादक उपर्युक्त तथ्यों, अर्थात् तकनीकी, पदार्थों की कीमतें, अन्य पदार्थों की कीमतें आदि के आधार पर श्रम की माँग करता है। श्रम की माँग वस्तुत: इसकी सीमान्त आय उत्पादकता पर निर्भर करती है। (The demand for labour depends upon its marginal revenue productivity).

श्रम की माँग की रेखा मजदूरी की विभिन्न दरों पर माँगी जाने वाली श्रमिकों की मात्रा को बताती है। सामान्यता यदि मजदूरी की दर अधिक है तो श्रमिकों की माँग कम होगी तथा मजदूरी कम होने पर श्रमिकों की माँग अधिक होगी । दूसरे शब्दों में, मजदूरी की दर तथा श्रम की माँग में विपरीत सम्बन्ध (Inverse relation) होते हैं, इसलिए श्रम की माँग की रेखा बायें से दायें नीचे की ओर

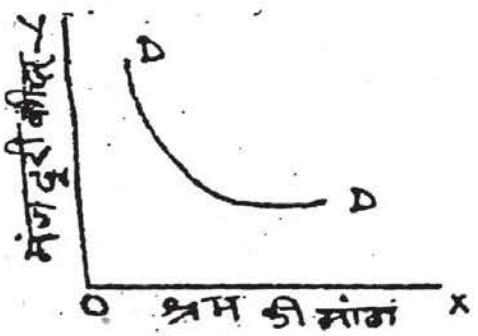

WWW.GRADESETTER.COM

गिरती हुई होती है। इसे चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। चित्र में DD श्रम की माँग की रेखा है, जो मजदूरी तथा श्रम की माँग के बीच विपरीत सम्बन्ध को बताता है।

श्रम की पूर्ति (Supply of labour)–श्रम की पूर्ति श्रमिकों द्वारा की जाती है। एक उद्योग के लिए श्रम की पूर्ति का अर्थ–

(i) एक विशेष प्रकार के श्रमिकों की संस्था जो कि विभिन्न मजदूरी की दरों पर अपनी सेवाओं को अर्पित करने को तत्पर हैं।

(ii) कार्य करने के घंटे जो कि प्रत्येक श्रमिक मजदूरी की विभिन्न दरों पर देने को तत्पर हैं। इस प्रकार श्रम की पूर्ति दो बातों पर निर्भर करती हैं–

(a) श्रमिकों की संख्या तथा (b) श्रम की कार्यक्षमता। श्रम की पूर्ति का अर्थ विभिन्न मजदूरी की दरों पर कितने श्रमिक अपने श्रम को बेचने को तैयार है। (By the Supply of labour we mean the various numbers of workers of a given type of labour which would offer themselves for employment at various wage rates.) श्रम की अपनी पूर्ति करने में त्याग करना होता है। अत: श्रमिक की ओर से एक न्यूनतम सीमा होती है, जिससे कम पुरस्कार पर वह काम करने के लिए तैयार नहीं होता है। इस प्रकार सीमान्त त्याग मजदूरी की न्यूनतम सीमा होती है। श्रम की पूर्ति विभिन्न व्यवसायों में श्रम की गतिशीलता एवं कार्य अवकाश अनुपात (Work Labour Ratio) से प्रभावित होती है। इस प्रकार श्रम की पूर्ति आर्थिक तथा अनार्थिक तत्वों (Economic and non-economic factors) दोनों पर निर्भर करती हैं। अनार्थिक तत्त्वों के अन्तर्गत वे सारी बातें शामिल की जाती हैं, जिनका सम्बन्ध द्रव्य से नहीं होता है। जैसे–खान-पान, रीति-रिवाज, भाषा, संस्कृति, देश-प्रेम, जनसंख्या का आकार (Size) तथा आय वितरण (Agedistribution) आदि । श्रम कि पूर्ति इस बात पर भी निर्भर करती है कि उस देश की स्त्रियाँ काम करती हैं या पर्दे में रहने का रिवाज है, देश के लोग किस आयु तक काम करते हैं, अंशकालीन (part time) काम की व्यवस्था है या नहीं आदि ।

आर्थिक तत्त्वों (Economic factors) का प्रभाव श्रम की पूर्ति पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। अधिक मजदूरी मिलने पर अधिक श्रमिक अपनी सेवाएँ करने को तैयार होते हैं तथा नीची मजदूरी पर श्रमिकों की पूर्ति कम होती है। यही कारण है कि श्रम की पूर्ति वक्र ऊपर को चढ़ता है। श्रम की पूर्ति कार्य अवकाश अनुपात (Work leisure ratio) से भी प्रभावित होती है। मजदूरी में परिवर्त्तन का निम्न प्रभाव होता है–

***(ii)* प्रतिस्थापन्न प्रभाव** (Substitution effect) मजदूरी में वृद्धि के फलस्वरूप श्रमिक अधिक कार्य करेंगे अर्थात् वे आराम के स्थान पर कार्य का प्रतिस्थापन्न करेंगे। प्रतिस्थापन्न प्रभाव हमेशा धनात्मक (Positive) होता है।

***(ii)* आय प्रभाव** (Income effect) मजदूरी में वृद्धि के कारण श्रमिकों की आय बढ़ती है, आय में वृद्धि के कारण वे अधिक आराम चाहते हैं। आय प्रभाव हमेशा ऋणात्मक (Negative) होता है। सामान्यतया मजदूरी में वृद्धि होने से श्रमिक की पूर्ति में वृद्धि होती है, परन्तु मजदूरी में बहुत वृद्धि होने पर एक सीमा के बाद यह संभव है कि आय प्रभाव के कारण श्रमिक कम घंटे कार्य करें तथा अधिक आराम चाहें। ऐसी स्थिति में श्रमिकों की पूर्ति की रेखा प्रारम्भ में तो ऊपर चढ़ती हुई होती है परन्तु एक सीमा के बाद यह बायें पीछे की ओर झुकती हुई (backward sloping) हो सकती है। इसे चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–चित्र में SS श्रम की पूर्ति की रेखा है। मजदूरी में वृद्धि होने से श्रमिकों की पूर्ति में वृद्धि होती है, परन्तु एक सीमा के बाद पूर्ति में कमी होने लगती है। मजदूरी OW से

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

बढ़कर OW_1 होने पर श्रम की पूर्ति WA से बढ़कर WB हो जाती है, परन्तु मजदूरी जब OW_1 बढ़कर OW_2 होती है तो श्रमिक की पूर्ति W_1B से घटकर W_2C हो जाती है।

इस प्रकार सीमान्त उत्पत्ति (Marginal Product) मजदूरी की अधिकतम सीमा तथा सीमान्त त्याग (Marginal scarifice) उसकी न्यूनतम सीमा होती है। उत्पादक कम-से-कम मजदूरी देना चाहता है, तथा श्रमिक अधिक-से-अधिक मात्रा में मजदूरी प्राप्त करना चाहता है। इस प्रकार माँग एवं पूर्ति की सापेक्षित शक्तियों द्वारा एक ऐसी मजदूरी की दर निर्धारित होती है, जिस पर श्रम की माँग एवं पूर्ति दोनों बराबर हो जाती है। दूसरे शब्दों में, मजदूरी उस बिन्दु पर निश्चित होती है, जिस पर उत्पादक की श्रम से प्राप्त सीमान्त उत्पत्ति श्रम के

श्रम की माँग एवं पूर्ति

सीमान्त त्याग के बराबर हो जाती है। यही संतुलन की स्थिति होती है। इस प्रकार मजदूरी निर्धारण के आधुनिक सिद्धान्त के अनुसार मजदूरी का निर्धारण श्रम की माँग एवं पूर्ति की सापेक्षिक शक्तियों द्वारा उस बिन्दु पर निर्धारित होती है जिस पर श्रम का मूल्य या मजदूरी उसके सीमान्त उत्पादन एवं सीमान्त त्याग सब बराबर होते हैं। माँग एवं पूर्ति की स्थिति में परिवर्तन होने पर साम्य की स्थिति में भी परिवर्तन होती है, परन्तु स्थायी संतुलन उसी बिन्दु पर होता है, जिस पर श्रम की माँग एवं पूर्ति बराबर हो जाती है। इसे तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

मजदूरी दर (प्रति दिन)	श्रम की माँग	श्रम की पूर्ति
50 रु०	100	1,000
40 रु०	200	700
30 रु०	400	400
20 रु०	500	300
10 रु०	700	200

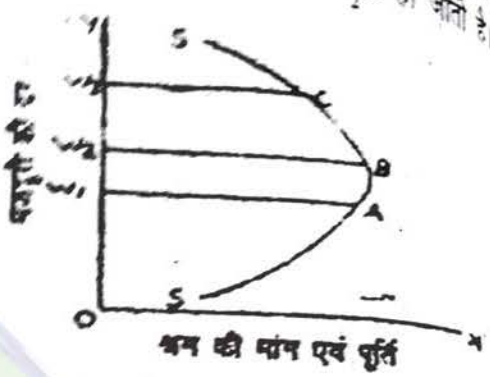

तालिका से स्पष्ट है कि ऊँची मजदूरी की दर पर श्रम की माँग कम तथा श्रम की पूर्ति अधिक होती है। जैसे-जैसे मजदूरी की दर में कमी होती है, श्रम की माँग बढ़ती है तथा पूर्ति में कमी होती है। 30 रुपये प्रतिदिन मजदूरी की संतुलित दर है, जहाँ श्रम की माँग एवं पूर्ति बराबर है अर्थात् 400 है । इसे चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

चित्र में OX पर श्रम की माँग एवं पूर्ति तथा OY पर मजदूरी की दर दिखाया गया है। DD श्रम की माँग तथा SS श्रम की पूर्ति रेखा है। श्रम की माँग एवं पूर्ति P बिन्दु पर एक दूसरे को स्पर्श करती है अर्थात् P संतुलन का बिन्दु है। DD रेखा नीचे की ओर झुकती है जो यह स्पष्ट करता है कि श्रम की अधिक इकाई लगाने से उत्पादन में उत्पत्ति हास नियम लागू होने से कमी होती है। इससे मजदूरी की दर में भी कमी होती है। अत: श्रम

WWW.GRADESETTER.COM

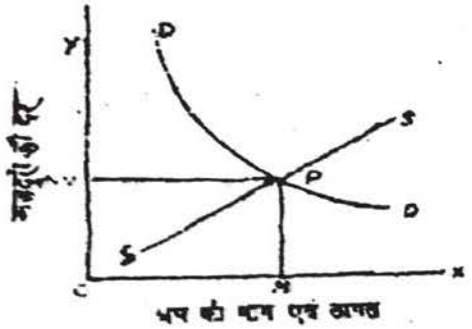

WWW.GRADESETTER.COM

की ओर जाती है तथा पीछे की ओर झुकती है । इससे यह स्पष्ट होता है कि जैसे-जैसे मजदूरी बढ़ती है, श्रम की पूर्ति घटने लगती है, क्योंकि श्रमिक अवकाश (Leisure) अधिक पसन्द करते है। अत: चित्र में मजदूरी OW तथा श्रम की माँग एवं पूर्ति OM के बराबर है।

मजदूरी के आधुनिक सिद्धान्त के अनुसार पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत मजदूरी का निर्धारण उस बिन्दु पर होता है, जहाँ उत्पादन के लिए श्रम की सीमान्त लागत (MC)श्रम से प्राप्त सीमान्त आय उत्पादन (Marginal Revenue Product) (MRP) के बराबर हो जाती है। पूर्ण प्रतियोगिता में श्रम की सीमान्त लागत (MC) श्रम की औसत लागत (AC of Labour) के बराबर होता है। अत: मजदूरी औसत लागत (AC) के बराबर होता है। पुन: संतुलन की अवस्था में श्रम की सीमान्त आय उत्पादन (MRP) तथा उसका औसत आय उत्पादन (ARP) मजदूरी के दर के बराबर होता है। अर्थात् Wages= MC of labour= MRP of labour= ARP of labour=AC of labour. पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत यही स्थायी संतुलन (Stable equilium) की स्थिति होती है। इसे रेखाचित्र द्वारा दिखाया जा सकता है। चित्र में W संतुलन बिन्दु है तथा MW मजदूरी की दर है। MW मजदूरी कीं दर पर श्रम की सीमान्त लागत, श्रम का MRP, श्रम का ARP तथा श्रम की औसत लगात सभी एक दूसरे के बराबर है । पूर्ण प्रतियोगिता में स्थायी संतुलन के लिए यह अनिवार्य है अल्पकाल में श्रम की औसत लागत (AC) तथा औसत आय उत्पादन में असमानता हो सकती है, परन्तु दीर्घकाल में समान होना आवश्यक है।

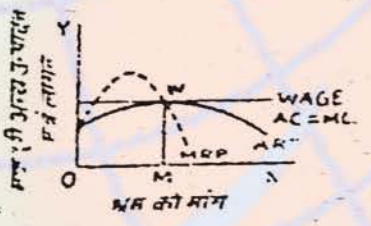

Q. 5. कल्याण अर्थशाला में पैरेटो के सिद्धान्त की आलोचनात्मक समीक्षा करें। (Critically examine Parato's theory of Welfare Economics.)

(V.V.I.— Exam. 2011, 2013, 2015, 2018)

Or, पेरेटो मानदण्ड की सविस्तार व्याख्या करें।

Or, प्रतियोगी बाजार में पेरेटो द्वारा निर्धारित सर्वोतम संयोग की शर्ते बतलाइये।

Ans. प्रसिद्ध इटालियन अर्थशास्त्री वी. पेरेटो का कल्याण अर्थशास्त्र के क्षेत्र में सबसे बड़ा योगदान यह है कि उन्होंने आर्थिक कल्याण के परिवर्तनों के मापने का एक निश्चित मापदंड (Positive Criterion) प्रस्तुत किया है। पेरेटो ने पीगूवियन अर्थशास्त्र की दो महत्वपूर्ण मान्यताओं–उपयोगिता की संख्यात्मक माप (Cardinal measurement) तथा उनकी अन्तरवैयक्तिक (Inter- personal Comparisons) को स्वीकार नहीं किया तथा उनके स्थान पर कल्याणवादी अर्थशास्त्र को मापने के लिए उपयोगिता के क्रमवाचक विचार (Cardinal Concept of Utility) को प्रस्तुत किया है।

पेरेटा द्वारा प्रस्तुत कल्याण की विचारधारा के प्रमुख पहलू हैं :

(1) उपयोगिता की माप गणनावाचक आधार पर नहीं, बल्कि क्रमवाचक आधार पर किया जाना संभव है।

(2) उन्होंने अपने कल्याण अर्थशास्त्र के विश्लेषण के मूल्यगत निर्णयों (Value Judgements) को कभी भी मान्यता नहीं दी, अत: उपयोगिता की अन्तरवैयक्तिक तुलनाएँ करना संभव नहीं है।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

(3) उपयोगिता वस्तुओं और सेवाओं का आन्तरिक गुण (Inherent Attribute) नहीं है, बल्कि यह वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा पर निर्भर करती है।

(4) पेरेटो ने अपने कल्याणात्मक विश्लेषण को केवल उत्पादन तथा विनिमय की समस्याओं तक सीमित किया है। उन्होंने वितरण तथा उसकी समस्याओं को अपने विश्लेषण में सम्मिलित नहीं किया है। पेरेटो का यह विश्वास था कि समाज में आय का वितरण उस नियम के अनुसार होता है जो समाज को स्वीकार होता है। समाज का कल्याण वास्तव में उत्पादन की मात्रा पर निर्भर करता है। इसलिए सारा प्रयत्न उत्पादन के अनुकूलतम संगठन पर केन्द्रित किया जाना चाहिए। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर परेटो ने सामाजिक कल्याण के मापदंड का निर्माण किया है। पेरेओ ने अपने विश्लेषण के आधार पर यह भी स्पष्ट किया है कि समाज को अनुकूलतम कल्याण की स्थिति केवल पूर्ण प्रतियोगिता की दशाओं में ही प्राप्त होती है।

पेरेटो अनुकूलतम (Pareto optimum)–पेरेटो को इस बात का श्रेय दिया जाता है कि उन्होंनें सामाजिक कल्याण को अधिकतम करने का एक वस्तुपरक सिद्धांत अथवा कसौटी (Cretetion) का निर्माण किया है।

पेरेटो के जाँच सिद्धांत को विभिन्न नामों से पुकारा जाता है जैसे, पेरेटियन अनुकूलतम (Paretián Optimum), पेरेटो का सर्वसम्मत नियम (Patero's Unanimity Rule) , पेरेटो का सामाजिक अनुकूलतम (Pareto's Social Optimum), पेरेटो की अुनकूलतमता (Pareto's Optimality) अथवा समान्य अनुकूलतम (General Optimum) इत्यादि। चूँकि पेरेटो के कल्याणात्मक विश्लेषण ने अपने आपको पुरानी आर्थिक विचारधारा से पूर्णतः अलग कर लिया है अतः इसको **'नवकल्याणकारी अर्थशास्त्र'** का भी नाम दिया जाता है।

पेरेटो की अनुकूलतम की मान्यताएँ (Assumptions of Pareto Optimum)–उपभोग, उत्पादन तथा विनिमय के क्षेत्रों में सीमान्त दशाओं के आधार पर प्राप्त पेरेटो की अनुकूलतम स्थितियाँ निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित है :

(1) प्रत्येक उपभोक्ता अपने सन्तोष को अधिकतम करना चाहता है।

(2) प्रत्येक उत्पादन का उद्देश्य न्यूनतम लागत पर अपनी वस्तु के उत्पादन को अधिकतम करना होता है ताकि उसे अधिकतम लाभ की प्राप्ति हो सके।

(3) उपयोगिता का विचार क्रमवाचक (Ordinal) है तथा प्रत्येक उपभोक्ता का क्रमवाचक उपयोगिता फलन (Ordinal Utility Function) दिया हुआ होता है।

(4) प्रत्येक उत्पादक फर्म का उत्पादन-फलन (Production Function) उत्पादन की तकनीकी या समय की दी हुई अवधि के आधार पर दिया हुआ होता है।

(5) सभी वस्तुएँ विभाज्य (Divisible) होती है।

(6) प्रत्येक उपभोक्ता सभी वस्तुओं को थोड़ी-थोड़ी मात्रा में अवश्य उपभोग करता है।

(7) प्रत्येक वस्तु के उत्पादन में सभी उत्पादन साधनों का प्रयोग किया जाता है।

सामाजिक अनुकूलतम : पेरेटो का विचार (Social Optimum : Paratian View-point)– "आर्थिक कल्याण की दृष्टि से एक परितर्वन को वांछनीय या सुधारात्मक तभी कहा जा सकता है जबकि वह परिवर्तन बिना किसी को हानि पहुँचाए हुए कम से कम एक व्यकित की स्थिति को बेहतर बनाता है।" इसी तथ्य के प्रो. बॉमोल ने अपने शब्दों में इस प्रकार व्यक्ति किया है, "कोई परिवर्तन जो किसी को हानि नहीं पहुँचाता तथा कुछ लोगों को श्रेष्ठतर बनाता है, आवश्यक रूप से सुधार समझा जाना चाहिए।" कल्याणात्मक अर्थशास्त्र

WWW.GRADESETTER.COM

की ऊपर दी गयी कसौटी के आधार पर समाज के लिए अधिकतम कल्याण अथवा सामाजिक अनुकूलतम' स्थिति को इस प्रकार समझा जा सकता हे। पेरेटो की सामाजिक अनुकूलतम वह स्थिति है जिसके अन्तर्गत आगतों (Inputs) अथवा निर्गतों (Outputs) के पुनर्आवण्टन द्वारा बिना कम से कम एक व्यक्ति को हीनतर (Worse off) किए हुए, किसी अन्य व्यक्ति को श्रेष्ठतर (Better off) करना संभव नहीं होता है। पेरेटो की अनुकूलतम सामाजिक व्यवस्था उस स्थिति को सूचित करती है, जिसमं समाज का कोई भी सदस्य किसी अन्य सदस्य को उसकी अनचाही परिस्थिति में डाले बिना, अपनी मनचाही परिस्थिति में प्रवेश नहीं कर सकता है।'' दूसरे शब्दों में, इसका अभिप्राय यह है कि यह वह स्थिति होती है, जिसमें आर्थिक साधनों के पुनर्आवण्टन के फलस्वरूप समाज के किसी सदस्य की स्थिति खराब किए बिना अन्य सदस्य की स्थिति को सुधारना संभव नहीं होता है।

इसी तर्क के आधार पर, इस विचार को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है। वस्तुओं के उत्पादन तथा विनिमय के पुनर्संगठन द्वारा समाज के किसी सदस्य की परिस्थिति को खराब किए बिना, किसी अन्य सदस्य की परिस्थिति को सुधारना संभव नहीं होता है।

इस सबका यह अर्थ हुआ कि पेरेटो के अनुसार अनुकूलतम सामाजिक स्थिति वह होती है, जिसमें कोई भी इस प्रकार का परिवर्तन करना संभव नहीं है, जिसके अन्तर्गत सभी व्यक्तियों की उपयोगिताएँ बढ़ जाती है अथवा घट जाती है।

रेखीय प्रस्तुतीकरण (Graphical representation)–पेरेटो के सामान्य अनुकूलतम नियम का दिग्दर्शन **प्रो. सैम्युअसलसन के** उपयोगिता संभावना वक्र (Utility Possibility Curve) द्वारा किया जा सकता है। उपयोगिता संभावना वक्र वस्तुओं के निश्चित समूह से दो व्यक्तियों द्वारा प्राप्त उपयोगिता के विभिन्न संयोगों का बिन्दु पथ है। चित्र में X तथा Y अक्षांशों पर क्रमश: A तथा B व्यक्तियों की क्रमवाचक उपयोगिताओं (Ordinal Utility) को दिखाया गया है। समाज में उत्पादन की एक दी हुई मात्रा के लिए LM रेखा, उपयोगिता संभावना रेखा है जो कि A तथा B के उपयोगिता स्तरों के विभिन्न संयोग को बतलाती है।

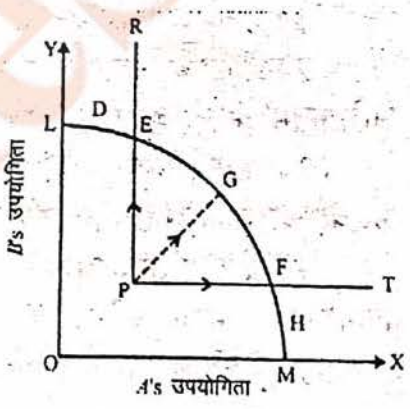

चित्र A में पेरेटो के नियम अनुसार P बिन्दु E, G तथा F की ओर कोई भी परिवर्तन सामाजिक कल्याण में वृद्धि को दिखाता है। LM रेखा पर P से F तक का परितर्वन A व्यक्ति के कल्याण में वृद्धि को दिखलाता है, B के कल्याण में में कोई हानि पहुँचाए बगैर। इस प्रकार उक्त रेखा पर P से E तक का परविर्तन B के कल्याण में वृद्धि लाता है, बिना A के कल्याण में कोई हानि पहुंचाए। P से G तक का परिवर्तन दोनों व्यक्तियों के कल्याण में वृद्धि को दिखलाता है। इस प्रकार समकोण RPT के अन्दर कोई भी परिवर्तन पेरेटो के अनुसार समाज के कल्याण में सुधार को दिखलाता है, लेकिन PRT के बाहर का कोई भी परिवर्तन पेरेटो के सुधार की परिधि में नहीं आता है। उदाहरण के लिए P से D तक का परिवर्तन B की उपयोगिता (कल्याण) में तो वृद्धि है लेकिन A की उपयोगिता (कल्याण) में कमी उत्पन्न करता है। इसी प्रकार P से H तक का परितर्वन कल्याण की दृष्टि से A के अनुकूल है लेकिन B के प्रतिकूल है। इस प्रकार LM रेखा पर P बिंदु से EF के बाहर किसी भी परिवर्तन जैसे D अथवा H के कल्याण पर पड़ने वाले प्रभावों का पेरेटो के मापदण्ड के आधार पर मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है। बिन्दु D अथवा H पेरेटो अनुकूलतम की स्थिति को व्यक्त नहीं करता है इस प्रकार

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

LM रेखा पर E से F तक के सभी बिन्दु पेरेटो अनुकूलतम की ही स्थितियाँ हैं, लेकिन इनमें कौन-सा बिन्दु श्रेष्ठ है, इसका पेरेटो के मानदण्ड से प्राप्त नहीं होता है। वास्तव में स्थिति को स्पष्ट करने के लिए हमें मूल्यगत निर्णयों (Value Judgements) का सहारा लेना जरूरी है जो पेरेटो के विश्लेषण से बाहर का विषय है।

प्रतियोगी बाजार में अनुकूलतम दशाएँ (Optimal conditions in competitive Market) अथवा **पेरेटियन अनुकूलतम दशाएँ** (Paratian Optimum conditions)- कल्याणवादी अर्थशास्त्र की सम्पूर्ण विवेचना के दौरान पूर्ण प्रतियोगिता को एक वांछनीय आदर्श माना गया है। इस कारण यह है कि पेरेटो अनुकूलतम के अनुसार अधिकतम सामाजिक कल्याण को केवल पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत ही प्राप्त किया जा सकता है।

(1) वस्तुओं के अनुकूलतम आवण्टन की दशाएँ (Optimal allocation of Goods)—अपनी आय सीमा के अन्तर्गत प्रत्येक उपभोक्त अपनी सन्तुष्टि को अधिकतम करने का प्रयास करता है। इसके लिए आवश्यक है कि किन्हीं दो उपभोक्ताओं की दो वस्तुओं में सीमांत प्रतिस्थापन दर (MRS) समान होनी चाहिए। अतः सन्तुलन की दशा में उपभोक्ता की कीमत रेखा (Price Line) उसके अनधिमान वक्र (Indifference Curve) को स्पर्श करती है। चूँकि पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत सभी उपभोक्ताओं के लिए वस्तुओं की कीमत समान होती है, इसलिए किन्हीं भी दो वस्तुओं की सीमान्त प्रतिस्थापन दर किन्हीं दो उपभोक्ताओं के लिए समान होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि A और B दो उपभोक्ता हैं तथा वे X और Y इन दो वस्तुओं का उपभोग करते है। दोनों वस्तुओं की कीमतें दी हुई होने पर उपभोक्ता A अपनी सन्तुष्टि उस समय अधिकतम करेगा जबकि वह दोनों वस्तुओं की मात्राएँ खरीद रहा है और जिससे निम्न शर्त पूरी होती है।

$$\text{सीमान्त प्रतिस्थापन दर } (MRS_{xy}) = \frac{\text{X वस्तु की कीमत}}{\text{Y वस्तु की कीमत}}$$

अर्थात्

...(i)

इस प्रकार उपभोक्ता B भी अपनी संतुष्टि को अधिकतम करेगा जब :

$$MRS_{xy} = \frac{P_x}{P_y} \qquad \text{....(ii)}$$

जैसा कि विदित है कि पूर्ण प्रतियोगिता में सभी उपभोक्ताओं के लिए वस्तुओं की कीमतें समान होती है, इसलिए समीकरण (i) तथा (ii) में दोनों उपभोक्ताओं A और B के लिए दोनों वस्तुओं की कीमतों का अनुपात $\frac{P_x}{P_y}$ समान होगा तथा दोनों के मध्य प्रतिस्थापन की समान दर सीमान्त दर को इस प्रकार व्यक्त किया जाएगा :

A उपभोक्ता की MRS = B उपभोक्ता की MRS

अर्थात, $MRS_{xy}^{A} = MRS_{xy}^{B}$

(2) साधनों का अनुकूलतम आवण्टन (Optima Allocation of Factors) - प्रत्येक उत्पादक अपने कुल लाभ को अकिधतम करने हेतु, वस्तुओं के उत्पादन में साधनों का अनुकूलतम आवण्टन स्थापित करना चाहता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि किन्हीं भी दो साधनों–श्रम तथा पूँजी के मध्य तकनीकी प्रतिस्थापन की सीमान्त दर (Marginal Rate of technical Substitution) समान होनी चाहिए। पूर्ण प्रतियोगिता में प्रत्येक उत्पति

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

साधन की कीमतें दी हुई होती हैं। उत्पादन उस समय सन्तुलन की दशा में होता है, जब वह साधनों के ऐसे संयोग (Combination) का प्रयोग करता है जिस पर समोत्पाद वक्र (Iso- quant) तथा सम लागत वक्र (Iso- cost) एक-दूसरे को स्पर्श करते हैं। स्पर्श बिन्दु ही तकनीकी प्रतिस्थापन की समान सीमान्त दर को व्यक्त करता है। सन्तुलन की दशा में श्रम तथा पूँजी के बीच तकनीकी प्रतिस्थापन की सीमान्त दर दोनों साधनों के कीमत अनुपात के बराबर होगी हैं।

श्रम की पूँजी के लिए तकनीकी सीमान्त प्रतिस्थापन दर = $\frac{\text{श्रम की कीमत}}{\text{पूँजी की कीमत}}$

अर्थात् $$MRTS_{LX} = \frac{P_L}{P_K} \quad ...(i)$$

इसी प्रकार पूर्ण प्रतियोगिता में कार्य कर रहा दूसरा उत्पादक भी सन्तुलन की दशा में दोनों साधनों के बीच तकनीकी प्रतिस्थापन की सीमान्त दर को, दोनों साधनों के कीमत अनुपात के समान करेगा :

$$MRTS_{LX} = \frac{P_L}{P_K} \quad ...(ii)$$

पूर्ण प्रतियोगिता में सभी उत्पादकों के लिए साधनों की कीमतें समान होती हैं, इसलिए समीकरण (i) तथा (ii) में दोनों उतपादकों यानि A तथा B के लिए दोनों साधनों– श्रम और पूँजी की कीमतों का अनुपात $\frac{P_L}{P_K}$ समान होगा तथा दोनों के मध्य प्रतिस्थापन की समान सीमान्त दर को इस प्रकार व्यक्त किया जाएगा :

A उत्पादक की MRTS = B उत्पादक की MRTS

अर्थात् $$MRTS_{LK}^{A} = MRTS_{LK}^{B}$$

इस प्रकार साधनों के अनुकूलतम आवण्टन से संबंधित दूसरी शर्त की पूर्ति पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत ही होती है।

(3) **विशिष्टता के अनुकूलतम अंश की दशा** (Optimal Degree of Specialisation)–सन्तुलन की उपरोक्त दशा के अनुसार प्रत्येक उत्पादक अपने कुल लाभ अधिकतम करने के लिए , उत्पादित दो वस्तुओं के रूपान्तरण की सीमान्त दर (Marginal rate of Transformation) को उनकी कीमतों के अनुपात के बराबर बनाता है। अत: सन्तुलन की दशा उत्पादक की कीमत रेखा रूपांतरण वक्र को स्पर्श करती है। पूर्ण प्रतियोगिता में प्रत्येक उत्पादक को वस्तु की समान कीमत प्राप्त होती है, इसलिए किन्हीं दो वस्तुओं के बीच रूपान्तरण की सीमान्त दर प्रत्येक उतपादक के लिए समान होगी जो उन्हें बेचते हैं। मान लीजिए दो उत्पादन वस्तुएँ A और B है और दो वस्तुओं X तथा Y का उत्पादन करती है तो विशिष्टीकरण अंश को प्राप्त करने के लिए आवश्यक होगा कि:

वस्तु की तकनीकी सीमान्त प्रतिस्थापन दर = B वस्तु की तकनीकी सीमान्त प्रतिस्थापन दर $$MRTS_{SY}^{A} = MRTS_{XY}^{B}$$

यही विशिष्टीकरण के अनुकूलतम अंश की दशा है ।

(4) साधन-वस्तु संबंध की अनुकूलतम दशा (Factor- Prodcut Relationship Optimal)-इस दशा के अनुसार, किसी वस्तु के उत्पादन में किसी साधन का प्रयोग करने वाली फर्मों के लिए उस साधन एवं उस वस्तु के बीच सीमान्त रूपान्तरण दर आपस में बराबर होगी है। साधन और वस्तु के बीच सीमान्त रूपान्तरण दर से अभिप्राय वस्तु उत्पादन में साधन के सीमान्त भौतिक उत्पादन (Marginal Physcial Products) से है। पेरेटो के

WWW.GRADESETTER.COM

मानदण्डानुसार एक साधन भौतिक उत्पादन उन सभी उत्पादन फर्मों के लिए समान होता है जो किसी वस्तु के उत्पादन में उस साधन का प्रयोग करती है। संतुलन की दशा में एक पूर्ण प्रतियोगी साधन बाजार (Factor market) में एक फर्म किसी साधन की केवल उतनी ही मात्रा प्रयोग करती है जहाँ पर साधन का मूल्य उसके सीमान्त उत्पादन मूल्य (Value of Marginal Product) के बराबर होता है।

साधन का $VMP = (MP)(P_x)$

P_x = x वस्तु का मूल्य

MP = वस्तु का सीमान्त उत्पादन

VMP= वस्तु का सीमान्त उत्पादन मूल्य

साधन वस्तु संबंध की अनुकूलतम दशा के अनुसार किसी एक वस्तु का उत्पादन करने वाली दो फर्मों के बीच किसी साधन की सीमान्तम भौतिक उत्पादकता आपस में बराबर होती है।

(5) उत्पादन की अनुकूलतम दिशा अथवा सामान्य आर्थिक क्षमता (Optimum Direction of Production & General Econonomic Efficiency) – पेरेटो के अधिकतम सामाजिक कल्याण के अनुसार उत्पादन की अुनकूलतम दिशा उसके अनुकूलतम संरचना (Optimum Composition of Production) की है। उत्पादन की अनुकूलतम दिशा यह बताती है कि अधिकतम सामाजिक कल्याण के लिए विभिन्न वस्तुओं का कितनी-कितनी मात्राओं में उत्पादन किया जाए तथा उसी प्रकार साधनों का अनुकूलतम आवण्टन कैसे हो दूसरे शब्दों में, इसे सामान्य आर्थिक क्षमता की शर्त कहते है। इसके अनुसार प्रत्येक उपभोक्ता को दो वस्तुओं के लिए सीमान्त प्रतिस्थापन दर समाज के लिए उन दो वस्तुओं के रूपान्तरण की सीमान्त दर के बराबर होनी चाहिए। अर्थात्

X तथा Y वस्तुओं की सीमान्त प्रतिस्थापन दर = X तथा Y वस्तुओं की सीमांत रूपांतरण दर

$$= MRS_{xy} = MRT_{xy}$$

पेरेटो की इस दशा को संलग्न चित्र द्वारा भी समझाया जा सकता है। चित्र में पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत उत्पदन की अनुकूलतम उत्पादन स्थिति को प्रदर्शित किया गया है। AB रेखा समान की रूपान्तरण वक्र तथा Ic_1 व Ic_2 समाज के अनधिमान वक्र है। PP_1 रेखा दोनों वस्तुओं की कीमत को बतलाती है। अधिकतम बिन्दु K है। जहाँ कीमत तथा ऊँचे अनधिमान वक्र K के बीच स्पर्श (Tangency) होता है। अतः इसी बिन्दु K पर MRS_{sy} की शर्त पूरी होती है। स्पष्ट है कि बिन्दु K पर उत्पादन की अनुकूलतम दिशा अथवा सामान्य आर्थिक क्षमात की स्थिति प्राप्त होती है।

(6) साधन के समय के अनुकूलतम आवण्टन की दशा (Perfect Competition and Optimal Allocation of Factor's Line) – अपने कुल कल्याण को अधिकतम करने के लिए प्रत्येक श्रमिक अपने श्रम के बदले प्राप्त आय (Income) तथा अवकाश (Leisure) के बीच सीमान्त प्रतिस्थापन दर को मजदूरी की दर के समान बनाता है। व्यक्तिगत उत्पादक अपने कुल लाभ को अधिकतम करने के लिए श्रम और वस्तु के बीच सीमान्त रूपांतरण दर (Marginal Rate of Transformation) को उनकी कीमतों के अनुपात के समान करता है।

प्रत्येक साधन के समय के अनुकूलतम आवंटन की दृष्टि से प्रत्येक श्रमिक के लिए कार्य से प्राप्त आय तथा अवकाश के बीच सीमान्त प्रतिस्थापन दर वही होनी चाहिए जो सम्पूर्ण समाज के लिए कार्य एवं वस्तु के बीच रूपान्तरण की सीमान्त दर होती है। इसके लिए यह आवश्यक है कि आय तथा अवकाश के मध्य सीमान्त प्रतिस्थापन दर (Marginal

WWW.GRADESETTER.COM

rate of Substitution) समान होनी चाहिए। अनुकूलतम आबवटन के बिन्दु पर कार्य से प्राप्त आय तथा अवकाश के बीच प्रतिस्थापन की सीमान्त दर वही होती है जो 'समाज' के लिए कार्य तथा 'सामाजिक वस्तु' के बीच रूपान्तरण की सीमान्त दर होती है। अर्थात्

श्रमिक A के लिए कार्य एवं आराम की = श्रमिक B के लिए कार्य एवं आराम की सीमान्त प्रतिस्थापन दर सीमान्त प्रतिस्थापन दर

$$MRS^{A}_{YL} = MRS^{B}_{YL}$$

(जहाँ Y तथा L क्रमशः कार्य तथा आरंभ को प्रदर्शित कर रहे हैं।)

(7) पूँजी के अन्तःकालीन अनुकूलतम वितरण की दशा (Condition of Intertemporal Optimum Allocation of Assets)- इस दशा के अनुसार प्रत्येक बचतकर्ता पूँजी तथा भाव पूँजी के बीच, सीमान्त प्रतिस्थापन दर (Marginal Rate of Substitution) को अपनी समय वरीयता (Time Preference) अर्थात् ब्याज की दर (Rates of Interest) के बराबर करने का प्रयत्न करता है। इसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति ऋणी (उत्पादक) वर्तमान तथा भावी पूँजी के मध्य सीमान्त प्रतिस्थापन की दर को उस ब्याज की दर के बराबर करने का प्रयत्न करता है जिस पर वह पूँजी को उधार लेता है। आवश्यक है कि ब्याज की दर दोनों पक्षों- पूँजी उधार देने वालों तथा पूँजी उधार लेने वालों- के लिए पूर्ण प्रतियोगिता में समान होती है, अतः ब्याज की दर पूँजी की सीमान्त उत्पादकता (Marginal Productivity of capital) के बराबर होती है। अर्थात्

बचतकर्ता A के लिए वर्तमान एवं भविष्य = बचतकर्ता B के लिए वर्तमान एवं भविष्य के बीच सीमान्त प्रतिस्थापन दर के बीच सीमान्त प्रतिस्थापन दर

$$MRS^{A}_{TF} = MRS^{B}_{TF}$$

जहाँ T तथा F क्रमशः वर्तमान एवं भविष्य के सूचक हैं।

पेरेटो के कल्याणकारी अर्थशास्त्र की आलोचना (Criticism of Paratian Welfare Economics)–पेरेटो को यह श्रेय प्रदान किया जाता है कि उन्होंने उपयोगिता के गणनावाचक विश्लेषण से हटकर उसकी क्रमवाचक विश्लेषण के आधार पर, समाज कल्याण में होने वाले परिवर्तनों के मापन हेतु ऐसा मानदण्ड प्रस्तुत किया है जो श्रेष्ठ एवं वैज्ञानिक है। पेरेटो का यह मानदण्ड उपयोगिता की अन्तरवैयक्तिक तुलनाओं से स्वतंत्र है। पेरेटो का यह निश्चित मत है कि कल्याणात्मक विश्लेषण में नैतिक मूल्यों (Ethical Value) के लिए कोई स्थान नहीं है। इनकी दृष्टि से मूल्य निर्णय (Value Judgement) केवल एक है, जिसके अनुसार किसी एक व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के समूह को हानि पहुँचाये बिना, कुछ अन्य व्यक्तियों के कल्याण में वृद्धि की जा सकती है तो यह बात पूरे समाज के लिए वांछनीय एवं हितकारी होती है।

पेरेटो के इस मानदण्ड का महत्वपूर्ण लक्षण यह है कि इसमें अस्पष्ट तथा स्पष्ट परितर्वनों में अंतर किया गया है तथा मानदण्ड विश्लेषण में केवल स्पष्ट परिवर्तनों को सम्मिलित किया गया है। अस्पष्ट परिवर्तन वे होते हैं जिनके फलस्वरूप कुछ व्यक्तियों के कल्याण में वृद्धि के साथ-साथ, दूसरे व्यक्तियों के कल्याण में कमी आ जाती है। स्पष्ट परिवर्तनों का प्रभाव यह होता है कि बिना किसी को हानि पहुँचाये, कुछ व्यक्तियों के कल्याण में वृद्धि हो जाती है। मूल्यगत निर्णयों (Value Judgements) का संबंध स्पष्ट परिवर्तनों से ही है और इसलिए पेरेटो ने इनको अपने विश्लेषण की परिधि से बाहर रखा है।

यह ठीक है कि पेरेटो के विश्लेषण की कुछ विशेषताएँ है, लेकिन इसके साथ-साथ उक्त विश्लेषण में अनेक गंभीर दोष भी हैं जो निम्न प्रकार हैं,

(1) यह सही है कि पेरेटो का कल्याणात्मक विश्लेषण श्रेष्ठ एवं अधिक वैज्ञानिक है। पेरेटो तथा उसके अनुयायियों का यह दावा है कि कल्याणात्मक विश्लेषण में कहीं भी उपयोगिता की अन्तरवैयक्तिक तुलनाओं तथा मूल्यगत निर्णयों को आधार नहीं बनाया गया है। निकट से देखने पर यह ज्ञात होता है कि वस्तुस्थिति ऐसी नहीं है। पेरेटो ने अपने विश्लेषण में नैतिक मापदण्डों का सहारा लिया है।

(2) **पेरेटो का कल्याणकारी विश्लेषणात्मक मानदण्ड नैतिक निर्णयों से स्वतंत्र नहीं है।** जैसा कि हम पहले वर्णन कर आये हैं। कल्याण संबंधी परिवर्तन दो प्रकार के होते हैं- 'स्पष्ट तथा अस्पष्ट'। स्पष्ट परिवर्तनों का आशय यह है कि जब किसी सरकारी नीति के अन्तर्गत किसी व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के समूह को कोई हानि पहुँचाये बिना, कम से कम एक व्यक्ति के कल्याण में वृद्धि होती है। निःसंदेह ऐसी परिस्थिति में पेरेटो का मानदण्ड नैतिक निर्णयों से स्वतंत्र है। अस्पष्ट परिवर्तनों का अर्थ यह होता है कि जब किसी सरकारी नीति के फलस्वरूप कुछ व्यक्तियों की लाभ तथा कुछ व्यक्तियों को हानि पहुँचती है। ऐसी स्थिति में अस्पष्ट कल्याणकारी परिवर्तनों को लाभ तथा कुछ व्यक्तियों को हानि पहुँचती है। ऐसी स्थिति में अस्पष्ट कल्याणकारी परिवर्तनों का मूल्यांकन, उपयोगिता की अन्तरवैयक्ति तुलनाओं के बिना नहीं हो सकता है। स्पष्ट है कि इस सीमा तक पेरेटो का मानदण्ड नैतिक निर्णयों से प्रभावित है। प्रो. बोल्डिंग (Prof. Boulding) ने इसी बात को इस प्रकार कहा है कि सामाजिक चरों (Social Variables) के परिवर्तन दो प्रकार के होते हैं। प्रथम सरकार के परिवर्तनों का संबंध ऐसे व्यापार से होता है, जो सबको लाभ पहुँचाता है। दूसरे प्रकार के परिवर्तन का संबंध संघर्ष से है जो कुछ को लाभ तथा कुछ को हानि पहुँचाता है। बोल्डिंग के अनुसार पेरेटो के मानदण्ड का संबंध प्रथम श्रेणी के परिवर्तनों से है, जो सभी को लाभ पहुँचाते हैं।

(3) **पेरेटो** के मानदण्ड का एक गम्भीर दोष यह है कि इसकी व्यवहार्यता (Applicability) सीमित है। पेरेटो के मानदण्ड के अन्तर्गत सामाजिक कल्याण के इन प्रभावों का अध्ययन नहीं किया जा सकता है जो समाज के कुछ लोगों तथा दूसरे लोगों को हानि पहुँचाते हैं। ऐसी आर्थिक नीतियाँ बहुत कम अथवा दुर्लभ होती है जो किसी न किसी रूप में समाज में एक व्यक्ति को भी हानि पहुँचाये बिना, अन्य व्यक्तियों को लाभान्वित करती हों। स्पष्ट है कि आर्थिक नीति-निर्धारण के क्षेत्र में पेरेटो के मानदण्ड की व्यवहार्यता सीमित पायी जाती है। इसका संबंध केवल सैद्धान्तिक क्षेत्र तक है। व्यवहारिक स्तर पर इसी सामान्य कार्यशीलता (General Applicability) का अभाव पाया जाता है। पेरेटो मानदण्ड की इस कमी को दूर करने के लिए हाल ही के वर्षों में प्रो. कैल्डोर, प्रो. हिक्स, प्रो. स्टिकोवोस्की इत्यादि ने क्षतिपूरक सिद्धांत (Compensating Payment) के विचार को विकसित किया है।

(4) **पेरेटो** के मानदण्ड के विरूद्ध एक अन्य महत्वपूर्ण आलोचना यह है कि इस मानदण्ड द्वारा अधिकतम सामाजिक कल्याण विन्दु को निश्चितातापूर्वक निर्धारित नहीं किया जा सकता है। स्थिति यह है कि पेरेटो के विश्लेषण के आधार पर उच्चतम सामाजिक कल्याण बिन्दु एक नहीं बल्कि एक से अधिक पाये जाते हैं।

(5) **पेरेटो** के कल्याणात्मक विश्लेषण का सबसे बड़ा दोष यह है कि यह समाज में स्थित विषम आय-वितरण के विषय में या तो शान्त (Salient) है अथवा उसकी वर्तमान स्थिति को स्वीकार करता है। पेरेटो तथा उसके अनुयायियों ने आय वितरण की अनुकूलतम व्यवस्था कोई व्याख्या नहीं की है। वास्तव में पेरेटो ने सारा बल इस बात पर दिया है कि

WWW.GRADESETTER.COM

सामाजिक कल्याण को अधिकतम करने के लिए समाज में उत्पादन तथा विनिमय को कैसे पुनर्गठित किया जाये। आयत वितरण की अनुकूलतम व्याख्या के लिए नैतिक निर्णयों (Moral Judgements) तथा उपयोगिता की अन्तरवैयक्तिक तुलनाओं (Inter- personal Comparisons) का सहारा लेकर अपने विश्लेषण को वैज्ञानिक तथा वस्तुपरक (Subjective) बनाये रखने के लिए, अपने मापदण्ड को नैतिक निर्णयों तथा उपयोगिता की अन्तरवैयक्तिक तुलनाओं से पूर्णतया स्वतंत्र रखना चाहते हैं। फलस्वरूप पेरेटो के विषय में यह मान लिया गया है कि वह वमर्तमान सामाजिक आय-वितरण प्रणाली जिसमें आय वितरण की विषम असमानता पायी जाती है, को स्वीकार करते है। यही कारण है कि पेरेटो के कल्याणात्मक विश्लेषण के विरूद्ध अनिश्चितता तथा अपूर्णता के गंभीर आरोप लगाये जाते हैं।

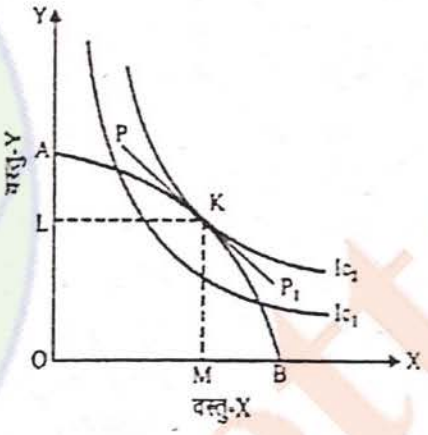

पेरेटो द्वारा प्रतिपादित कल्याणात्मक विश्लेषण के विरूद्ध की गयी उपरोक्त आलोचनाओं का अर्थ कदापि यह नहीं है कि पेरेटो का सारा विश्लेषण सारहीन अथवा अनुपयोगी हो। वास्तविकता यह है कि पेरेटो के द्वारा गैर-अनुकूलतम (Non- optimum) विन्दुओं के अलग कर दिये जाने से (चित्र-B में प्रदर्शित विन्दु K) उस क्षेत्र का सीमा निर्धारण हो जाता है, जिसमें हमको सर्वोतम विकल्पों की खोज करनी होती हे। इस प्रकार पेरेटो का विश्लेषण एक प्रथम कदम के रूप में हमारे लिए उपयोगी है। हमारी कठिनाई उस समय वढ़ जाती है जव हम पहले कदम से इतना आकर्पित तथा बन्धित हो जाते हैं कि हम उससे आगे जाने का प्रयत्न ही नहीं करते हैं इसको पेरेटो के मानदण्ड का दोष अथवा त्रुटि वतलाना पेरेटो के साथ अन्याय करना होगा।

पेरेटो के प्रति न्याय तथा औचित्य की दृष्टि से यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि इनका कल्याणात्मक विश्लेषण मानदण्ड कम से कम दो व्यकितयों अथवा दो देशों के वीच क्रमश: वस्तुओं के विनिमय अथवा व्यापार के लाभों की स्पष्टतापूर्वक व्याख्या करता है।

Q. 6. लगान के आधुनिक सिद्धान्त की व्याख्या करें। किस प्रकार सभी साधनों की आय पर यह सिद्धान्त लागू किया जाता है ? Explain the Modern Theory of Rent. Show how it can be applied to all factor incomes.

(V.V.I.—Exam. 2005, 2008, 2012, 2014, 2016, 2018)

Or, Outline the Modern Theory of Rent.

लगान के आधुनिक सिद्धान्त का आकलन करें।

Or, लगान के आधुनिक सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए।

(Explain the modern theory of Rent.)

Ans. प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों खासकर रिकार्डो का लगान सिद्धांत अव्यावहारिक एवं त्रुटिपूर्ण है। आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार रिकार्डो ने लगान को भूमि तक प्रकृति के नि:शुल्क उपहारों तक सीमित रखा। लगान केवल भूस्वामी को भूमि के विशिष्ट गुण के कारण प्राप्त होता है तथा उत्पादन के अन्य साधनों अर्थात् श्रम, पूँजी, साहस को प्राप्त नहीं होता है। रिकार्डो ने लगान को बिल्कुल अलग श्रेणी में

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

विभेदात्मक लगान का सिद्धांत (Differential theory of rent) केवल यह बतलाता है कि भूमि की उर्वरा शक्ति में विभिन्नता के कारण लगान में भी भिन्नता उत्पन्न होती हैं अर्थात् अधिक उपजाऊ भूमि को अधिक लगान तथा कम उपजाऊ भूमि को कम लगान देना पड़ता है। इस संदर्भ में ब्रिग्स एवं जॉर्डन (Briggs and Jordon) ने लिखा हैं, "मूलत रिकार्डो का सिद्धांत केवल इस स्वयं सिद्ध तथ्य को स्पष्ट करता है, कि बेहतर वस्तुओं का मूल्य सर्वदा अधिक होगा । एक हेक्टेयर अधिक उपजाऊ भूमि की कीमत एक हेक्टेयर कम उपजाऊ भूमि की तुलना में अधिक होगी, क्योंकि वे अलग-अलग वस्तुएँ हैं।" (Fundamentally all that the Ricardian theory of rent amounts to is the tritism that the better article will always command higher price . A more fertile hecter will be worth more that a least one simply because they are different thingh.) इस प्रकार रिकार्डो के अनुसार यह केवल भूमि पर ही लागू होती है। रिकार्डो ने लगान के उत्पत्ति के मौलिक कारण पर पूर्णरूपेण प्रकाश डाला है तथा रिकार्डो ने लगान को केवल भूमि पर ही सीमित रखा है ।

परन्तु आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार अन्य साधन, जैसे-श्रम एवं पूँजी, भूमि की तरह, स्थिरता या सीमितता के गुण अर्थात् भूमि तत्व (Land- elements) अर्जित कर सकते हैं और वे लगान प्राप्त कर सकते हैं। अत: आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार प्रत्येक साधन लगान प्राप्त कर सकता है और इस प्रकार लगान का आधुनिक सिद्धांत तक सामान्य सिद्धांत (General theory) है।

आस्ट्रियन अर्थशास्त्री **वोन वाइजर** (Von Weiser) द्वारा प्रतिपादित अवसर व्यय या हस्तांतरित आय (Opportunity cost or transfer earning) के सिद्धांत ने लगान को नई दिशा दी है। **श्रीमती जॉन रॉबिन्सन** (Mrs. Joan Robinson), **डेवनपोर्ट** (Devonpirt), **प्रो० बेन्हम** (Prof. Benham), **प्रो० स्टिगलर** (Prof. Stigler) एवं **बोल्डिंग** (Boulding) जैसे आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने लगान के सम्बन्ध को अधिक विस्तृत एवं व्यापक बना दिया है। इन लोगों ने लगान का प्रयोग किसी साधन की विकल्प आय से अतिरिक्त आय (Surplus income) के संदर्भ में किया है। विकल्प आय का तात्पर्य किसी साधन की वह आय अथवा कीमत है, जो उसे किसी अन्य अच्छे से अच्छे उपयोग, व्यवसाय अथवा उद्योग में प्राप्त हो सकती है। स्पष्ट है लगान केवल भूमि तक ही सीमित नहीं है, क्योंकि भूमि के अतिरिक्त उत्पादन के अन्य साधनों में भी वह क्षमता है, जो लगान की उत्पत्ति कर सकता है। जिस प्रकार भूमि के विभिन्न टुकड़ों में उर्वरा शक्ति में अन्तर होता है, उसी प्रकार विभिन्न श्रमिकों की कार्यक्षमता में पूँजी की विभिन्न इकाइयों की उत्पादकता में विभिन्न उद्योगों में साहसी की योग्यता एवं क्षमता में अन्तर पाया जाता है जिसके फलस्वरूप इनके पारिश्रमिक में भी अन्तर होता है। यह अन्तर लगान को निर्धारित करता है। अत: लगान उत्पादन के सभी साधनों को प्राप्त होता है।

लगान के आधुनिक सिद्धांत के अनुसार लगान के उत्पत्ति के कारण भूमि की दुर्लभता (Scarcity) है। दूसरे शब्दों में भूमि को लगान इसलिए प्राप्त होता है कि भूमि की पूर्ति उसकी माँग में परिवर्तन होने के फलस्वरूप लगान की उत्पत्ति होगी, क्योंकि भूमि में दुर्लभता का गुण पाया जाता है। इस प्रकार उत्पादन के किसी भी साधन में यदि दुर्लभता का गुण पाया जाएगा तो लगान प्राप्त होगा। दूसरे शब्दों में, किसी भी उत्पादन के साधन जिसकी पूर्ति बेलोचदार (Inelastic) होगी, उसे लगान की प्राप्ति होगी। अत: साधनों की माँग बढ़ने पर उसे लगान प्राप्त होता है। इसलिए, इसे दुर्लभता लगान (Scarcity rent) भी कहा जाता है,

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

परन्तु दीर्घकाल में अन्य साधनों की पूर्ति में माँग के अनुसार वृद्धि होने पर दुर्लभता का लगान समाप्त हो जाता है, लेकिन भूमि की लगान कभी समाप्त नहीं होता, क्योंकि भूमि की पूर्ति में वृद्धि नहीं की जा सकती है। इसलिए मार्शल ने भूमि के लगान को एक बड़ी जाति की प्रमुख उपजाति (The leading species of a large genus) कहा है।

लगान के आधुनिक धारणा को चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

चित्र में साधन की माँग रेखा DD है तथा पूर्ति रेखा SS है जो P बिन्दु पर साम्य की स्थिति में है। साम्य कीमत या साम्य आय PQ है तथा साधन की OQ मात्रा में प्रयोग होगा। साधन की कुल आय या कीमत = $OQ \times PQ = OQPW$ है। OE की कीमत पर या इससे कम कीमत पर कोई भी साधन कार्य के लिए तैयार नहीं होगा। साधन की OR मात्रा प्रयोग में लाने के लिए OP_1 कीमत देनी होगी अर्थात् OR मात्रा की हस्तांतरण आय या अवसर लागत OP_1 या RA है। यदि कीमत बढ़ जाय तो साधन की RE अतिरिक्त इकाई कार्य के लिए तैयार होगा। पुनः OP_3 कीमत हो जाय तो ET अतिरिक्त इकाई उद्योगों में आना चाहेंगे। इस प्रकार पूर्ति रेखा के विभिन्न बिन्दु साधन की विभिन्न मात्राओं के लिए उन न्यूनतम कीमतों को स्पष्ट करता है कि साधन की विभिन्न मात्राएँ कार्य करने या उद्योग में बने रहने को तत्पर है। पूर्ति रेखा के विभिन्न बिन्दु साधन की विभिन्न मात्राओं की अवसर लागत को बताता है। अतः

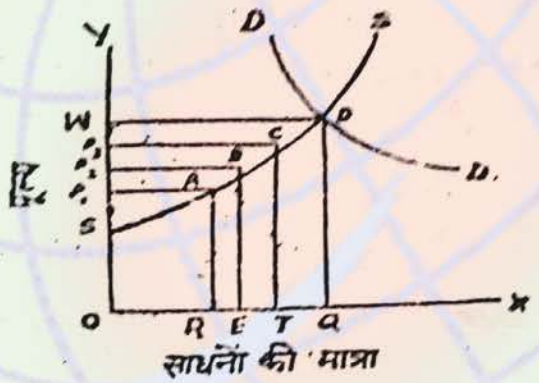

साधन की OQ मात्रा की कुल अवसर लागत = पूर्ति रेखा SS के नीचे का क्षेत्रफल OQPE
साधन की OQ मात्रा का कुल कीमत = $OQ \times PQ = OQPW$. साधन की OQ मात्रा का लगान = साधन की कुल कीमत या आय - साधन की कुल समान लागत = OQPW – OQP – EPW.

किसी उत्पादन के साधन को उत्पादन में लगाने के लिए उसकी सेवा का न्यूनतम मूल्य होता है, यदि उससे अधिक आय उस साधन को प्राप्त होता है तो वह अतिरिक्त आय कहलाता है। इस संदर्भ में **श्रीमती रॉबिन्सन** (Mrs. Joan Robindon) ने कहा है, "लगान के विचार का सार वह बचत है जो कि उस साधन की इकाई उस न्यूनतम आय पर प्राप्त करती है जो कि उस साधन को अपने को करते रहने के लिए आवश्यक है।" ("The essence of the conception of rent is the conception of a surplus earned by a particular part of a factor of production over and above the minimum earnings necessary to induce it to do its work.") **जे० एस० मिल** (J.S. Milly) के अनुसार, "किसी उत्पादक अथवा व्यापारी के द्वारा उनकी श्रेष्ठ योग्यता अथवा व्यावसायिक प्रबन्ध के कारण प्राप्त वैसी लाभ लगान के समान ही होता है।" अमेरिकी अर्थशास्त्री **एफ० ए० वाकर** (F. A. Walker) के अनुसार, "विभिन्न साहसियों की योग्यताओं में इसी प्रकार से अन्तर होता है, जिस प्रकार भूमि की उर्वरा शक्ति में अन्तर पाया जाता है।" **प्रो० मार्शल** (Marshall) ने भी कहा है, "भूमि की लगान स्वयं कोई पृथक् वस्तु नहीं है वरन् यह एक सामान्य वर्ग का एक विशेष प्रकार मात्र है।" **स्टोनियर एवं हेग** (Stonier and Hague) के शब्दों में, "सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था की दृष्टि से किसी साधन का लगान उस आय को कहते हैं, जो उस साधन का अस्तित्व बनाए रखने के लिए आवश्यक आय से अधिक होती है।"

WWW.GRADESETTER.COM

("Form the point of view of economy as a whole rent is an earning over and above what is required to keep to factor of production in existence.)

श्रीमती रॉबिन्सन (Mrs. Robinson) ने अपनी पुस्तक 'Economics of imperfect competition' में इस संबंध में लिखा है कि, "लगान की उत्पत्ति का मुख्य कारण उत्पादन के हर साधन की पूर्ति का उसकी माँग की तुलना में सीमित होने में निहित है।" बेलोचदार पूर्ति होने पर उत्पत्ति का प्रत्येक साधन- भूमि, श्रम, पूँजी अथवा प्रबन्ध लगान प्राप्त कर सकते हैं। केवल भूमि की पूर्ति को ही बेलोचदार मानना सत्य ज्ञात नहीं होता है। माँग की तुलना में पूर्ति को ही बेलोचदार मानना सत्य ज्ञात नहीं होता है। माँग की तुलना में पूर्ति की लोचहीनता निर्मित वस्तुएँ भी उसी प्रकार प्राप्त हो सकती है, जिस प्रकार वह प्राकृतिक या अथवा ईश्वरीय वस्तुओं अथवा प्रकृति के निःशुल्क उपहारों में होती है। अल्पकाल में भूमि के अतिरिक्त अन्य वर्गों के साधनों में भी भूमि की समानता पायी जाती है। अर्थात् अल्पकाल में उसकी मात्रा प्रायः स्थिर होती है। इसलिए उनसे प्राप्त आय, उनसे उत्पादित वस्तुओं की कीमत के आधार पर भूमि का लगान ही मानी जा सकती है।

इसे एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है– यदि कोई श्रमिक अपना श्रम देना चाहता है तो उसे न्यूनतम पारिश्रमिक उतना अवश्य मिलना चाहिए जितना कि वह इससे अधिकतम आय अन्य दूसरे व्यवसाय में प्राप्त कर सकता है। यदि श्रमिक X उद्योगों में कार्यरत हैं तथा 500 रुपये प्रतिमाह प्राप्त करते हैं। ऐसी स्थिति में श्रमिक को Y उद्योगों में लगाए रखने के लिए कम से कम 500 रुपये प्रतिमाह अवश्य देना होगा। यह आय श्रम का हस्तांतरित आय (Transfer earning) या अवसर लागत (Opportunity cost) है। अतः इसी आय पर X उद्योगों में भी कहा जा सकता है। लेकिन Y उद्योग में श्रमिक की मांग अधिक है। अतः उसे 550 रुपये प्रतिमाह देना होगा जिससे कि वह Y उद्योगो में ही काम करें। यह 50 रुपये (550–500 = 50 रुपये) अतिरिक्त आय है जो अवसर लागत पर बचत है, यह लगान है।

प्रो० बोल्डिंग (Prof. Boulding) ने लगान की व्याख्या करते हुए इस प्रकार लिखा है, "आर्थिक लगान उत्पादन के किसी साधन के पुरस्कार का वह अंश है जो उसके कार्य पर लगाए रखने की अपेक्षा कुछ अधिक रूप में प्राप्त होता है।" (Economic rent may be defined as a payment to an unit of any factor of production which is excess of the minimun amount necessary to keep that factor in its present occupation.) **प्रो० बेन्हम** (Prof. Benham) के अनुसार, "साधारणत: उस बचत को जो कोई इकाई अपनी स्थानान्तर आय के ऊपर प्राप्त करती है, उसे लगान कहते हैं" (In general the excess of what any unit gets its transfer earnings is the nature of rent .)

लगान का आधुनिक सिद्धांत **वीजर** (Wiser) के वर्गीकरण पर आधारित है। **प्रो० वीजर** के अनुसार उत्पत्ति के साधनों को दो भागों में बाँटा जा सकता है- (i) विशिष्ट साधन (Specific factor) तथा (ii) अविशिष्ट साधन (Non specific factor)| उत्पत्ति के विशिष्ट साधन वे हैं जिसका प्रयोग किसी एक कार्य के लिए होता है, जैसे रेलवे का इंजन, सिलाई मशीन आदि। उत्पत्ति के अवशिष्ट साधन वे हैं जिसका प्रयोग विभिन्न कार्यों के लिए किया जाता है अर्थात् वे पूर्णरूप से गतिशील (Perfectly mobile) होते हैं। जैसे-बिजली, कारखाना का भवन, पूँजी आदि। लगान की उत्पत्ति का कारण साधनों की विशिष्टता या स्वल्पता है। लगान का आधुनिक सिद्धान्त इस बात पर आधारित है कि लगान की उत्पत्ति केवल ऐसे साधनों से होता है जिसकी पूर्ति बेलोचदार होती है। ऐसा अल्पकाल में हो सकता है, परन्तु दीर्घकाल में उनकी पूर्ति पूर्णतया लोचदार होती है। इस प्रकार लगान एक सामान्य वस्तु है तथा उत्पादन के सभी साधनों को प्राप्त कर सकता है अर्थात किसी साधन के

WWW.GRADESETTER.COM

निम्नतम पूर्ति मूल्य ऊपर आय के आधिक्य को लगान कहते हैं। (Surplus of receipts over its minimum supply price) या सभी प्रकार की बचत लगान है। (The concept of rent is the concept of surplus).

स्पष्ट है कि लगान के आधुनिक सिद्धांत के अनुसार उत्पत्ति के प्रत्येक साधन को लगान प्राप्त होता है। लगान के उत्पन्न होने के कारण साधन की विशिष्टता है । दूसरे शब्दों में, लगान तब उत्पन्न होता है जबकि साधन की पूर्ति बेलोचदार (Inelastic) हो अर्थात् पूर्णतया लोचदार से कम (Less than perfectly elastic) है। यह एक सामान्य सिद्धांत है जो प्रत्येक साधन पर लागू होता है।

लगान तथा लाभ में भेद–राष्ट्रीय आय का वह भाग जो साहसी को जोखिम उठाने के बदले प्राप्त होता है उसे लाभ कहते हैं। दूसरे शब्दों में राष्ट्रीय आय का वह भाग जो वितरण की प्रक्रिया में साहसी को प्राप्त होती है लाभ कहा जाता है। लाभ अनिश्चितता झेलने का पुरस्कार है। लाभ धनात्मक, शून्य एवं ऋणात्मक भी हो सकता है। लाभ तथा लगान में निम्नलिखित मुख्य अन्त हैं–

1. लाभ अनिश्चितता झेलने का पुरस्कार है जबकि लगान किसी साधन की सीमितता का परिणाम है। दूसरे शब्दों में, लगान तब उत्पन्न होता है जबकि साधन की पूर्ति बेलोचदार (Inelastic) या पूर्ण लोचदार से कम (Less than perfectl elastic) हो। लाभ तथा लगान में एक आधारभूत अन्तर उसके उत्पन्न होने के कारणों में निहित है।

2. लाभ में लगान का तत्व हो सकता है। सामान्य लाभ (Normal profit) के ऊपर आधिक्य को अतिरिक्त लाभ कहते हैं। आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार लगान एक ऐसा अतिरेक है जो किसी भी साधन को उस स्थिति में प्राप्त हो सकता है, जबकि उसकी आय हस्तांतरण आय से अधिक हो। इस प्रकार लगान केवल भूमि को आय नहीं वरन उन सभी साधनों की आय का अंग है जिसकी पूर्ति भूमि की तरह सीमित है। अत: लाभ में भी लगान का अंश है ।

3. लाभ ऋणात्मक (Negative) भी हो सकता है। ऋणात्मक लाभ को हानि कहते हैं जबकि लगान ऋणात्मक नहीं हो सकते हैं ।

4. लगान की तुलना में लाभ में उतार-चढ़ाव अधिक होते हैं। तेजी में लाभ, लगान की अपेक्षा अधिक तेजी से बढ़ते हैं तथा मन्दी में बहुत तेजी से गिरते भी हैं ।

5. लाभ एक बची हुई आय होती है जबकि लगान अनुबन्धीय तथा निश्चित भुगतान (Contractual and certain payments) होते हैं।

इस प्रकार उपर्युक्त तथ्यों से लाभ एवं लगान में अन्तर स्पष्ट हो जाता है ।

Q. 7. औसत लागत वक्र सामान्यत: 'U' आकार के क्यों होते हैं ? दीर्घकालीन लागत वक्र अपेक्षाकृत फैले हुए क्यों होते हैं ? Why are average cost curves generally 'U' shaped ? Why are long period average cost curves flatter ?

(V.V.I.— Exam. 2013, 2015, 2018)

अथवा, किसी फर्म का औसत लागत वक्र U-आकार का क्यों होता है? क्या औसत लागत वक्र के आकार पर समय का कोई प्रभाव पड़ता है ?

(Why is the average cost curve of a firm U-shaped ? Does time bring any effect upon the shape of the average cost curve?)

Or. एक फर्म के औसत लागत वक्र की आकृति U आकार की क्यों होती हैं?

Ans. वर्तमान उत्पादन प्रणाली के अन्तर्गत लागत (Cost) का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि एक निश्चित कीमत पर कोई उत्पादक किसी वस्तु की कितनी मात्रा में उत्पादन करेगा, वह उत्पादन लागत पर निर्भर करता है, जैसे–यदि उत्पादन बढ़ता है तो कुल

WWW.GRADESETTER.COM

लागत में वृद्धि होती है, परन्तु उसकी प्रकृति (Nature) क्या होगी, यह समय की अवधि पर निर्भर करता है । उत्पादन की अवधि को दो भागों में बाँटा जा सकता है– (i) अल्पकाल (Short period) तथा (ii) दीर्घकाल (Long period) । अल्पकाल में उत्पादन व्यय की रेखा दीर्घकालीन उत्पादन व्यय की तुलना में अधिक चपटा (Flatter) होता है ।

1. अल्पकाल (Short period)—अल्पकालीन औसत लागत वक्र U आकार का होता है । औसत लागत उत्पादन की प्रति इकाई लागत होती है । अर्थात् AC = TC/Q. दूसरे शब्दों में, कुल उत्पादन व्यय में उत्पादन की कुल मात्रा से भाग देने से जो भागफल प्राप्त होता है, उसे औसत लागत (Average cost) कहते हैं । सामान्यतया किसी वस्तु के उत्पादन की औसत लागत (AC) की रेखा U आकार की होती है। यह इस बात को बताता है कि जैसे-जैसे उत्पादन बढ़ता है, प्रारम्भ में औसत लागत घटता है और फिर कुछ समय के लिए स्थिर हो जाता है तथा अन्त में उत्पादन की मात्रा में वृद्धि के साथ-साथ बढ़ने लगता है। इसे चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

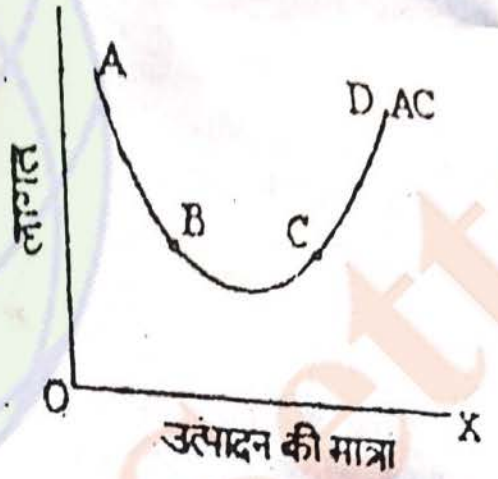

चित्र में AC औसत लागत वक्र है । A से B बिन्दु तक औसत लागत घट रहा है । B से C तक औसत लागत समान है तथा C से D तक लागत की रेखा ऊपर की ओर बढ़ती है । औसत लागत (AC) औसत स्थिर लागत (AFC) तथा औसत परिवर्तनशील लागत (AVC) का योग है ।

औसत लागत रेखा (AC) का U आकार होने के कारण–प्रारम्भ में उत्पादन के निम्न स्तर पर औसत लागत (AC) अधिक या ऊँचा रहता है, क्योंकि स्थिर लागत (Fixed cost) तथा औसत परिवर्तनशील लागत (Average variable cost) दोनों अधिक होता है। जब उत्पादन में वृद्धि होती है तो औसत स्थिर और औसत परिवर्तनशील लागत घटता है, जिसमें औसत उत्पादन भी तेजी से घटता है, क्योंकि स्थिर लागत सदा स्थिर रहता है तथा उत्पादन में वृद्धि के साथ प्रति इकाई स्थिर लागत घटता जाता है । अविभाज्य साधनों के प्रयोग तथा श्रम, तकनीकी प्रबन्ध, बिक्रय इत्यादि से आन्तरिक मितव्ययिताओं के कारण ऐसी बात होती है। औसत लागत (AC) तबतक घटता है, जबतक कि यह न्यूनतम बिन्दु पर न आ जाए । यह उत्पादन का अनुकूलतम (Optimum) या सर्वोतम बिन्दु होता है। इसके बाद उत्पादन में वृद्धि करने से औसत लागत (AC) बढ़ने लगता है। औसत परिवर्तनशील लागत में वृद्धि उस कमी की अपेक्षा अधिक होती है, जो औसत स्थिर लागत के घटने से होता है । अत: औसत लागत तेजी से बढ़ने लगता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि अविभाज्य साधनों का क्षमता से ज्यादा प्रयोग तथा प्रबन्ध, श्रम इत्यादि की अमितव्ययिताएँ स्पष्ट होने लगती हैं, जो उत्पादन की प्रति इकाई परिवर्तनशील लागत में वृद्धि कर देती है तथा औसत लागत (AC) रेखा ऊपर की ओर जाती है जिसके फलस्वरूप औसत लागत रेखा U आकार की बन जाती है ।

औसत परिवर्तनशील लागत (Average variable cost) के U आकार होने के कारण ही औसत कुल लागत (ATC or AC) की रेखा U आकार की होती है । उत्पादन के प्रारम्भ में औसत स्थिर लागत (Average fixed cost) और औसत परिवर्तनशील लागत (AVC) से कम होने के कारण औसत कुल लागत भी कम होती हे । परन्तु एक बिन्दु पर जहाँ से औसत कुल लागत में औसत परिवर्तनशील लागत बढ़ने के कारण वृद्धि होने लगती है । ऐसा भी

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

हो सकता है और कुल लागत कुछ देर तक औसत स्थिर लागत में कमी होने की अपेक्षा औसत परिवर्तनशील लागत में कम वृद्धि होने के कारण औसत परिवर्तनशील लागत में वृद्धि के अनुरूप भी कम हो रही है, परन्तु ऐसा हमेशा नहीं होता है, क्योंकि एक बिन्दु के बाद औसत स्थिर लागत अनुपात से कम होती है तथा औसत परिवर्तनशील लागत अनुपात से अधिक बढ़ती है। इसके फलस्वरूप औसत परिवर्तनशील लागत के साथ औसत कुल लागत (Average total cost) में भी वृद्धि होने लगती है। इसे रेखा चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

चित्र में AC औसत लागत रेखा, AVC औसत परिवर्तनशील लागत (Average variable cost) तथा AFC औसत स्थिर लागत (Average fixed cost) की रेखा है। चित्र में औसत स्थिर लागत (AFC) उत्पादन में वृद्धि के साथ हमेशा घटती है। औसत परिवर्तनशील लागत (AVC) एक सीमा तक घटती है, पुनः बढ़ने लगती है। प्रारम्भ में औसत स्थिर लागत (AFC) तथा औसत परिवर्तनशील लागत घटती है तो औसत लागत (AC) घटती है। कुछ समय के लिए औसत स्थिर लागत (AFC) के घटने की दर तथा औसत परिवर्तनशील लागत (AVC) के बढ़ने की दर बराबर हो जाती है। अतः औसत लागत (AC) स्थिर हो जाती है। पुनः औसत परिवर्तनशील लागत (AVC) के बढ़ने की दर औसत स्थिर लागत (AFC) के घटने की दर अधिक हो जाती है, जिसके कारण औसत लागत (AC) की रेखा ऊपर उठने लगती है। अतः औसत लागत का आकार U की तरह हो जाता है।

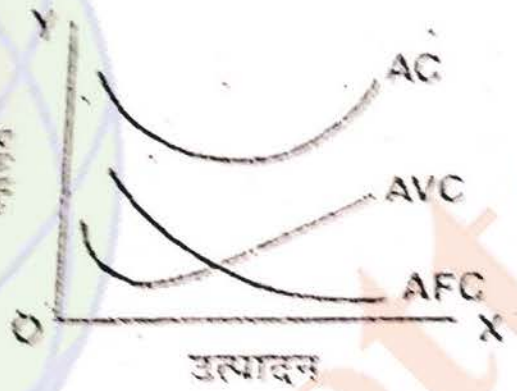

उत्पत्ति के नियमों (Laws of Returns) के कारण भी औसत लागत (AC) की रेखा U आकार की होती है। उत्पादन की वृद्धि हेतु जब उत्पादन के साधनों की मात्रा में वृद्धि की जाती है तो प्रारम्भ में उत्पत्ति वृद्धि नियम (Law of Increasing Returns) लागू होता है, जिसके कारण प्रति इकाई लागत में कमी आती है। उत्पत्ति वृद्धि नियम को लागत ह्रास नियम (Law of diminishing cost) भी कहा जाता है। पुनः उत्पादन के साधनों में वृद्धि करने से उत्पादन के क्षेत्र में उत्पत्ति समता नियम (Law of Constant Returns) क्रियाशील होता है। इसके अन्तर्गत लागत स्थिर रहता है। अतः इसे लागत समता नियम (Law of Constant Returns) कहा जाता है। इसके बाद भी उत्पादन के साधनों की मात्रा में वृद्धि की जाए तो उत्पादन के क्षेत्र में उत्पत्ति ह्रास नियम (Law of Diminishing Returns) लागू होता है। इसके अन्तर्गत प्रति इकाई लागत बढ़ने लगता है। इसे लागत वृद्धि नियम (Law of diminishing cost) भी कहा जाता है। जब उत्पादन वृद्धि नियम लागू होता है तो औसत लागत (AC) घटता है, जब उत्पादन समता नियम लागू होता है तो औसत लागत (AC) स्थिर हो जाता है। जब उत्पत्ति वृद्धि नियम लागू होता है तो औसत लागत बढ़ने लगता है। इस प्रकार उत्पादन वृद्धि नियम के समय औसत लागत की रेखा नीचे की ओर गिरती है, उत्पादन समता नियम के समय समानान्तर तथा उत्पादन ह्रास नियम के समय ऊपर की ओर उठती है। इसके फलस्वरूप इसका आकार U जैसा हो जाता है।

उत्पादन के पैमाने (Scale of Production) में वृद्धि होने से भी फर्म को बड़े पैमाने के उत्पादन के आन्तरिक एवं बाह्य बचत (Internal and external economics) की प्राप्ति

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

होती है, जिसके फलस्वरूप औसत लागत (AC) में कमी आती है तथा औसत लागत की रेखा नीचे की ओर गिरती है । फर्म को मुख्यतया चार प्रकार की बचत प्राप्त होती है—

(i) श्रम की बचत (Labour economics)—उत्पादन बढ़ने से श्रम-विभाजन, विशिष्टीकरण का प्रयोग संभव हो जाता है। इससे श्रमिकों की कुशलात में वृद्धि होती है तथा समय एवं उपकरणों की बचत होती है ।

(ii) मशीन की बचत (Technical economics)—उत्पादन के आकार में वृद्धि होने से मशीनों, औजारों एवं अन्य निश्चित साधनों का अधिक कुशल प्रयोग होता है। फलतः इस पर किया गया व्यय प्रति इकाई घटता जाता है ।

(iii) बाजारदारी की बचतें (Marketing economics)—इसके अन्तर्गत वे बचते आती हैं, जो फर्म के माल की बिक्री से उत्पन्न होती है । बिक्री सम्बन्धी लागते जैसे विज्ञापन पर व्यय, उत्पादन बढ़ने के साथ नहीं बढ़ता है । अतः औसत लागत प्रति इकाई घटता है।

(iv) प्रबन्ध की बचतें (Managerial economics)—इसका सम्बन्ध फर्म के प्रति इकाई प्रबन्ध लागत से है । जैसे-जैसे फर्म का उत्पादन बढ़ता है, वैसे-वैसे प्रति इकाई प्रबन्ध लागत घटता है तथा प्रति इकाई लागत भी घटता जाता है ।

प्रारम्भ में फर्म को आन्तरिक एवं बाह्य बचतें होती हैं। परन्तु ये बचतें एक सीमा तक ही प्राप्त होती है । अर्थात् यदि उत्पादन में निरन्तर वृद्धि की जाए तो ये आदर्श बिन्दु पर नहीं रह पाएगा, जिसके फलस्वरूप बचतें (Economics) हानियों या अमितव्ययिताएँ (Dis-economies) में बदल जाती है । औसत लागत (AC) तथा सीमान्त लागत (MC) भी बढ़ने लगती है तथा अल्पकालीन औसत लागत (AC) एवं सीमान्त लागत की रेखा का आकार अनिवार्य रूप से 'U' अक्षर की तरह हो जाता है ।

2. **दीर्घकाल** (Long period)—दीर्घकाल में औसत लागत की रेखा (Long run average cost curve) अल्पकालीन औसत लागत रेखा (Short run average cost curve) की तरह ही U आकार की होती है । दीर्घकाल में समय की अवधि काफी लम्बी होती है, जिसके अन्तर्गत बदलती हुई माँग के साथ उत्पादन में परिवर्तन संभव होत है । अल्पकाल की अवधि में कारखाना, यंत्र आदि स्थिर रहता है तथा मजदूरी, कच्चे माल आदि में परिवर्तन किया जा सकता है । परन्तु दीर्घकाल में स्थायी एवं परिवर्तनशील साधनों में आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया जा सकता है । दूसरे शब्दों में दीर्घकाल में उत्पादन के सभी साधनों में माँग के रूप में परिणत किया जा सकता है, जिससे कि उत्पादन न्यूनतम लागत पर हो सके । अल्पकाल में माँग कम होने पर उत्पादन की मात्रा में कमी होती है, जिसके कारण फर्म की स्थायी लागत प्रति इकाई बढ़ जाती है । अतः औसत लागत (AC) बढ़ जाता है, परन्तु दीर्घकाल में माँग में कमी होने से उत्पादन में कमी होती है तथा उन साधनों में भी कमी की जा सकती है, जो अल्पकाल में स्थायी रहता है, जैसे-कारखाना बेचा जा सकता है, बीमे की पॉलिसी में कमी की जा सकती है, कर्मचारियों की छंटनी आदि । अल्पकाल में उत्पादन आदर्श बिन्दु के बाद होने से उत्पत्ति ह्रास नियम लागू होता है तथा औसत लागत बढ़ता है, परन्तु दीर्घकाल में स्थायी साधनों में भी आनुपातिक वृद्धि लाना संभव है ।

दीर्घकालीन औसत लागत (Long run average cost) की रेखा U आकार की होती है, परन्तु अल्पकालीन औसत लागत रेखा की तुलना में अधिक चिपटी होती है । **स्टोनियर एवं हेग** (Stonier and Hague) के अनुसार, "Long run average cost curves are invariably flatter than short run ones.) दीर्घकालीन औसत लागत रेखा (Long run

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

average cost curve) पहले धीरे-धीरे घटता है तथा न्यूनतम बिन्दु के बाद बढ़ने लगता है। इसका कारण यह है कि समय के अनुसार उत्पादन की इकाई सुधर सकती है। विशिष्टीकरण, अच्छी मशीन, यातायात, कुशल श्रम आदि के प्रयोग से कुशलता में वृद्धि की जा सकती है तथा प्रति इकाई लागत में कमी होती है । अल्पकाल में समय के अभाव के कारण कुशलता में वृद्धि नहीं की जा सकती है । अकुशल फर्म भी दीर्घकाल में कुशल फर्म हो जाता है। इससे लागत में कमी आती है । अल्पकाल की स्थायी लागत (Fixed cost) दीर्घकाल में परिवर्तनशील (Variable) हो जाता है । परन्तु जब निरन्तर उद्योगों का विकास होने लगता है, तो कुशल श्रम, पूँजी की माँग बढ़ती है, इससे मजदूरी, ब्याज, लगान, कच्चे माल का मूल्य, यातायात की समस्या आदि बढ़ता है । अतः लागत एवं मूल्य में वृद्धि होती है। इस प्रकार दीर्घकालीन औसत लागत रेखा (LAC) अल्पकाल की तुलना में धीरे-धीरे घटती है तथा धीरे-धीरे घटती है तथा क्योंकि दीर्घकाल में सभी लागत परिवर्तनशील हो जाती है। इन्हीं कारणों से दीर्घकालीन औसत (LAC) रेखा, अल्पकालीन औसत लागत (SAC) की अपेक्षा अधिक चपटी होती है। "Long run average cost curve will normally be U shaped just as short run ones will be, but they will invariably be flatter than short run ones. "

दीर्घकाल में माँग एवं उत्पादन के प्रत्येक परिवर्तन के साथ स्थायी एवं परिवर्तनशील (fixed and variable) साधनों में ऐसा परिवर्तन किया जाता है कि उस उत्पादन पर लागत कम-से-कम हो । इनके अन्तर्गत प्रत्येक उत्पादन की राशि की एक नई अल्पकालीन औसत लागत वक्र रेखा होती है । अल्पकालीन औसत लागत (SAC) की इन सभी पृथक-पृथक वक्र रेखाओं को छूती एक रेखा खींचने से दीर्घकालीन औसत लागत (LAC) की वक्र रेखा बनती है। इस प्रकार, दीर्घकालीन औसत लागत रेखा (LAC) विभिन्न अल्पकालीन औसत वक्र लागत की वक्र रेखाओं को स्पर्श रेखा होती है । दीर्घकालीन औसत रेखा सारी अल्पकालीन औसत लागत रेखा (SAC) को ढँक लेती है । इसलिए इसे लिफाफा या आवरण (Envelop) भी कहते हैं । उत्पादन की किसी मात्रा पर दीर्घकालीन औसत लागत उस मात्रा की अल्पकालीन औसत लागत रेखा (SAC) से नीचे रहती है तथा स्पर्श करती है, परन्तु काटती नहीं है । इसे चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

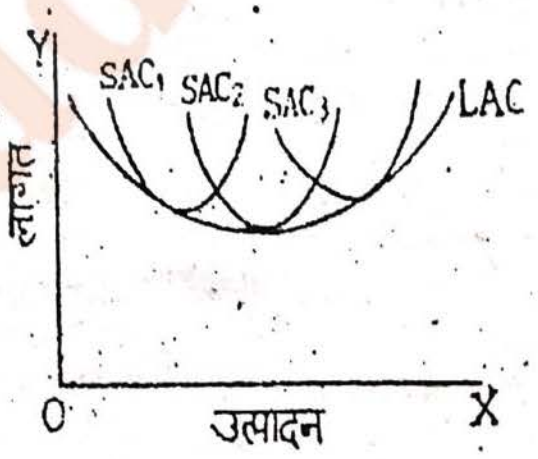

चित्र OX रेखा पर उत्पादन तथा OY रेखा पर लागत दिखाया गया है । LAC दीर्घकालीन औसत लागत रेखा तथा SAC अल्पकालीन औसत लागत रेखा है । स्पष्ट है कि दीर्घकालीन औसत लागत (LAC) रेखा किसी भी अल्पकालीन औसत लागत (SAC) से अधिक चपटी या चौड़ी है । दीर्घकालीन औसत लागत रेखा दी हुई अल्पकालीन औसत लागत रेखाओं का योग है । स्पष्ट है कि दीर्घकालीन औसत लागत रेखा अल्पकालीन औसत लागत रेखा की तुलना में चपटी (Flatter) होती है । इन दोनों में गुणात्मक अन्तर न होकर परिमाणात्मक अन्तर है।

दीर्घकालीन सीमान्त लागत वक्र (Long run marginal cost curve) भी दीर्घकालीन औसत लागत वक्र की तरह अधिक चौड़ी एवं चपटी U आकार की होती है। दोनों में अन्तर

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

केवल इतना ही है कि अल्पकाल के अन्तर्गत सीमान्त लागत (MC) स्थिर लागत से स्वतंत्र होती है, परन्तु दीर्घकाल में स्थिर लागतों और परिवर्तनशील लागतों का अन्तर समाप्त हो जाता है ।

Q. 8. Is the nature of economics related to Art or Science ? Explain.

अर्थशास्त्र की प्रकृति कला से सम्बन्धित है अथवा विज्ञान से ? उल्लेख करें ।

(Exam. 2016)

Ans. अर्थशास्त्र के क्षेत्र के अन्तर्गत तीन तत्वों को सम्मिलित किया जाता है–

(1) अर्थशास्त्र की विषय सामग्री क्या है?

(2) अर्थशास्त्र की प्रकृति क्या है अथवा क्या अर्थशास्त्र विज्ञान है अथवा कला अथवा दोनों ?

(3) अर्थशास्त्र की सीमाएँ क्या है ?

अर्थशास्त्र की विषय सामग्री (Subject Matter of economics) : अर्थशास्त्र के अध्ययन का विषय क्या है, इस संबंध में प्रारम्भ से ही अर्थशास्त्रियों के बीच मतभेद रहा है। प्राचीन क्लासिकल विचारकों के मतानुसार अर्थशास्त्र के अध्ययन का विषय ''धन'' है। एडम स्मिथ और उसके अनुयायियों ने अर्थशास्त्र को "धन का विज्ञान" (Science of Wealth) बताया और कहा कि अर्थशास्त्री का कर्तव्य व्यक्ति या समाज को ऐसे तरीके बताना है कि वे अपने धन के कोष में वृद्धि कर सकें ।

मार्शल ने मानवी क्रियाओं को भौतिक और अभौतिक (आर्थिक और अनार्थिक) दो वर्गों में विभक्त किया और बताया कि अर्थशास्त्र में सामाजिक, वास्तविक और सामान्य व्यक्ति की धन संबंधी क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है जिनसे मानव जाति के भौतिक कल्याण में वृद्धि हो। मार्शल की विचारधारा को अधिक व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करते हुए पिगू ने लिखा है कि "अर्थशास्त्र उन समस्त मानवीय क्रियाओं का अध्ययनो है जिन्हें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से द्रव्य के मापदण्ड से संबंधित किया जा सके ।

प्रो. रॉबिन्स ने "कल्याणवादी अर्थशास्त्र'' की आलोचना करते हुए अर्थशास्त्र की ''अभाव का विज्ञान" (Science of Scarcity) बताया है। रॉबिन्स के मतानुसार अर्थशास्त्र के अध्ययन में ''मनुष्य की अनन्त आवश्यकताएँ तथा इनकी पूर्ति के हेतु वैकल्पिक उपभोग वाले असीमित साधन" है। रॉबिन्स के शब्दों में "अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो मानव व्यवहार का अध्ययन उद्देश्यों तथा वैकल्पिक उपयोगों वाले सीमित साधनो के बीच संबंध के रूप में करता है।" रॉबिन्स ने बताया कि "अर्थशास्त्र का प्रारंम्भ और अन्त मनुष्य है।" The starting point and goal of our science is man.

रॉबिन्स ने कहा कि अर्थशास्त्र के अध्ययन का विषय न तो ''धन' है और न ''भौतिक और अभौतिक क्रियाओं से संबंधित मानवीय व्यवहार" ही। रॉबिन्स के मतानुसार अर्थशास्त्र समस्त मानवीय क्रियाओं के आर्थिक पहलू का अध्ययन है जो कि मनुष्य द्वारा अपने सीमित ओर वैकल्पिक उपयोग वाले साधनों के असीमित उद्देश्यों पर वितरण के समय स्पष्ट होता है ।

अर्थशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है (Social Science) है अथवा "मानवीय विज्ञान" (Hu man Science)—इस संबंध में भी सभी विचारक एकमत नहीं है । क्लासिकल विचारकों ने "आर्थिक मनुष्य" (Economic Man) की कल्पना की तथा अर्थशास्त्र को इसी कल्पित आर्थिक मनुष्य से संबंधित किया । आगे चलकर मार्शल और उसके शिष्यों ने क्लासिकल विचारकों द्वारा कल्पित आ[illegible]

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

बताया कि अर्थशास्त्र का संबंध "सामाजिक, वास्तविक, और सामान्य मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं से है।" इन विद्वानों ने यह भी कहा कि अर्थशास्त्र में हम उपभोग, उत्पति, विनिमय, वितरण और राजस्व-से संबंधित जिन समस्याओं का अध्ययन करते हैं, ये सब समस्यायें केवल एक समाज में ही उत्पन्न होती है और इसलिए अर्थशास्त्र एक सामाजिक शास्त्र है । कल्याणवादी विचारधारा के प्रो. रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र को केवल एक "मानवीय विज्ञान" के रूप में ही स्वीकार किया। उसने बताया कि अर्थशास्त्र में हम प्रत्येक मनुष्य (चाहे वह सामाजिक हो या असामाजिक, वास्तविक हो या अवास्तविक सामान्य हो या असामान्य) की प्रत्येक क्रिया अर्थात् प्रत्येक मानवीय क्रिया के आर्थिक पहलू (Economic Aspect) अथवा निर्णय विधायक पहलू (Choice-making Aspect) का अध्ययन करते हैं। रॉबिन्स ने कहा कि सम-सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम, क्रमागत उपयोगिता ह्रास नियम, माँग व पूर्ति का नियम आदि अर्थशास्त्र के महत्वपूर्ण नियम सामाजिक और असामाजिक दोनों प्रकार के मनुष्यों पर समान रूप से लागू होते हैं। उसने कहा कि यद्यपि विनिमय वितरण और राजस्व संबंधी क्रियायें तो केवल समाज में ही सम्पन्न हो सकती है, लेकिन उत्पत्ति और उपभोग संबंधी क्रियायें समाज से बाहर भी सम्पन्न हो सकती है, अत: अर्थशास्त्र एक "व्यक्तिगत शास्त्र" है।

अर्थशास्त्र की प्रकृति (Nature of Economics) : अर्थशास्त्र की प्रकृति क्या है? इस संबंध में सभी विचारक एकमत नहीं है। परिभाषित शब्दावली में विज्ञान का अर्थ "प्रकृति के किसी भाग के संबंध में ज्ञान के क्रमबद्ध और नियमबद्ध संग्रह" से है तथा कला का अर्थ किसी भी कार्य को करने के सर्वोतम ढ़ंग से है । अर्थशास्त्र विज्ञान और कला दोनों है। अर्थशास्त्र विज्ञान इस रूप में है क्योकि अन्य विज्ञानों की तरह अर्थशास्त्र में भी कुछ सामान्य नियम यथा-क्रमागत उपयोगिता ह्रास नियम, सम-सीमान्त उपयोगिता नियम, माँग और पूर्ति का नियम, उत्पति के नियम आदि पाये जाते है तथा अर्थशास्त्र में मानवीय व्यवहार और उससे उत्पन्न होने वाले नियमों अर्थात् मानवीय आवश्यकताओं और उनकी पूर्ति से संबंधित साधनों का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है। इसी प्रकार अर्थशास्त्र कला इस रूप में है क्योकि यह शास्त्र हमें कुछ व्यावहारिक समस्याओं का हल भी प्रस्तुत करता है । कलाकार के रूप में अर्थशास्त्री यह बताता है कि लगान, ब्याज, मजदूरी की उचित दरों के निर्धारण के हेतु किन-किन उपायो को अपनाना चाहिए। ए. सी. पिगू (A. C. Pigou) के शब्दों में, "हम अर्थशास्त्र का अध्ययन एक दार्शनिक के दृष्टिकोण से केवल ज्ञानार्जन के हेतु ही नहीं करते अपितु एक चिकित्सक के दृष्टिकोण से दूसरों को लाभ पहुँचाने के ध्येय से करते हैं ।" "Our Impulse is not the philosopher's impulse, knowledge for the sake of knowledge rather the physiologist's knowledge for the healing that may help to bring about."—Pigou

विज्ञान के वास्तविक और आदर्शक दो स्वरूप होते हैं। वास्तविक विज्ञान (Positive Science) वस्तु-स्थिति का यथावत अध्ययन करता है । अर्थात् किन्हीं दो विषयों के कारण (Cause) और परिणाम (Effect) के बीच संबंध स्थापित करता है। इसके विपरीत आदर्शक विज्ञान (Normative Science) उन आदर्शों का निर्धारण करता है जिनकी प्राप्ति की हमें चेष्टा करनी चाहिये अर्थात् आदर्शक विज्ञान हमें वांछनीय और अवांछनीय कार्यों का ज्ञान कराता है। दूसरे शब्दों में, वास्तविक विज्ञान बताता है कि "वस्तु स्थिति क्या है" जबकि आदर्शक विज्ञान बताता है कि "आदर्श स्थिति क्या होनी चाहिए।" अर्थशास्त्र वास्तविक और

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

आर्थिक क्रियाओं के कारण और परिणाम के बीच संबंध कायम करता है। उपभोग के क्षेत्र में अर्थशास्त्र बताता है कि जैसे-जैसे किसी व्यक्ति के पास किसी वस्तु का स्टाक बढ़ता जाता है वैसे-वैसे उसे उत्तरोत्तर इकाइयों से प्राप्त होने वाली उपयोगिता घटती जाती है। कारण और परिणाम का यह संबंध अर्थशास्त्र बताता है कि यदि किसी किसान द्वारा अपनी भूमि पर अधिकाधिक श्रम और पूंजी की इकाईयाँ जुटाई जाती है तो उसे उत्तरोतर इकाइयों से घटती दर पर उपज प्राप्त होती है। कारण और परिणाम का यह संबंध अर्थशास्त्र में "क्रमागत उत्पत्ति ह्रास नियम" के नाम से प्रसिद्ध है। विनिमय के क्षेत्र में अर्थशास्त्र बताता है कि किसी वस्तु का बाजार मूल्य बढ़ जाने पर उसकी माँग गिर जाती है (कारण) तथा मूल्य घट जाने पर मांग बढ़ जाती है (परिणाम)। कारण और परिणाम का यह संबंध अर्थशास्त्र में "मांग के नियम" के नाम से प्रसिद्ध है। इसी प्रकार वितरण के क्षेत्र में अर्थशास्त्र में "मांग के नियम" के नाम से प्रसिद्ध है। इसी प्रकार वितरण के क्षेत्र में अर्थशास्त्र बताता है कि "उत्पति के किसी साधन की पूर्ति घट जाने पर अथवा मांग बढ़ जाने पर उसका प्रतिफल बढ़ जाता है। कारण और परिणाम का यह संबंध अर्थशास्त्र में "मांग व पूर्ति के नियम" के नाम प्रसिद्ध है। आदर्शक विज्ञान के रूप में अर्थशास्त्र मानव व्यवहार के आर्थिक आदर्शों को प्रस्तुत करता है ताकि समाज का अधिकतम कल्याण हो सके। लाभ, मजदूरी, लगान और ब्याज की दर किन-किन कारणों से निर्धारित होती है, इस प्रश्न का उत्तर हमें वास्तविक अर्थशास्त्र से मिलता है। परन्तु ब्याज, लाभ, लगान, मजदूरी की उचित दर क्या होनी चाहिए? इस प्रश्न का उत्तर हमें आदर्शक अर्थशास्त्र से ही मिलता है।"

अर्थशास्त्र विज्ञान है अथवा कला अथवा दोनों? और यदि अर्थशास्त्र को विज्ञान मान लिया जाए तो क्या यह वास्तविक विज्ञान है अथवा आदर्शक विज्ञान है, इस विषय पर प्रारम्भ से ही अर्थशास्त्रियों के बीच मतभेद रहा है। प्राचीन क्लासिकल विचारकों ने अर्थशास्त्र को केवल वास्तविक विज्ञान के रूप में ही स्वीकार किया और बताया कि अर्थशास्त्र का संबंध केवल आर्थिक तथ्यों की खोज और विश्लेषणों तक ही सीमित है, आदर्श निर्धारण से इसका कोई संबंध नहीं हैं आगे चलकर जर्मन विचारकों ने अर्थशास्त्र को वास्तविक और आदर्शक विज्ञान तथा कला दोनों रूपों में स्वीकार किया।

मार्शल, पिगू और हाटरे आदि विचारकों ने जर्मन विचारकों का अनुकरण किया और बताया कि अर्थशास्त्र का अध्ययन समाज के भौतिक कल्याण की दृष्टि से किया जाना चाहिए। चैपमैन (Chapman) के शब्दो में, "अर्थशास्त्र एक वास्तविक विज्ञान है क्योंकि यह आर्थिक तत्वों का यथावत अध्ययन करता है, यह एक आदर्शक विज्ञान है, क्योंकि यह इस बात की खोज करता है कि तथ्य किस प्रकार के होने चाहिए और यह एक कला है क्योंकि यह वांछनीय लक्ष्यों की पूर्ति के हेतु साधनों और उपायों की खोज करता है।" "Economics is a positive science dealing with economic facts as they are a normative science enquiring fact as they ought to be and an art finding out the ways and means by which the desired end can be reached."—Chapman.

इसी प्रकार मार्शल ने लिखा है कि "अध्ययन का ध्येय ज्ञान के लिए ज्ञानार्जन करना तथा व्यावहारिक जीवन में विशेषकर सामाजिक जीवन में निर्देशन करना है।"

इसी बात का स्पष्टीकरण पिगू ने इन शब्दों में किया है, "अर्थशास्त्र न तो बौद्धिक व्यायाम के संबंध में और न सत्य की स्थापना के संबंध में अपितु मुख्य रूप से नीतिशास्त्र की दासी और व्यवहार का सेवक होने से ही मूल्यवान है।"

कीन्स के शब्दों में, "अर्थशास्त्र का सिद्धांत नीति से तुरन्त लागू हो सकने वाले निश्चित निष्कर्षों के निकाय का निर्माण नहीं करता। यह एक सिद्धांत नहीं, अपितु ...

WWW.GRADESETTER.COM

करने की तकनीक है जो अपने स्वामी को सही निष्कर्ष निकालने में सहायता देता है।"

प्रो. रॉबिन्स ने कल्याणवादी दृष्टिकोण का विरोध करते हुए अर्थशास्त्र को केवल वास्तविक विज्ञान माना है और कहा है कि "अर्थशास्त्री का कर्तव्य खोज करना और व्याख्या करना है, समर्थन करना अथवा निन्दा करना नहीं ।" (The function of an Economist is to explore and explain and not to advocate and condemn.

Q. 9. Explain the conditions of Consumer's Equilibrium with the help of Indifference Curve.

तटस्थता वक्र की सहायता से उपभोक्ता के संतुलन की शर्त्तों का उल्लेख करें।

(Exam. 2016)

Ans. एक उपभोक्ता सन्तुलन की स्थिति में तब कहा जाता है जब वह अपनी आय से अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त करता है। तटस्थता वक्र विश्लेषण द्वारा उपभोक्ता का सन्तुलन निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित है–

(i) प्रत्येक उपभोक्ता का एक तटस्थत मानचित्र होता है जब वह वस्तु के संयोगों के लिए उसके प्राथमिकता क्रम को प्रदर्शित करता है ।

(ii) उपभोक्ता के पास व्यय हेतु निश्चित राशि होती है ।

(iii) वस्तुयें समरूप एवं विभाज्य योग्य है ।

(iv) बाजार में दोनों वस्तुयें X और Y की कीमते निश्चित और स्थिर है ।

(v) उपभोक्ता का व्यवहार विवेकपूर्ण है और वह अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील है ।

तटस्थता वक्रों द्वारा उपभोक्ता के सन्तुलन की व्याख्या : तटस्थता वक्रों द्वारा उपभोक्ता के सन्तुलन के विश्लेषण के लिए दो चीजों की आवश्यकता पड़ती है–

(1) तटस्थता मानचित्र (2) कीमत रेखा या बजट रेखा ।

उपभोक्ता का सन्तुलन : एक उपभोक्ता उस बिन्दु पर साम्य में होता है जहां निम्न तीन शर्तें पूरी होती है–

(1) कीमत रेखा तटस्थता वक्र को स्पर्श करती है : चित्र में IC_1 IC_2 IC_3 IC_4 तटस्थता मानचित्र के विभिन्न तटस्थता वक्र है। ये तटस्थता वक्र उपभोक्ता के लिए सन्तुष्टि के विभिन्न स्तरों को बताते हैं । कोई भी दायाँ वक्र अपने बायाँ वक्र की तुलना में सन्तुष्टि के ऊंचे स्तर को बताता है। उपभोक्ता अपनी दी हुई आय A, B पर स्थित किसी भी संयोग को M N P Q R चुन सकता है। इन सभी संयोगों में से P सबसे ऊंचे तटस्थता वक्र पर स्थित है। अत: P संयोग उपभोक्ता को अधिकतम सन्तुष्टि प्रदान करता है। अत: उपभोक्ता संयोग P को ही चुनेगा। P बिन्दु पर ही कीमत रेखा A B तटस्थता वक्र IC_3 को स्पर्श करती है।

(2) सन्तुलन बिन्दु पर तटस्थता वक्र और बचत रेखा का ढाल समान होना चाहिए–सन्तुलन बिन्दु पर X वस्तु की Y वस्तु के लिए प्रतिस्थापित दर X तथा Y वस्तुओं के कीमत अनुपात के बराबर होनी चाहिए। सूत्र रूप में,

तटस्थता वक्र रेखा का ढाल = कीमत रेखा A B का ढाल

अर्थात

तथा Y वस्तु की कीमत अनुपात । इसी प्रकार, X वस्तु की Y के लिए प्रतिस्थापन दर (MRS_{xy}) =

कीमत रेखा AB का ढाल = < ABO का स्पर्श = OA/OB

= X और Y दो वस्तुओं का कीमत अनुपात ।

इस प्रकार उपभोक्ता के सन्तुलन की दिशा में दो वस्तुओं की प्रतिस्थापन दर उन वस्तुओं के कीमत अनुपात के बराबर होती है ।

3. सीमान्त प्रतिस्थापन दर घटती हुई होनी चाहिए : दूसरे शब्दों में तटस्थता वक्र मूल बिन्दुओं के प्रति उन्नतोदर होने चाहिए । संक्षेप में, उपभोक्ता की सन्तुलन स्थिति के लिए निम्न तीन शर्तें पूरी होनी आवश्यक है–

(i) कीमत रेखा तटस्थता वक्र को स्पर्श करें ।

(ii) सन्तुलन बिन्दु पर तटस्थता वक्र और बजट रेखा का ढलान समान हो ।

(iii) सीमान्त प्रतिस्थापन दर घटती हुई हो ।

तटस्थता वक्र उपभोक्ता व्यवहार के विश्लेषण में असफल रहा है (Indifference Curve is Inadequate to explain Consumer's Equilibrium)–

यद्यपि मार्शल के उपयोगिता विश्लेषण की तुलना में उपभोक्ता के व्यवहार की व्याख्या करने में तटस्थता वक्र विश्लेषण अधिक श्रेष्ठ है तथापि यह भी उपभोक्ता के सन्तुलन की पूर्ण रूप से वैज्ञानिक व्याख्या नहीं कर पाया है। इसके प्रमुख कारण निम्न है–

(1) अवास्तविक मान्यताओं पर आधारित ये मान्यतायें हैं: (i) उपभोक्ता का व्यवहार विवेकपूर्ण होता है और उसका उद्देश्य अपने व्यय से अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त करना होता है। (ii) प्रत्येक उपभोक्ता उन विभिन्न संयोगों को जानता है जिनसे उसे समान सन्तोष मिलता है। (iii) वस्तु प्रमाणित है। (iv) बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता पाई जाती है। (v) उपभोक्ता के चुनाव पर बाजार में कोई संख्यात्मक नियन्त्रण नहीं है। (vi) उपभोक्ताओं को सभी वस्तुओं के बाजार मूल्य का ज्ञान है। (vii) सभी वस्तुयें विभाज्य एवं समरूप है।

(2) नयी बोतल में पुरानी शराब : यह माना जाता है कि तटस्थता वक्र विश्लेषण उपयोगिता विश्लेषण का ही परिवर्तित रूप है यथा–(i) संख्यात्मक प्रमाणी (1, 3, 3) के स्थान पर क्रम वाचक प्रणाली (प्रथम, द्वितीय, तृतीय) आदि का प्रयोग (ii) उपयोगिता के स्थान पर "अनुराग" का प्रयोग। (iii) सीमान्त उपयोगिता के स्थान पर सीमान्त प्रतिस्थापन दर का प्रयोग । (iv) सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम के स्थान पर घटती हुई सीमान्त प्रतिस्थापन दर का प्रयोग ।

(3) उपभोक्ता के अवलोकित व्यवहार की व्याख्या करने में असफल: प्रो. नाइट के अनुसार तटस्थता वक्र विश्लेषण की सहायता से उपभोक्ता के अवलोकित बाजार व्यवहार की निरपेक्ष व्याख्या नहीं की जा सकती क्योंकि उपभोक्ता व्यक्तिगत रूप से सोचता और कार्य करता है।

(4) उपभोक्ता के व्यवहार का सीमित विश्लेषण : तटस्थता वक्र विश्लेषण उपभोक्ता के व्यवहार की समुचित व्याख्या नहीं करता। यह धारण कि X वस्तु की कीमत गिर जाने पर वह X वस्तु की अधिक इकाइयाँ खरीदेगा अवास्तविक है क्योंकि उपभोक्ता के व्यवहार पर केवल कीमत के परिवर्तन का प्रभाव नहीं पड़ता अपितु उसकी आय, रूचि, और फैशन में परिवर्तन का भी प्रभाव पड़ता है ।

(5) केवल द्विवस्तु दृष्टिकोण : तटस्थता वक्र विश्लेषण की सहायता से उपभोक्ता के व्यवहार को केवल दो वस्तुओं के संबंध में ही स्पष्ट नहीं किया जा सकता है, तीन वस्तुयें होने पर हमें तीन माप चाहिए और तीन वस्तुओं से अधिक होने पर रेखागणित विफल हो जाता है।

(6) तटस्थता वक्र सकर्मक नहीं है : प्रो० आर्मस्ट्रांग के अनुसार उपभोक्ता इसलिए

उदासीन नहीं होता कि उसे संयोगों के बारे में पूर्ण ज्ञान है बल्कि वह इसलिए तटस्थ रहता है कि वह वैकल्पिक संयोगों के अन्तर को पहचानने में असमर्थ होता है। इसके अतिरिक्त एक तटस्थता वक्र पर स्थित कोई दो बिन्दु इसलिए तटस्थ बिन्दु नहीं है कि वे सामान्य सन्तुष्टि के बिन्दु है बल्कि इसलिए कि वे शून्य उपयोगिता अन्तर के बिन्दु है ।

(7) निरन्तरता की गलत मान्यता : तटस्थता वक्र ऐसे निरन्तर वक्र होते है जिन पर विभिन्न सम्भव संयोगों को दिखाया गया है। यह सम्भव है कि कीमत रेखा किसी तटस्थता वक्र को स्पर्श कर किसी ऐसे संयोग को व्यक्त करे जो कि बाजार में उपलब्ध ही न हो। चूँकि व्यवहार में निरन्तरता का अभाव पाया जाता है, अतः निरन्तरता की मान्यता काल्पनिक है।

(8) अनिश्चितता की स्थिति में उपभोक्ता के व्यवहार की व्याख्या करने में असफल : तटस्थता वक्र विश्लेषण उन दशाओं में उपभोक्ता के व्यवहार की व्याख्या करने में असफल रहता है जब व्यक्ति के सामने ऐसे चुनाव हो जिनमें जोखिम उठानी पड़े या प्रत्याशाओं की अनिश्चित हो ।

(9) दो वस्तुओं के संयोग किसी नियम पर आधारित नहीं है : तटस्थता वक्र विश्लेषण में जो संयोग बनाये जाते हैं, वे किसी नियम पर आधारित न होकर मनमाने ढंग से बनाये जाते हें अतः ये अवास्तविक व अवैज्ञानिक होते हैं ।

उपर्युक्त कारणों से तटस्थता वक्र विश्लेषण विधि व्यवहारिक जगत में उपभोक्ता के सन्तुलन की व्याख्या करने में असमर्थ हैं ।

Q. 10. Discuss the Law of Variable proportions.
परिवर्तनशील अनुपात के नियम की विवेचना करें ।

(Exam. 2004, 2007, 2009, 2012, 2016)

अथवा, परिवर्तनशील अनुपातों के नियम की व्याख्या कीजिए।
(Explain the law of varioable proportions.)

Or, परितर्वतशील अनुपातों के नियम की व्याख्या कीजिए। यह स्पष्ट कीजिए कि उत्पादन के अन्य नियम भी अनुपातों की परिवर्तनशीलता से उत्पन्न प्रवृत्तियों की ही व्याख्या करता है। (Explain the law of variable proportions and show how the othr laws of production merely describe the tendencies due to varying proportionality.)

Ans. उत्पादन के क्षेत्र में उत्पत्ति के नियम का अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। **प्रो० मार्शल** (Prof. Marshall) ने क्रमागत उत्पत्ति ह्रास नियम (Law of Diminishing Returns) की क्रियाशीलता को कृषि के क्षेत्र तक ही सीमित रखा । उनके अनुसार, "उत्पादन के उस क्षेत्र में जहाँ प्रकृति की प्रधानता रहती है, क्रमागत उत्पत्ति ह्रास नियम क्रियाशील होता है तथा जहाँ मानव की प्रधानता रहती है, वहाँ क्रमागत उत्पत्ति वृद्धि नियम क्रियाशील होती है।" (While the part which nsture plays in production shows a tendency to diminishing returns, the part which man plays shows a tendency to increasing returne.) किन्तु आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने इस नियम की व्यापक क्रियाशीलता पर बल दिया है। इनके अनुसार, उत्पादन का कृषि क्षेत्र या उद्योग क्षेत्र, सभी क्षेत्रों में यह नियम समान रूप से लागू होता है। आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार उत्पादन के किसी भी क्षेत्र में अन्य साधनों को स्थिर रखकर यदि एक साधन की मात्रा में वृद्धि की जाय तो एक सीमा के बाद सीमात उत्पादन घटने लगता है तथा उत्पत्ति ह्रास नियम लागू होने लगता है। ...

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

नियम स्थिर एवं परिवर्तशील साधनों (fixed and variable factors)के अनुपात में परिवर्तन के फलस्वरूप लागू होता है। इस नियम की व्यापक क्रियाशीलता के फलस्वरूप ही आधुनिक अर्थशास्त्रियों **बेनहम (Benhm),स्टिग्लर (Stigler), श्रीमती जॉन रॉबिन्सन (Mrs. Joan Robinson),सैम्यूलसन (Samuelson)** आदि ने इसे परिवर्तनशील अनुपातों का नियम (Law of variable proportions)कहा है।

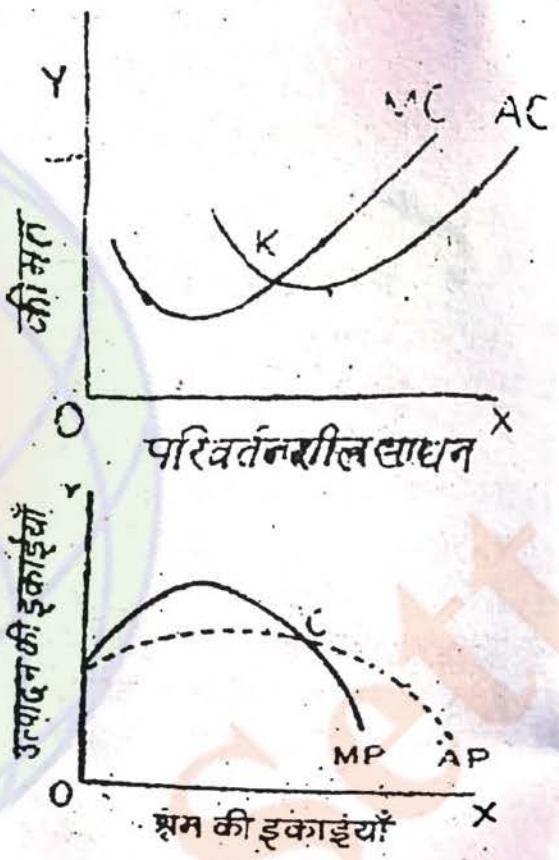

परिवर्तनशील अनुपातों की नियम (Law of variable proportion) एक टेक्नोलॉजिकल सिद्धान्त है। आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार, किसी एक साधन को स्थिर रखा जाय तथा अन्य साधनों की मात्रा में वृद्धि की जाय अथवा एक साधन को परिवर्तशील रखा जाय तथा अन्ध साधनों को स्थिर रखा जाय तो उत्पत्ति ह्रास नियम लागू होता है। दूसरे शब्दों में, यदि अस्थिर साधनों के साथ किसी स्थिर साधनों को मिलाया जाय तो बढ़े साधनों से प्राप्त उपज क्रमशः घटेगी। (If variable factors are combined with a fixed factor the returns combined will diminish.) प्रारम्भ में उत्पादन बढ़ सकता है, साधनों के आदर्श संयोग के बाद उत्पादन घटने लगता है। इस नियम के अन्तर्गत हम साधनों के अनुपातों में परिवर्तन का उत्पादन पर प्रभाव का अध्ययन करते हैं।

प्रो० स्टिग्लर (Prof. Stigler) के अनुसार, "उत्पादन सेवाओं के अन्य आदानों (inputs) को स्थिर रखते हुए, जैसे-जैसे किसी एक साधन की मात्रा समान दर से बढ़ाई जाय, एक निश्चित बिन्दु के बाद उत्पादन में फलित वृद्धि दर घटती जायेगी, अर्थात् सीमान्त उपज में ह्रास होगा। (If the quantity of one prodcutive service is increased by equal increments, the quantities of other productive services remaining fixed the resulting increment of product will decrease after a certin points."

—Prof. G. J. Stigler, 'The Theory of price.')

प्रो० बोल्डिंग (K. E. Boulding) ने अपनी पुस्तक 'Economic Analysis में लिखा है, जैसे-जैसे उत्पादन के अन्य साधनों की निश्चित मात्रा के साथ हम किसी एक साधन में मात्रा में वृद्धि करते हैं, परिवर्तनशील साधनों की सीमात भौतिक उत्पादकरता अन्ततः अवश्य ही घटती है।" (As we increase the quantity of anyone input which is combined with a fixed quantity of the other outputs, the marginal physical productivity of the variable input must eventually deciline.) प्रो० बोल्डिंग ने Law of Diminishing Return' को 'Law of Eventually. Diminishing Marginal physical

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

productivity.' कहा है। श्रीमति जॉन रॉबिन्सन के अनुसार, "क्रमागत उत्पत्ति ह्रास नियम इस बात की जानकारी देता है कि यदि उत्पत्ति के किसी एक साधन को स्थिर रखा जाय तथा अन्य साधनों की मात्रा में उत्तरोत्तर वृद्धि की जाय तो एक बिन्दु ऐसा आता है, जहाँ से उत्पादन में घटती हुई दर से वृद्धि होती है।" (The Law of Diminishing Returns, as it is usually formulated states that with a fixed amount of anyone factor of production successive increases in the amount of other factors will after a point yeild a diminishing increment of out." —Mrs. Joan Robinson, 'The Economics of Imperfect Competition.)

प्रो० सैमुलसन (Prof. P.A. Samuelson) ने अपनी पुस्तक 'Economics' में लिखा है, "यदि तकनीक की स्थिति दी हुई हो तो अन्य स्थिर साधनों के साथ कुछ साधनों में वृद्धि उत्पादन में वृद्धि लायेगी, लेकिन एक बिन्दु के बाद अतिरिक्त साधनों के उसी योग के फलस्वरूप प्राप्त अतिरिक्त उत्पादन कम होता चला जायेगा।" (An increase in some outputs relative to other fixed inputs will, in a given state of technology, cause output to increase, but after a point the extia output resulting from the same addition of extra inputs will become less and less.")

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि बिन्दु के बाद जिस अनुपात में साधनों को बढ़ाया जाता है, उत्पादन उस अनुपात में नहीं बढ़ता है, बल्कि साधनों के अनुपात में उत्पादन को बढ़ने की दर घटती हुई होती है ।

यह सिद्धान्त निम्नलिखित मान्यताओं (Assumptions) पर आधारित है–

1. यह नियम तभी लागू होगा जब उत्पादन के कुछ साधनों को स्थिर रखकर अन्य साधनों में परिवर्तन किया जाय। 2. यह सिद्धान्त इस मान्यता पर आधारित है कि जिस अनुपात में उत्पादन के साधनों का संयोग किया जाता है, वह अनुपात भी परिवर्तशील है। 3. तकनीक (Technology) में कोई परिवर्तन नहीं होनी चाहिए।

आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने इस नियम के अन्तर्गत कुल उत्पादन (Total Product) औसत उत्पादन (Average product) तथा सीमान्त उत्पादन (Marginal product) की धारणा पर विशेष ध्यान दिया। सामान्यतया एक साधन को स्थिर रखने के बाद जब अन्य साधनों को उत्तरोत्तर रूप में बढ़ाया जाता है तो उत्पादन की जो मात्रा प्राप्त होती है, उसे कुल उत्पादन (TP) कहते हैं। कुल उत्पादन में साधनों की संख्या से भाग देने पर जो भागफल प्राप्त होता है, उसे औसत उत्पादन (AP) कहते हैं तथा कुल साधनों की मात्रा में साधन की एक इकाई में परिवर्तन करने से कुल उत्पादन में जो परिवर्तन होता है, उसे सीमान्त उत्पादन (MP) कहते हैं। दूसरे शब्दों में, कुल साधनों की मात्रा में एक इकाई कम या वृद्धि करने से कुल उत्पादन में जो कमी या वृद्धि होती है, उसे सीमान्त उत्पादन कहते हैं। यदि उत्पादन का कोई एक साधन स्थिर रहे तथा अन्य साधनों की मात्रा में उत्तरोत्तर वृद्धि की जाय तो एक सीमा के बाद उत्पादन में घटती हुई दर से वृद्धि होती है। यह नियम बताता है कि एक बिन्दु के बाद उत्पादन इसलिए नहीं घटती है कि उत्पादन के साधनों की क्रमशः कम कुशल इकाइयों (less and less efficient units) लगायी जाती है, बल्कि उत्पादन इसलिए घटता है कि साधन की इकाइयों को कम कुशलता के साथ या कम प्रभावपूर्ण ढंग से लगाया जाता है

WWW.GRADESETTER.COM

श्रम एवं पूँजी की इकाई	कुल उत्पादन (Total product)	औसत उत्पादन (Average product)	सीमान्त उत्पादन (Marginal product)
1	10	10.0	10
2	25	12.5	15
3	45	15.5	20
4	80	20.0	35
5	110	22.0	30
6	130	21.7	20
7	145	20.7	15
8	155	19.3	10
9	155	17.2	0
10	150	15.0	–5
11	140	12.7	–10
12	125	10.4	–15

तालिका से स्पष्ट है कि जैसे-जैसे परिवर्तशील साधन की अधिक इकाइयाँ लगायी जाती है, वैसे-वैसे प्रारम्भ में औसत एवं सीमान्त उत्पादन (Average and Marginal Product) दोनों बढ़ता है। परिवर्तनशील साधनों की चौथी इकाई तक सीमान्त उत्पादन (MP) बढ़ता है तथा पाँचवीं इकाई से घटने लगता है, नवम् इकाई पर यह शून्य (Zero) तथा उसके बाद ऋणात्मक (Negatives)हो जाता है।

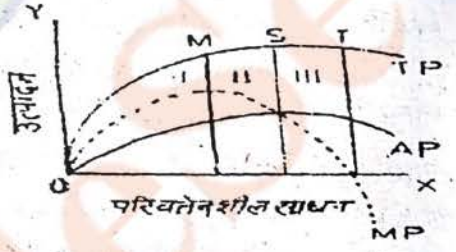

इसी प्रकार परिवर्तनशील साधनों की पाँचवीं इकाई तक औसत उत्पादन (AP) बढ़ता है तथा छठी इकाई से घटने लगता है। इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि परिवर्तनशील साधान की इकाइयों में क्रमशः वृद्धि करने पर एक बिन्दु के बाद औसत एवं सीमान्त उत्पादन दोनों घटने लगता है, क्योंकि उद्योग एवं फर्म पर साधनों की भीड़ हो जाती है तथा साधनों का आदर्श संयोग नहीं रह पाता है। औसत (AP) तथा सीमान्त उत्पादन के सम्बन्ध को एक रेखा चित्र द्वारा दिखाया जा सकता है-

चित्र से स्पष्ट हो जाता है कि प्रारम्भ में सीमान्त उत्पादन (MP) औसत उत्पादन (AP) की अपेक्षा तेजी से बढ़ता है। पुनः बाद में सीमान्त उत्पादन औसत उत्पादन की अपेक्षा तेजी से घटने लगता है। C बिन्दु पर औसत उत्पादन तथा सीमान्त उत्पादन दोनों बराबर रहते है। यह बिन्दु अधिकतम औसत उत्पादन बिन्दु होता है तथा इस बिन्दु के बाद औसत उत्पादन तथा सीमान्त उत्पादन दोनों गिरने लगता है।

परिवर्तनशील अनुपात के नियम को चित्र स्पष्ट किया जा सकता है-

यदि उत्पादन के अन्य साधनों को स्थिर रखकर किसी एक साधन में परिवर्तन किया जाय तो साधन उत्पादन सम्बन्ध (Input-out-put relationship)को तीन स्तरों (Three stages) में दिखाया जा सकता है-

होता है। उद्योग में यदि कोई साधन स्थिर रहे और अन्य साधनों को बढ़ाया जाय तो उत्पादन उसी अनुपात में नहीं बढ़ता है, जिस अनुपात में साधनों की मात्रा में वृद्धि की जाती है। प्रारम्भ में संभव है कि कुल उत्पादन बढ़ते हुए दर से बढ़े, लेनिक अन्ततः यह घटने लगती है। वाँग (Wangh) के अनुसार, "If we add more of the other factors of production to a fixed amount of land, we reach on the points sooner or later after which the marginal, average and total output diminish," इस प्रकार ऐसा कहा जा सकता है कि परिवर्तनशील अनुपातों का नियम वास्तव में पुराने उत्पत्ति ह्रास नियम का पुनर्निर्मित (reformulated) रूप है।

Q. 11. Analyse the conditions of Firm's equilibrium under Perfect Competition.

पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत फर्म के संतुलन की शर्त्तों का विश्लेषण करें ।

(Exam. 2004, 2006, 2008, 2009, 2012, 2016)

अथवा, पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म का संतुलन किस प्रकार होता है ?

(Explain the equilibrium of the firm under Perfect competition.)

Or, पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत फर्म की साम्यावस्था की प्राप्ति की शर्त्तों की विवेचना करें । (Discuss the equilibrium conditions of a firm under perfect competition.)

Or , फर्म के संतुलन से आप क्या समझते हैं ? पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत किसी फर्म के संतुलन की शर्त्तों की विवेचना कीजिए । What do you mean equilibrium of a firm ? (Discuss the conditions of equilibrium of a firm under perfect competition.)

Ans. आर्थिक सिद्धान्तों के विश्लेषण में फर्म के धारणा का बहुत अधिक महत्त्व है। इसके द्वारा यह पता लग सकता है कि अर्थव्यवस्था का उद्देश्य एवं लक्ष्य क्या है तथा इसकी प्राप्ति किस प्रकार किया जा सकता है । इससे अर्थव्यवस्था का अनुकूलतम विन्दु (optimum point) से विचलन के कारण का पता लगता है । मूल्य सिद्धान्त एक व्यष्टि सिद्धान्त है, जिसका विश्लेषण माँग एवं पूर्ति की शक्तियों की क्रियाशीलता के आधार पर किया जाता है। माँग का आचरण उपभोक्ता के व्यवहार से तथा आपूर्ति का आचरण फर्म के व्यवहार से निर्धारित होता है ।

फर्म के संतुलन का अर्थ फर्म की उस स्थिति से है जिसमें उसे अधिकतम संभव लाभ (maximum possible profit) प्राप्त होता है। संतुलन का अर्थ समतोल की स्थिति (position of balance) या विश्राम की स्थिति (position of rest) या अपरिवर्तन की स्थिति (the stage of unchange) है । अर्थशास्त्र में एक फर्म का संतुलन की स्थिति में तब कही जाती है जब उसमें अपनी वस्तु की उत्पादन मात्रा को घटाने या बढ़ाने की कोई उत्प्रेरण नहीं होती हो । (A firm is in equilibrium when it has no incentive either to expand or to contract its output.) संतुलन की स्थिति में फर्म अपने उत्पादन के संगठन, उत्पादन की मात्रा तथा उत्पादन व्यय में कोई परिवर्तन नहीं करता तथा उसे अधिकतम मौद्रिक लाभ प्राप्त होता है। (A firm is said to be in equilibrium when it has no motive to change its organisation or its cost of production and this is possible only when it is earning maximum net money profit.) **Stonier** and **Hague** के अनुसार, "..... A firm will be in equilibrium when it is earning maximum money profit. But the money profits of a firm always be

WWW.GRADESETTER.COM

revenue equals to its marginal cost." इस प्रकार फर्म का संतुलन वह स्थिति है जिसके अन्तर्गत उत्पादन की मात्रा में कोई परिवर्तन की प्रवृत्ति नहीं हो अर्थात् संतुलन की अवस्था में फर्म उत्पादन की मात्रा निश्चित करेगी, जिस पर उसे अधिकतम लाभ अथवा अधिकतम शुद्ध आय (Maximum net revenue) प्राप्त होता है ।

फर्म के संतुलन की मान्यताएँ (Assumptions)- फर्म के संतुलन के लिए निम्नलिखित मान्यताओं का होना आवश्यक है - 1.फर्म का उद्देश्य अधिकतम मौद्रिक लाभ प्राप्त करना है। 2. फर्म को अधिकतम लाभ प्राप्त करने की तकनीक ज्ञात है । 3. फर्म केवल एक ही वस्तु का उत्पादन करता है । 4. उत्पादन के प्रत्येक साधनों में एकरूपता है ।

फर्म का साम्य (Equilibrium of firm) - एक फर्म अधिकतम लाभ की प्राप्ति या संतुलन की प्राप्ति दो प्रकार से कर सकता है-

1. कुल आय तथा कुल लागत रेखाओं द्वारा (Total revenue and total cost curve analysis.)

2. सीमान्त तथा औसत रेखाओं की रीति (Marginal and Average curve approach.)

1. कुल आय एवं कुल लागत रेखा विधि (Total Revenue (TR) and Total Cost (TC) Curves Approach)- एक फर्म को अधिकतम लाभ उस बिन्दु पर होगा जहाँ कुल व्यय में अधिकतम अन्तर होगा। अर्थात् TR–TC– Profit. इसे रेखा चित्र द्वारा स्पष्ट किया जाता है।

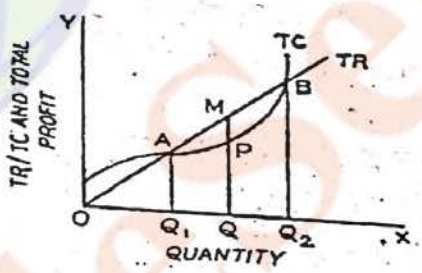

चित्र में OX पर वस्तु की मात्रा तथा OY रेखा पर कुल आय, कुल लागत तथा लाभ को दिखाया गया है। TR रेखा कुल आय को तथा TC रेखा कुल लागत को व्यक्त करता है । Q_1 तथा Q_2 के बीच उत्पादन के किसी भी स्तर पर फर्म को धनात्मक लाभ (positive profit) प्राप्त होगा। लाभ की मात्रा Q पर TR तथा TC के बीच खड़ी दूरी MP सबसे अधिक है जो कि अधिकतम लाभ को बताती है । अतः फर्म उत्पादन की मात्रा Q पर साम्य की स्थिति में होगी, क्योंकि उत्पादन के इस स्तर पर उसको अधिकतम लाभ प्राप्त होता है ।

A तथा B बिन्दुओं को Break even points कहा जाता है, क्योंकि इन बिन्दुओं पर TR तथा TC बराबर (break even) होते हैं और फर्म को केवल सामान्य लाभ प्राप्त होता है। सीमान्त तथा औसत रेखाओं की रीति अधिक अच्छी है ।

2. सीमान्त तथा औसत रेखा विधि–फर्म की संतुलनावस्था को फर्म की सीमान्त एवं औसत रेखाओं द्वारा व्यक्त किया जा सकता है । एक फर्म साम्य की स्थिति में तब होता है जब उसके कुल उत्पादन में कोई परिवर्तन नहीं हो । ऐसा उसी समय होगा जब फर्म को अधिकतम लाभ की प्राप्ति होगी । अधिकतम लाभ की प्राप्ति के लिए सीमानत आय (MR) तथा सीमान्त लागत (MC) को बराबर होना चाहिए । इस प्रकार फर्म के संतुलन के लिए सीमान्त आय तथा सीमान्त व्यय का बराबर होना आवश्यक है अर्थात् MR = MC । यदि MR, MC से अधिक रहता है तो फर्म को अधिक लाभ प्राप्त होता है तथा वह अधिक उत्पादन करना चाहता है । यदि MR, MC से कम रहता है तो फर्म को हानि होती है तथा

WWW.GRADESETTER.COM

वह कम उत्पादन करता है । (The main condition of a firm's equilibrium is that the firm should stop at the point of equality of marginal cost and marginal revenue.) अत: फर्म के संतुलन के लिए दो शर्तों का होना आवश्यक हैं–

(i) सीमान्त आय (MR) तथा सीमान्त लागत (MC) बराबर है ।

(ii) सीमान्त लागत की रेखा सीमान्त आय की रेखा को नीचे से काटे ।

फर्म को अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि सीमान्त आय तथा सीमान्त व्यय दोनों बराबर हो । यह रेखा चित्र द्वारा स्पष्ट है कि पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में मूल्य की रेखा पड़ी (Horizontal) होती है, क्योंकि मूल्य का निर्धारण सम्पूर्ण उद्योग द्वारा होता है तथा फर्म इसे स्वीकार करती है। MC सीमान्त लागत की रेखा है ।

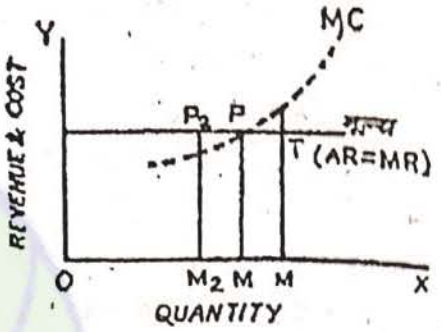

P बिन्दु पर सीमान्त आय तथा सीमान्त व्यय दोनों बराबर है । अत: फर्म OM मात्रा का उत्पादन करेगी तथा इस बिन्दु पर अधिकतम लाभ की प्राप्ति होगी। यदि इससे अधिक उत्पादन अर्थात् OM_1 उत्पादन किया जाय तो उत्पादक को हानि होगी, क्योंकि यहाँ TM_1 सीमान्त आय है तथा P_1M_1 सीमान्त व्यय है । अत: उत्पादन को PTP_1 के बराबर हानि होगी । पुन: यदि फर्म OM से कम उत्पादन करें अर्थात् OM_2 मात्रा में उत्पादन करे तो सीमान्त आय P_2M_2 तथा सीमान्त व्यय T_1M_2 है । यहाँ उसे P_2T_1P के बराबर अधिक लाभ प्राप्त होता है, जो उसे अधिक उत्पादन करने के लिए प्रेरित करता है । अत: वह OM मात्रा तक ही उत्पादन कर अधिकतम लाभ प्राप्त कर सकता है ।

फर्म के संतुलन के लिए आवश्यक है कि सीमान्त लागत (MC) की रेखा सीमान्त आय (MR) की रेखा को नीचे से काटे । (The marginal cost curve should cut the marginal revenue curve from belo.) पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में किसी फर्म की सीमात आय (MR) रेखा पड़ी होती है। सीमान्त व्यय (MC) रेखा भी पड़ी हो सकती है, किन्तु ऐसी स्थिति में अधिकतम लाभ का बिन्दु निर्धारित नहीं हो सकता है । अत: पूर्ण प्रतियोगिता में कोई भी फर्म इस प्रकार की पड़ी सीमान्त व्यय रेखा नहीं रखना चाहेगी । इस सम्बन्ध में दो अन्य सम्भावनाएँ प्रतीत होती हैं–(i) सीमान्त व्यय रेखा नीचे या ऊपर की ओर उठी हो सकती है अथवा (ii) कुछ दूर तक नीचे की ओर जाने के बाद पुन: ऊपर की ओर उठी हो सकती है । इसे चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

चित्र में फर्म B बिन्दु पर संतुलन की स्थिति में है, क्योंकि यहाँ MR तथा MC बराबर है तथा MC की रेखा MR को नीचे से काट रही है तथा उत्पादन Q मात्रा में होगा । इस बिन्दु पर फर्म को अधिकतम लाभ प्राप्त होगा । पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत फर्म की माँग रेखा या औसत आय रेखा पड़ी होती है, क्योंकि प्रत्येक फर्म को मूल्य दिया

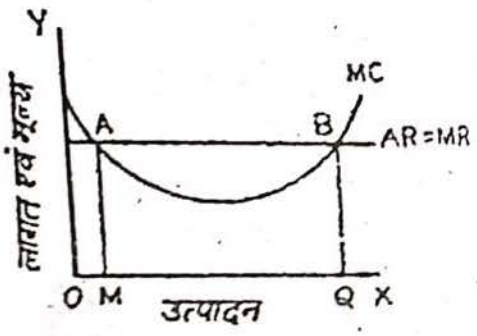

WWW.GRADESETTER.COM

हुआ मान लेता है। मूल्य का निर्धारण उद्योग की कुल माँग तथा कुल पूर्ति के आधार पर होता है अर्थात् फर्म के लिए उसकी वस्तु की माँग की रेखा पूर्ण तथा लोचदार होती है। प्रत्येक फर्म मूल्य ग्रहण (Price taker) करने वाला होता है, मूल्य का निर्धारक (Price taker) नहीं है।

पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत समय की दृष्टि से फर्म के संतुलन को दो भागों में बाँटा जा सकता है– (i) अल्पकालीन संतुलन एवं (ii) दीर्घकालीन संतुलन।

1. अल्पकालीन फर्म का संतुलन (Equilibrium of firm in the short period)— अल्पकाल का अर्थ उस स्थित से है जिसके अन्तर्गत फर्म अपने उत्पादन या पूर्ति में माँग के अनुरूप परिवर्तन नहीं कर सकता है। इसके अन्तर्गत समय की अवधि बहुत कम होती है। अतः अल्पकाल में फर्म लाभ प्राप्त कर सकता है, शून्य लाभ या हानि की स्थिति में भी हो सकती है।

अल्पकाल के फर्म (profit) स्थिति प्राप्त कर सकता है। इसे रेखा चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

वस्तु का मूल्य उस बिन्दु पर निर्धारित होता है। जहाँ MR = MC होगा। चित्र में P बिन्दु पर MC रेखा MR को नीचे से काटती है। P बिन्दु पर वस्तु का मूल्य निर्धारण करने से फर्म को अधिकतम लाभ SRPT के बराबर प्राप्त होगा तथा उत्पादन OQ बिन्दु तक होगा।

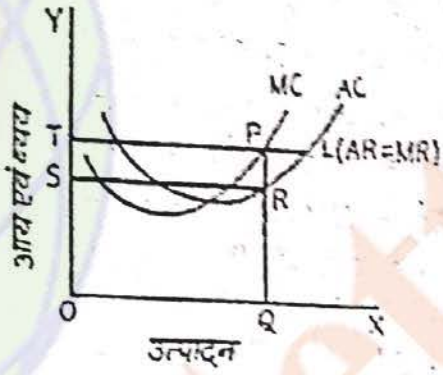

अल्पकाल में फर्म को लाभ शून्य (Zero) भी कहते हैं। इसे रेखा चित्र द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं–

चित्र में फर्म P बिन्दु पर संतुलन की स्थिति में है तथा सीमान्त लागत के बराबर (MR = MC) है। MC रेखा MR को नीचे से भी काटती है। AR तथा AC रेखा की तुलना करने से फर्म को लाभ हो रहा है या नहीं यह स्पष्ट हो जाता है। चित्र में औसत आय (AR) रेखा और लागत (AC) को निम्नतम बिन्दु पर काटती है अर्थात् AR = AC है। यहाँ फर्म को अतिरिक्त लाभ की प्राप्ति नहीं होती है, सिर्फ सामान्य लाभ प्राप्त होता है।

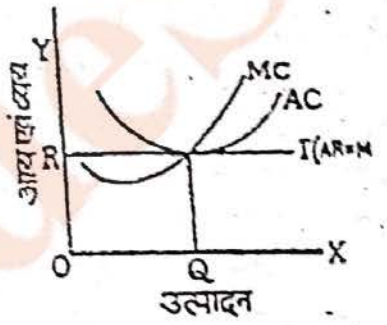

अल्पकाल में फर्म को हानि (loss) भी हो सकता है। फर्म को यह आशा रहती है कि दीर्घकाल में उसे लाभ की प्राप्ति होगी। इसे रेखा चित्र में फर्म के लिए कीमत TC है। फर्म P बिन्दु पर संतुलन की स्थिति में होगी, क्योंकि सीमान्त आय तथा सीमान्त लागत बराबर (MR = M) है तथा सीमान्त लागत (MC) की रेखा सीमान्त आय (MR)

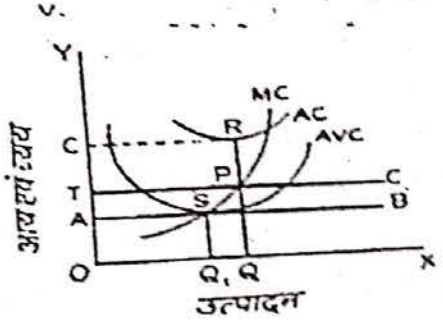

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

की रेखा को नीचे से काटती है । फर्म को लाभ या हानि होगी इसके लिए AR तथा AC की तुलना करते हैं । चित्र में औसत लागत (AC) ऊपर है । अत: फर्म को TPRC के बराबर हानि होगी। फर्म इस हानि को तब तक वहन करेगा जब तक कि औसत परिवर्तनशील लागत (AVC) प्राप्त होता रहेगा । S बिन्दु से कम कीमत होने पर फर्म उत्पादन बन्द कर देगा ।

2. दीर्घकालीन फर्म का संतुलन (Equilibrium of the firm in the long run)— दीर्घकाल समय की वह अवधि है जिसमें फर्म के अपरिवर्तनशील एवं स्थिर (Variable and fixed) दोनों प्रकार के साधनों में परिवर्तन किया जा सकता है । दीर्घकाल में फर्म उद्योग में प्रवेश कर सकता है तथा बहिर्गमन भी हो सकता है। उत्पादन के सभी साधन गतिशील होते हैं । दीर्घकाल में फर्म का संतुलन उस बिन्दु पर होगा जहाँ औसत आय (AR), सीमान्त आय (MR), औसत लागत (AC) तथा सीमान्त लागत (MC) बराबर होगा । दीर्घकाल के अन्तर्गत समय काफी रहता है। पूर्ति में माँग के अनुरूप परिवर्तन संभव रहता है । दीर्घकाल में फर्म न लाभ प्राप्त कर सकता है न हानि बल्कि सामान्य लाभ (Noramal profit) की प्राप्ति करेगा, क्योंकि अगर औसत आय (AR), औसत लागत (AC) से अधिक रहता है तो अतिरिक्त लाभ की प्राप्ति होगी, जिसके फलस्वरूप उद्योग में नये-नये फर्मों का प्रवेश होगा तथा उत्पादन एवं पूर्ति में वृद्धि के अतिरिक्त लाभ समाप्त हो जाएगा । ठीक इसके विपरीत औसत आय (AR) औसत लागत (AC) से कम रहने पर फर्म को हानि होगी । उद्योग से फर्म बाहर निकलेगा । पुन: उत्पादन एवं पूर्ति में कमी होगी तथा औसत आय (AR) बढ़कर औसत लागत (AC) के बराबर हो जायेगा । अत: दीर्घकाल में फर्म सतुलन की स्थिति में औसत लागत, औसल आय, सीमान्त लागत तथा सीमान्त आय तथा मूल्य सभी एक-दूसरे के बराबर हैं । दूसरे शब्दों में, AC = AR = MC = MR = Price.

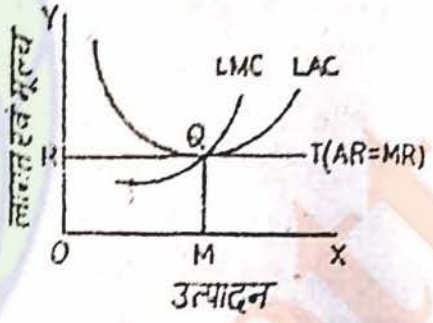

इस रेखा चित्र में AC दीर्घकालीन औसत लागत रेखा तथा MC दीर्घकालीन सीमान्त रेखा है । AR रेखा AC रेखा को न्यूनतम बिन्दु Q पर स्पर्श करती है । Q बिन्दु पर MC = MR = AC = AR है, तथा यह संतुलन का बिन्दु है । इस बिन्दु पर उत्पादन OM मात्रा तथा मूल्य OR या MQ है । इस बिन्दु पर फर्म को मात्र सामान्य लाभ (Normal profit) की प्राप्ति होती है ।

दीर्घकाल में पूर्ण संतुलन की स्थिति में फर्म आदेश मात्रा में वस्तु का उत्पादन करता है तथा औसत लागत न्यूनतम होती है। अत: कोई फर्म तब संतुलन की स्थिति में होता है जब वह न्यूनतम लागत पर उत्पादन कर रहा हो । (A firm is in equilibrium when it is producing at the lowest cost.) दूसरे शब्दों में फर्म का संतुलन उस बिन्दु पर होता है, जहाँ न उसे लाभ होता है न हानि । "A firm is equilibrium when is making no profit on loss."

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

Q. 12. Examine Knight's Theory of Profit.
नाइट के लाभ के सिद्धान्त का विश्लेषण करें ।

(Exam. 2006, 2011, 2014, 2016)

अथवा, लाभ के अनिश्चितता वहन सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए ।
Explain the Uncertainity-Bearing theory of Profit.
Or, नाइट के लाभ-सिद्धान्त की आलोचनात्मक समीक्षा कीजिए ।
(Examine critically the Knight's theory of profit.)
Or. नाइट के अनिश्चितता-वहन लाभ सिद्धान्त की समीक्षा कीजिए। (Examine critically Knight's uncertiany-bearing theory of profit.) Or, नाइट के लाभ सिद्धान्त की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए। (Examine critically knight's theory of profit.)

Or, "लाभ अनिश्चितता-वहन का पुरस्कार है।" इस कथन की व्याख्या कीजिए। (Profit is a payment fet uncertainty bearing." Discuss this statement.)

Ans. लाभ के अनिश्चितता के सिद्धान्त का प्रतिपादन **प्रो० नाइट** (Prof. F. H. Knight) ने अपनी पुस्तक, "Risk Uncertainty and Profit" में किया तथा इसका पूर्ण विवेचना किया । **प्रो० नाइट** के अनुसार, "लाभ अनिश्चितता वहन करने का पुरस्कार है।" नाइट के पूर्व एफ०वी० हॉले और ए० सी० पीगू ने बताया कि उद्यमकर्त्ता इसलिए लाभ प्राप्त करते हैं कि उन्हें वस्तुओं का उत्पादन करने में निहित जोखिमों को वहन करना पड़ता है, परन्तु नाइट ने अनिश्चितता पर आधारित लाभ से सिद्धान्त को अधिक विकसित किया। उनके अनुसार, गत्यात्मक परिवर्तन केवल तभी लाभ को उत्पन्न करते हैं, जब वे परिवर्तन और उनके परिणाम पूर्व अनुमान के आयोग्य होते हैं। केवल वे परिवर्तन जिनके घटने का पूर्व ज्ञान नहीं हो सकता है, लाभ उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार, लाभ अनिश्चिताएँ उठाने का पुरस्कार है तथा लाभ की मात्रा अनिश्चितता उठाने की मात्रा पर निर्भर करती है।

प्रो० नाइट ने जोखिम तथा अनिश्चितता में अन्तर स्पष्ट करते हुए बताया है कि सभी प्रकार की जोखिम अनिश्चिताएँ उत्पन्न करती हैं। नाइट के अनुसार जोखिम दो प्रकार की होती हैं–(i) ज्ञात जोखिम तथा (ii) अज्ञात जोखिम । जो जोखिम ज्ञात होते हैं, उनका बीमा आसानी से काराया जा सकता है तथा वे लाभ उत्पन्न नहीं करते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं–(i) आग, बाढ़, भूकम्प तथा अन्य दैवी विपत्तियों से सम्पत्ति की हानि या खतरा। (ii) चोरी, डकैती, लूट आदि से सम्पत्ति की हानि । इस प्रकार की जोखिमें अनिश्चितता उत्पन्न नहीं करती हैं, क्योंकि साहसी इनका बीमा कराकर तथा एक निश्चित किश्त देकर मुक्त हो जाते हैं। इसके लिए व्यवसायी को कोई लाभ नहीं मिलता।

दूसरे प्रकार के जोखिम वे हैं जो अज्ञात (Unforseen) होते हैं तथा इनका बीमा नहीं कराया जा सकता है। इनकी सांख्यिकीय गणना नहीं की जा सकती है। ऐसी जोखिम अनिश्चितता उत्पन्न करती हैं। लाभ साहसी द्वारा इस अनिश्चितता वहन का पुरस्कार है। अज्ञानता जोखिम निम्न हैं–(i) उद्योग में नए फर्मों (Firms) के प्रवेश तथा नवीन प्रतियोगी

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

वस्तुओं के विकास का खतरा, (ii) तकनीकी विकास के फलस्वरूप उत्पादन में लगाई गई मशीन का बेकार हो जाने का खतरा, (iii) माँग बंट जाने, स्थानापन वस्तुओं का भय, (iv) सरकार द्वारा कर नीति या अन्य आर्थिक नीतियों से उत्पन्न खतरा, (v) व्यापार-चक्र से उत्पन्न खतरा।

इस प्रकार, अज्ञात जोखिम अनिश्चितताओं को जन्म देती है । बिना अनिश्चितताओं के वहन किए उत्पादन का कार्य सम्भव नहीं है । अत: साहसी का प्रमुख कार्य अनिश्चितताओं का वहन करना है तथा इसी का प्रतिफल है । दूसरे शब्दों में लाभ अनिश्चितताओं के वहन का पुरस्कार है । यह अनिश्चितता का वहन कई बातों पर निर्भर करता है-(i) साहसी की मनोवृत्ति, (ii) साहसी की आर्थिक स्थिति, (iii) वह अपने कुल स्थानों का कौन-सा भाग जोखिम में डाल रहा है आदि । लाभ की मात्रा भी इस पर निर्भर करती है ।

Prof. A. K. Dass Gupta ने ठीक ही लिखा है-''अनिश्चितता अर्थव्यवस्था का स्थायी लक्षण है । यह एक मानवीय अज्ञान है कि इससे भविष्य के विषय में पूर्ण जानकारी नहीं हो सकती । व्यापारियों द्वारा अनुभव तथा सांख्यिकीय जानकारी से पर्याप्त लग सकता है, लेकिन जहाँ भौतिक तथा मानवीय प्रकृति की गतिविधि का सम्बन्ध है, भविष्य लगभग सदा अनिश्चित होगा ।'' पुन: आगे लिखते हैं, जब तक उद्यमी बाजार की अवस्था के विषय में अपूर्ण ज्ञान से काम-काज आरम्भ करते हैं, ''जब तक भाड़े पर लिए गए साधनों का प्रत्याशित सीमान्त उत्पादन वास्तविक उत्पादन से भिन्न होता है, तब तक लाभ रूपी आधिक्य उत्पन्न होता रहेगा ।''

इस प्रकार उद्यमकर्त्ता अनिश्चितताओं के अन्तर्गत वस्तुओं का उत्पादन करते हैं । उन्हें वस्तुओं की माँग तथा अन्य तत्व जो कीमत एवं लागत को प्रभावित करते हैं, उनका पूर्व अनुमान करना होता है। जिन उद्यमकर्त्ता को भविष्य के बारे में ठीक अनुमान होता है, उन्हें धनात्मक लाभ प्राप्त होता है, अन्यथा हानि उठानी पड़ती है। **प्रो० नाइट** के अनुसार, ''बीमा योग्य जोखिम से भिन्न यह अनिश्चितता ही है, जो उद्यमकर्त्ता संगठनात्मक कार्य उत्पन्न करती है और इससे ही बदनाम 'लाभ' आय की प्राप्ति होती है ।'' (It is uncertainty distinguished from insurable risk that effectively gives rise to the enterpreneurial form of organisation and to the much condemned 'profit' as an income profit.)

आलोचनाएँ-प्रो० नाइट के लाभ के सिद्धान्त की निम्न आलोचनाएँ हैं-

1. अनिश्चितता वहन लाभ प्राप्त कराने का एक तत्व हो सकता है, किन्तु एकमात्र तत्व नहीं हो सकता है। पूँजी की कमी, ज्ञान की कमी आदि के घर्षण की उपस्थिति ही साहसी की पूर्ति एवं लाभ को प्रभावित करती है । 2. अनिश्चितता वहन ही साहसी का एकमात्र कार्य नहीं है । यद्यपि यह साहसी का प्रमुख कार्य है। साहसी को लाभ उसके अन्य कार्यों के लिए, जैसे-प्रबन्ध करना, मेल-जोल करना, नव-प्रवर्तन आदि कार्यों के बदले प्राप्त होता है । 3. अनिश्चितता उठाने का तत्व पृथक उत्पादन का साधन नहीं है । यह तो साहसी के कार्यों की एक विशेषताएँ हैं, जिसके चलते वह जोखिम उठाने के लिए तैयार रहता है ।

4. अनिश्चितता की कोई भौतिक माप संभव नहीं है । [illegible]

WWW.GRADESETTER.COM

लाभ की निश्चित माप सम्भव नहीं है ।

5. यह सिद्धान्त केवल आकस्मिक लाभ की व्याख्या करता है, शुद्ध लाभ का नहीं ।

6. यह सिद्धान्त एकाधिकारात्मक लाभ पर कोई प्रकाश नहीं डालता है । एकाधिकारात्मक फर्म अधिक लाभ प्राप्त करती है, और वह लाभ अनिश्चितता का परिणाम नहीं है ।

7. प्रो० नाइट का सिद्धान्त कोई नवीन सिद्धान्त नहीं है, बल्कि प्रो. हॉल के जोखिम सिद्धान्त से मिलता है, क्योंकि जोखिम अनिश्चितता को जन्म देती है । नाइट ने सिर्फ जोखिम का वर्गीकरण कर यह बताया कि अज्ञान जोखिम के कारण लाभ प्राप्त होता है ।

यद्यपि प्रो० नाइट के अनिश्चितता वहन के सिद्धान्त की आलोचनाएँ की गई तथा यह सिद्धान्त पूर्ण संतोषजनक नहीं है, परन्तु इसमें संदेह नहीं कि यह सिद्धान्त लाभ के अन्य सिद्धान्तों की अपेक्षा पूर्ण (more perfect) है । अत: आधुनिक अर्थशास्त्री नाइट के लाभ सिद्धान्त को मान्यता देती है ।

Q. 13. Is it possible to measure 'Welfare' ? Elucidate.

क्या 'कल्याण' की माप संभव है ? स्पष्ट करें । **(Exam. 2016)**

अथवा, क्या कल्याण की माप सम्भव है ? स्पष्ट करें । (Is it possible to mesure welfare ? Elucidate.)

Or, क्या सामाजिक कल्याण मापनीय है ?

(Is social welfare measurable ?)

Ans. कल्याण अर्थशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह उपस्थित होता है कि क्या सामाजिक कल्याण की भौतिक माप (Physical Measurement) संभव है ? सामान्यत: 'आधिक' अथवा 'कम' जैसे शब्दों का प्रयाग करके हम सामाजिक कल्याण की मात्रा को एक दिए हुए समय में, पहले की तुलना में बढ़ा हुआ अथवा घटा हुआ बतलाते है। प्रश्न यह है कि क्या इसकी कोई संख्यात्मक माप हो सकती है? यह इस बात पर निर्भर करता है कि अर्थशास्त्र में उपयोगिता को मापा जा सकता है अथवा नहीं, क्योंकि सामाजिक कल्याण की मात्रा समाज की कुल उपयोगिता की मात्रा पर निर्भर करती है। अन्य बातों के समान रहने पर यदि किसी सरकारी आर्थिक नीति के फलस्वरूप समाज की कुल उपयोगिता में वृद्धि अथवा कमी होती है तो उसके कुल कल्याण में भी क्रमश: उसी प्रकार, वृद्धि अथवा कमी होगी। अत: सामाजिक कल्याण की परिमाणत्मक माप के लिए यह आवश्यक है कि उपयोगिता को माप होनी चाहिए। उपयोगिता एक मनोवैज्ञानिक विचार है कि जिसका अनुभव तो किया जा सकता है, किन्तु उसकी मात्रात्मक माप नहीं की जा सकती ।

हिक्स एवं ऐलन अर्थशास्त्रियों ने उपयोगिता की क्रमवाचक रूप (Ordinal Form) में माप की स्पष्ट किया है जिसके अनुसार उपभोक्ता को प्राप्त उपयोगिताओं में अनुभव के आधार पर सन्तुष्टि क्रम देकर बताया जा सकता है कि किस वस्तु से अधिक सन्तुष्टि मिली तथा किस से कम। यह एक वस्तुपरक कसौटी (Objective Critical) है, लेकिन यह कसौटी व्यक्तिगत कल्याण की माप में सहायक हे, सामाजिक कल्याण की माप में नहीं

WWW.GRADESETTER.COM

Q. 14. प्रोफेसर पीगू के कल्याणकारी अर्थशास्त्र की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए। Critically explain the Professor Pigou's Welfare Economics.
(Exam. 2004, 2012, 2014)

Or, कल्याण अर्थशास्त्र के पीगू के सिद्धान्त की आलोचनात्मक समीक्षा कीजिए।
(Explain critically Pigou's theory of Welfare Economics.)
Or, पीगू के कल्याणवादी अर्थशास्त्र की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए।
(Critically estimate Pigovian welfare economics.)
Or प्रतिष्ठित कल्याणवादी अर्थशास्त्र का मूल्याकन कीजिए।
(Gie an evaluation of Classical welfare Economics)

Ans. पीगू ऐसे सर्वप्रथम अर्थशास्त्री थे जिन्होंने 'कल्यान' (Welfare) शब्द की वैज्ञानिक विवेचना करके इस विचार को लोकप्रिय बनाया। पीगू का कल्याणकारी अर्थशास्त्र मार्शल के उपयोगिता विश्लेषण (Utility Analysis) पर आधारित है। आधुनिक अर्थशास्त्री पीगू के कल्याणकारी अर्थशास्त्र को प्राचीन कल्याणवादी अर्थशास्त्र (Old Welfare Economics) के नाम से जानते हैं।

कल्याण का विचार : पीगू का दृष्टिकोण
(Concept of Welfare : Pigovian View point)

प्रो० पीगू को यह श्रेय जाता है कि उन्होंने कल्याणवादी अर्थशास्त्र की रचना में एक वैज्ञानिक आधार (Scientific Basis) को अपनाया। पीगू के अनुसार कल्याण शब्द व्यक्ति की मानसिक स्थिति को दिखलाता है जो कुछ वस्तुओं अथवा सेवाओं के उपभोग से प्राप्त होती है। व्यक्ति के कल्याण का आधार, इस प्रकार मनुष्य की आवश्यकताओं की सन्तुष्टि होता है। अत: समाज में रहने वाले सभी व्यक्तियों की सन्तुष्टियों के योग को सामाजिक कल्याण (Social Welfare) कहा जाता है। यह शब्द अपने आप में काफी व्यापक और विस्तृत है, अत: इसको एक निश्चित अर्थ देने के लिए प्रो० पीगू ने इसको 'आर्थिक कल्याण' (Economic Welfare) के अध्ययन तक सीमित किया। पीगू के अनुसार आर्थिक कल्याण कुल सामाजिक कल्याण का एक अंग है। पीगू के अनुसार, "आर्थिक कल्याण सामाजिक कल्याण का वह भाग है, जिसे मुद्रा के मापदण्ड से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में सम्बन्धित किया जा सकता है।"

उपरोक्त परिभाषा से स्पष्ट है कि पीगू के अनुसार केवल ऐसी वस्तुएँ और सेवाएँ आर्थिक कल्याण में शामिल की जानी चाहिए जिनका मूद्रा के माध्यम से विनिमय किया जा सके। दूसरे शब्दों, में ऐसी सभी वस्तुएँ और सेवाएँ, जो मुद्रा में मापी नहीं जा सकती हैं, सामाजिक कल्याण अथवा गैर-आर्थिक कल्याण में शामिल की जाती हैं।

पीगू के कल्याणकारी अर्थशास्त्र की मान्यताएँ (Assumptions of Pigovian Welfare Economics)–पीगू के कल्याणवादी अर्थशास्त्र में निम्न मान्यताएँ निहित हैं-

(i) उपभोक्ता का व्यवहार विवेकशील (Rational) पाया जाता है तथा प्रत्येक उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं पर किए गए व्यय से अधिकतम सन्तोष प्राप्त करने का प्रयत्न करता है।

WWW.GRADESETTER.COM

(ii) व्यक्ति अपने सन्तोष की दूसरों से तथा अपने द्वारा उपभोग की गयी वस्तुओं की विभिन्न मात्राओं से प्राप्त सन्तुष्टि की आपस में तुलना कर सकता है।

(iii) एक ही समुदाय अथवा देश में विभिन्न एक समान परिस्थितियों में एक समान मौद्रिक आय से समान सन्तुष्टि प्राप्त करते हैं। अन्य शब्दों में, निर्धन तथा धनी व्यक्तियों की एक दी हुई आय से सन्तुष्टि प्राप्त करने की क्षमता समान होती है। (इसे पीगू ने मनुष्य की सन्तुष्टि की समान क्षमता (Man's Equal Capacity for Satisfaction) के सिद्धान्त की संज्ञा दी है।)

(iv) उपभोक्ता की आय पर भी सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम लागू होता है।

सामाजिक कल्याण के अधिकतमीकरण की दशाएँ (Optimisation conditions of social welfare)–प्रो० पीगू ने अपनी मान्यताओं के आधार पर सामाजिक कल्याण को अधिकतम करने की दो दशाओं (Two Conditions) अथवा दोहरी कसौटियों (Double Criterion) का उल्लेख किया है :

प्रथम, अन्य बातें समान रहने पर (विशेषकर उपभोक्ताओं की आय तथा रुचियों में कोई परिवर्तन नहीं होता है तो) राष्ट्रीय आय की वृद्धि के फलस्वरूप आर्थिक कल्याण में वृद्धि होगी। अन्य शब्दों में, दी गई दशाओं के अन्तर्गत राष्ट्रीय आय तथा आर्थिक कल्याण में सीधा सम्बन्ध पाया जाता है।

द्वितीय, यदि राष्ट्रीय आय के आकार में कोई परिवर्तन नहीं होता है तब समाज की धनी व्यक्तियों से गरीब व्यक्तियों की ओर होने वाला आय का हस्तान्तरण वर्गों की आय में होने वाला कोई भी हस्तान्तरण आर्थिक कल्याण में वृद्धि करता है।

उपरोक्त दोनों मान्यताओं की पीगू ने विस्तृत व्याख्या इस प्रकार की है-किसी एक वस्तु की मात्रा में वृद्धि करके अथवा उत्पत्ति के साधनों को अपेक्षाकृत सामाजिक महत्व की अधिक उत्पादक शाखाओं में लगाया जाता है तो निःसन्देह राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि होगी तथा परिणामस्वरूप आर्थिक कल्याण की मात्रा में भी वृद्धि होगी, लेकिन इसकी मौलिक शर्त यह है कि ऐसा करने से किसी दूसरी वस्तु की मात्रा में कमी नहीं होनी चाहिए तथा समाज के निर्धन वर्गों की आय के अंश में गिरावट नहीं आनी चाहिए।

इस व्याख्या का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि अर्थव्यवस्था को ऐसे ढंग से पुनर्गठित किया जाए कि उसके फलस्वरूप निर्धन वर्गों की आय को कम किए बिना, राष्ट्रीय आय में सुधार होता हो तो आर्थिक कल्याण में भी वृद्धि होगी।

अधिकतम सामाजिक कल्याण (Maximum Social Welfare) उस समय प्राप्त होता है जब राष्ट्रीय आय अधिकतम रहती है। यहां राष्ट्रीय आय आदर्श उत्पादन (ideal output) है। इस उत्पादन की माप पीगू द्वारा सामाजिक मूल्य पर की गई है, निजी मूल्य पर नहीं। यह स्थिति उस समय प्राप्त होती है जब उत्पादन के साधनों की सीमान्त सामाजिक उत्पत्ति सभी उद्योगों में समान रहती है।

आलोचना (Criticism)–पीगू द्वारा दी गयी विस्तृत व्याख्या के बावजूद, उसके विरुद्ध आलोचनाएँ की गयी हैं जो निम्न हैं-

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

(i) अधिकांश अर्थशास्त्री पीगू के इस मत से सहमत नहीं है कि उपयोगिता की गणनावाचक माप संभव है और न वे पीगू की इ मान्यता से सहमत हैं कि वस्तुओं में निहित उपयोगिताओं की अन्तवैयक्तिक तुलना की जा सकती है । आलोचकों की राय में पीगू की यह मान्यता अव्यावहारिक है ।

(ii) मूल्यगत निर्णय (Value Judgements) कल्याणवादी अर्थशास्त्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं । पीगू ने इन निर्णयों की कोई स्पष्ट व्याख्या नहीं की हैं ।

(iii) यह भी आलोचना की जाती है कि पीगू द्वारा स्वीकार की गयी यह मान्यता कि समान परिस्थितियों में विभिन्न व्यक्ति समान वास्तविक आय से समान सन्तुष्टि प्राप्त करते हैं, किसी वैज्ञानिक आधार को नहीं अपनाए हुए हैं, बल्कि इसका आधार केवल नैतिक है।

(iv) राष्ट्रीय आय के द्वारा आर्थिक कल्याण की माप सही ढंग से नही हो सकती । इसका कारण यह कि मूल्य परिवर्तनों के द्वारा राष्ट्रीय आय में तो परिवर्तन हो जाता है, लेकिन वास्तविक वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा नहीं बदलती है । स्पष्ट हैं कि राष्ट्रीय आय का परिवर्तन, आर्थिक कल्याण में परिवर्तन नहीं उत्पन्न करता है । इसी प्रकार यदि अतिरिक्त राष्ट्रीय आय की माप करनी हो वह भी व्यावहारिक स्तर पर संभव नहीं है ।

(v) डॉ० ग्राफ के अनुसार मुद्रा कभी भी आर्थिक कल्याण को सही ढंग से नहीं मापती है बल्कि मुद्रा के मापदण्ड द्वारा बहुत बार भ्रम तथा विरोधाभास उत्पन्न हो जाते हैं ।

यही कारण है कि आधुनिक अर्थशास्त्री कल्याणवादी अर्थशास्त्र के अध्ययन में उपयोगिता के क्रमवाचक विश्लेषण (Ordinal Analysis of Utility) को श्रेष्ठ मानते हैं।

Q. 15. आर्थिक स्थैतिक एवं आर्थिक प्रावैगिक की धारणा की व्याख्या कीजिए। (Explain the concept of economic statics and economic dynamics.)

(Exam. 2012)

अथवा, स्थैतिक एवं प्रावैगिक अर्थशास्त्र में अन्तर बताएँ। इन दोनों में कौन-सा अधिक उपयोगी है। (Distinguish between static and dynamic economics. Which of the two is more useful.)

Ans. अर्थशास्त्र के सैद्धान्तिक अध्ययन में स्थैतिक (Static) तथा प्रावैगिक (Dynamic) तकनीकों का विश्लेषण की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। समाजिक विज्ञान में इसका सर्वप्रथम प्रयोग फ्रांसीसी विचारक कॉम्टे (Comte) थे। इन्होंने इसका प्रयोग ऐतिहासिक मामलों का निरीक्षण करने तथा कुछ वैज्ञानिक नियमों की रचना कर, सामाजिक परिवर्तन का मार्ग स्पष्ट करने के लिए किया था। परन्तु अर्थशास्त्र में इसका अर्थशास्त्र में इसका सर्वप्रथम प्रयोग जे. एस. मिल (J.S. Mill) ने किया। इसका प्रयोग 1925 ई. से अर्थशास्त्र में काफी प्रयोग होने लगा। बहुत-से अर्थशास्त्रियों ने व्यापार चक्रों की व्याख्या के लिए प्रावैगिक मॉडलों की रचना की। इसमें मुख्य रेगनर फ्रिश (Ragnar Frish), सी. एफ. रोश (C.F.Roos). जे. टिनबर्जन (J. Tinbergen), केलेक्की (Kalecki) थे। आधुनिक समय में सैम्युलसन, गाडविन (Godwin), डोमर (Domer), मटजलर (Metzler), क्लीन (Klein), जे. आर. हिक्स (J. R. Hicks) आदि ने भी प्रावैगिक मॉडलों का विस्तार एवं विकास किया।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

स्थैतिक अर्थशास्त्र (Static Economics)— आर्थिक सिद्धान्तों द्वारा अर्थ प्रणाली के अन्तर्गत विभिन्न चरों (Variables) के कार्यमूलक सम्बन्धों (Functional relations) की व्याख्या की जाती है। यदि ये सम्बन्ध ऐसे चरों के बीच स्थापित किए जाते हैं, जो समय के खास बिन्दु से जुड़े हैं, तो इसे स्थैतिक विश्लेषण कहा जाएगा। साधारण बोलचाल में 'स्थैतिक' शब्द का अर्थ स्थिरता से लगाया जाता है। भौतिकशास्त्र में स्थैतिक शब्द का अर्थ विश्राम की अवस्था (stage of rest) से है। परन्तु अर्थशास्त्र में स्थैतिक शब्द का अर्थ मृत (Dead) या गतिहीनता से नहीं है, बल्कि ऐसी अर्थव्यवस्था से है, जिसमें गति या हलचल होती है, परन्तु इस गति की दर (Rate of movement) में कोई परिवर्तन नहीं होता है। यह गति निश्चित एवं नियमित रूप से होती है। इस प्रकार अर्थशास्त्र में स्थैतिक का अभिप्राय एक ऐसी दशा से लगाया जाता है, जिसमें प्रतिदिन तथा प्रतिवर्ष कार्य समान गति से सरलतापूर्वक चलता रहता है। प्रो. शुम्पीटर (Prof. Schumpter) ने स्थैतिक की व्याख्या इस प्रकार की है–"स्थैतिक विश्लेषण से हमारा अभिप्राय आर्थिक घटनाओं की व्याख्या की उस विधि से है, जिसके द्वारा अर्थ प्रणाली के विभिन्न तत्वों के बीच सम्बन्ध स्थापित करने की चेष्टा की जाती है– वस्तुओं की ऐसी मात्राओं और मूल्यों के बीच, जो समय के एक बिन्दु से जुड़े हैं।" प्रो. हिक्स (J. R. Hicks) के अनुसार "मैं आर्थिक सिद्धान्त के उन भागों को स्थैतिक अर्थशास्त्र कहता हूँ, जिसमें से प्रत्येक मात्रा का तिथिकरणकरना आवश्यक है।" ("I call economic static those parts of economic theory where we do not trouble about dating, economic dynamics those parts where every quantity must be dated.") प्रो. मार्शल (Marshall) के अनुसार–" एक स्थैतिक अर्थव्यवस्था में यह बात देखी जा सकती है कि जनसंख्या और धन दोनों में वृद्धि तो होती है, परन्तु वृद्धि की दर लगभग समान रहती है। उचित मात्रा में भूमि उपलब्ध होती है और उत्पादन प्रणाली में बहुत कम परिवर्तन होता है। दूसरी ओर मनुष्य का चरित्र भी यथास्थिर रहता है।" प्रो. हैरोड (Harrod) के अनुसार– " स्थिर साम्य का तात्पर्य कभी भी विश्राम से नहीं लगाया जाना चाहिएं इसका अभिप्राय तो उस स्थिति से है, जिसमें दिन प्रतिदिन तथा वर्ष प्रतिवर्ष, बिना घटे-बढ़े कार्य होता रहे। इस सक्रिय परन्तु अपरिवर्तनशील प्रक्रिया को स्थैतिक अर्थशास्त्र कहना चाहिए।" ("Thus a static equilibrium by no means implies a state of idleness, but one in which works is steadily going forward day by day and year by year, but without increase or diminution..... That it is to this active but unchanging process that the expression Static economics should be applied.") इस प्रकार इनके अनुसार, स्थैतिक अर्थव्यवस्था बिना किसी प्रकार के परिवर्तन के संतुलन में होती है। स्टिगलर (Stigler) के अनुसार– "स्थिर अर्थव्यवस्था तब होगी, जबकि तीन आधारभूत तत्वों, जैसे– रुचि, साधन और टेक्नोलॉजी में कोई परिवर्तन न हो।" दूसरे शब्दों में, "स्थिर अर्थशास्त्र स्थिर संतुलन का अध्ययन करता है।"

माँग और पूर्ति का सिद्धान्त इसका अच्छा उदाहरण है। माँग, पूर्ति और मूल्य का उल्लेख एक खास समय के सन्दर्भ में किया जाता है जहाँ ये स्थिर रहते है। इस प्रसंग में उल्लेखनीयहै कि स्थैतिक विश्लेषण में हम स्थितियों और निर्धारक तत्वों को एक निश्चित समय के लिए

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

स्थिर मान लेते हैं, जिसमें सम्बद्ध आर्थिक चरों के पारस्परिक सम्बन्धों और उनके बीच समायोजन की व्याख्या की जाती है। उदाहरणस्वरूप, पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत मूल्य निर्धारण की प्रक्रिया के विश्लेषण के सन्दर्भ में लोगों की आय, रुचि, अन्य वस्तुओं की कीमत आदि को स्थिर मान लिया जाता है। समय बीतने के साथ वास्तव में इनमें परिवर्तन होता है, परन्तु स्थैतिक विश्लेषण में केवल एक खास बिन्दु पर चरों के बीच सम्बन्ध और समायोजन की व्याख्या करते हैं, इनकी उपेक्षा की जाती है। अर्थशास्त्र में निर्धारक स्थितियों को आधार सामग्री या आँकड़ों की संज्ञा दी जाती है अतः यह कहा जा सकता है, स्थैतिक विश्लेषण में आधार सामग्री को स्थिर मानकर दिए हुए चरों (Variables) के आपसी समायोजन से उत्पन्न परिणामों का अध्ययन किया जाता है।

आधार सामग्री को स्थिर मान लेने का तात्पर्य यह है कि स्थैतिकी में निर्धारक स्थितियों को उन आर्थिक चरों के आचरण से स्वतन्त्र माना जाता है, जिसके बीच कार्य मूल सम्बन्ध (Functional relationship) की व्याख्या की जाती है।दूसरे शब्दों में, आधार सामग्री आर्थिक चरों के आचरण को प्रभावित करती है, परन्तु आर्थिक चरों का प्रभाव आधारसामग्री पर नहीं पड़ता है। प्रावैगिक में आधार सामग्री को स्थिर नहीं माना जाता । इसके अन्तर्गत आर्थिक चरों के आचरण के परिणामस्वरूप आधार में परिवर्तन हो सकता है। स्थैतिक विश्लेषण में समय के एक खास बिन्दु पर अर्थ प्रणाली के आचरण का अध्ययन किया जाता है। इसमें यह स्पष्ट नहीं होता कि अर्थव्यवस्था साम्य की एक अव्यवस्था से निकलकर किस प्रकार दूसरी अवस्था को प्राप्त करती है। प्रो.स्टेनली बॉबर (Stanly Bober) ने इस सन्दर्भ में लिखा है–"स्थैतिक विश्लेषण में केवल इसकी व्याख्या की जाती है कि एक खास क्षण में सामयावस्था का निर्धारण कैसे होता है। यह केवल आर्थिक समायोजन के परिणमों से सम्बन्ध रखता है और उस मार्ग की व्याख्या नहीं करता, जिसके द्वारा अर्थव्यवस्था एक साम्य से दूसरे साम्य को प्राप्त करती है।"

स्थैतिक विधि इस दृष्टि से उपयोगी है कि इसके द्वारा एक जटिल घटना को सरल बनाकर उसके कार्य मूलक सम्बन्धों की सुविधा से व्याख्या की जाती है। प्रो. सैम्युलसन ने इसके अर्थ और महत्व को स्पष्ट करते हुए लिखा है, "स्थैतिक का सम्बन्ध परस्पर अन्योन्याश्रित सम्बन्धों द्वारा आर्थिक चरों के तात्कालिक और समकालिक अथवा कालातीत निर्धारण से है। एक ऐतिहासिक दृष्टि से परिवर्तनशील जगत् की भी व्याख्या, इसकी प्रत्येक परिवर्तनशील अवस्था को स्थैतिक साम्य की क्रमिक अवस्था मानकर स्थैतिक ढंग से की जा सकती है।" (Statics concern itself with the simultaneous and instantaneous or timeless determination of econmic varioables by mutually interdependent relations. Even a historically changing work may be treated statically, each or its changing positions may be treated as successive states of Statics equilibrium.")

स्थैतिक अर्थशास्त्र की निम्नलिखित विशेषताएँ– (i) स्थैतिक विश्लेषण का प्रमुख आधार सामय का विचार है। (ii) स्थैतिक अर्थव्यवस्था गतिहीन अर्थव्यवस्था नहीं होती, बल्कि

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

परिवर्तन होते हैं तथा इसकी गति नियमित, समान तथा निश्चित रहती है। (iii) स्थैतिक अर्थव्यवस्था में कुल बचत कुल विनियोग के बराबर होती है। (iv) स्थैतिक आर्थिक विश्लेषण एक समय रहित धारणा है तथा आर्थिक तत्वों का अध्ययन किसी विशेष समय बिन्दु पर ही किया जाता है। गतिशील या प्रावैगिक अर्थशास्त्र (dynamic economics) आर्थिक प्रावैगिक की धारणा आधुनिक समय में अत्यन्त ही लोकप्रिय है। जहाँ उत्पादन की गति और दर में परिवर्तन होता रहता है, वह स्थिति गतिशील अर्थशास्त्र निरन्तर परिवर्तनों (Continuous changes) तथा इन परिवर्तनों को प्रभावित करने वाले तत्वों का अध्ययन करता है। प्रो. हिक्स (Prof. Hicks) के अनुसार, "आर्थिक सिद्धान्त के उन विभागों को गतिशील अर्थशास्त्र कहते है, जिनमें प्रत्येक मात्रा का तिथिकरण आवश्यक है।" हिक्स ने गतिशील अर्थव्यवस्था का तात्पर्य आर्थिक सिद्धान्त के उस भाग से है, जिसमें 'समय तत्व' का अधिक महत्व रहता है। इस परिभाषा से गतिशील अर्थशास्त्र का क्षेत्र अत्यन्त ही व्यापक हो जाता है। हैरोड (Harod) के अनुसार, गतिशील अर्थशास्त्र का मतलब है, आर्थिक आँकड़ों में निरन्तर होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन" (Dynamic Economics, refers to the theory of continuously changing economic data as against the once-over changes of the economic data.) बोमोल (W.J. Boumol) के अनुसार "गतिशील अर्थशास्त्र आर्थिक घटनाओं का अध्ययन पिछली और आगे की घटनाओं को सम्बद्ध करते हुए करता है।" (Dynamics is the study of economic phenomena in relation to Preceding and succeeding events.") प्रो. शुम्पीटर (Schumpeter) के अनुसार "हम किसी सम्बन्ध की उस अवस्था में प्रावैगिक कहते हैं, जब उसके द्वारा ऐसी आर्थिक मात्राओं, को जोड़ा जाता है जो दो कालों से सम्बद्ध है।" इस प्रकार अलग-अलग क्षणों में भिन्न-भिन्न मान रखने वाले चरों के सम्बन्ध को प्रावैगिक सम्बन्ध कहा जा सकता है। जैसे–किसी एक समय में वस्तु की खरीदी जाने वाली मात्रा, यदि दूसरे समय में प्रचलित मूल्य पर निर्भर हो तो इस सम्बन्ध को प्रावैगिक कहा जाएगा। इस प्रकार आर्थिक प्रावैगिकी में विभिन्न चरों के पारस्परिक सामयोजन को समय के संदर्भ में देखा जाता है।

प्रो. जे. बी. क्लार्क (J.b. clark) के अनुसार, गतिशील अर्थव्यवस्था की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–(i) जनसंख्या में वृद्धि होती है। (ii) पूँजी में वृद्धि होती है। (iii) उत्पादन के तरीकों में सुधार होता है। (iv) औद्योगिक संस्थाओं का रूप बदलता है तथा (v) उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं में वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त भी इसकी निम्न विशेषताएँ हैं–(i) गतिशील अर्थशास्त्र का आधार कल्पना न होकर वास्तविक तथ्य है। अतः इसके निष्कर्ष सत्य होते हैं। (ii) बहुत-सी आर्थिक समस्याओं का समाधान के इसी विश्लेषण में सम्भव है। (iii) यह केवल गतिशील या परिवर्तनशील परिस्थितियों का ही अध्ययन करता है। (iv) यह एक वैज्ञानिक अध्ययन विधि है, क्योंकि इसमें एक साम्य से दूसरे साम्य तक पहुँचने के लिए सम्पूर्ण मार्ग का अध्ययन करना पड़ता है। (v) बाजार मूल्य एवं सामान्य मूल्य निर्धारण का अध्ययन गतिशील अर्थशास्त्र में ही सम्भव है। (vi) अल्पविकसित एवं विकासशील राष्ट्रों की आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए गतिशील अर्थशास्त्र अधिक उपयुक्त है।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

तुलनात्मक स्थैतिक (Comparatice Statics) के अन्तर्गत दो स्थैतिक संतुलन की स्थितियों का अध्ययन किया जाता है। इसका महत्व इस बात में है कि इकसे द्वारा समय के एक-दूसरे को आधार सामग्री में परिवर्तनों से उत्पन्न नए संतुलन को दिखाया जा सकता है। इस आधार पर यह पता लगाया जा सकता है, आधार सामग्री में परिवर्तन का क्या परिणाम होगा। जैसे–मान लिया जाए कि एक विशेष समय से माँग और पूर्ति संतुलित है तथा इनकी समानता एक संतुलन मूल्य को बताती है। यदि माँग और पूर्ति को निर्धारित करने वाले तत्वों में किसी एक में परिवर्तन हो तो माँग और पूर्ति में एक नए बिन्दु पर समानता स्थापित होगी तथा नए संतुलन मूल्य का निर्धारण होगा।

व्यष्टि और समष्टि दोनों क्षेत्रों में प्रावैगिक सम्बन्धों के अनेक उदाहरण हैं। व्यष्टिगत प्रावैगिक (Micro Dynamics) जैसे बाजार पूर्ति का आचरण है। यदि एक निश्चित समय में वस्तु की आपूर्ति पूर्वकाल में प्रचलित पर निर्भर हो तो इन दोनों के सम्बन्ध को प्रावैगिक कहा जाएगा। इसी तरह समष्टि क्षेत्र में आय और उपभोग का सम्बन्ध है। एक निश्चित समय में समाज का कुल उपभोग, समाज की पूर्वकालिक आय पर निर्भर है, तो इन दोनों के बीच का सम्बन्ध प्रावैगिक होगा ।

इस प्रकार प्रावैगिक प्रणाली में परिवर्तन अंतर्जात होता है। इस पर बाह्य परिवर्तनों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। परिवर्तन की एक प्रक्रिया से स्वत: दूसरा परिवर्तन हो जाता है।

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि वर्तमान आर्थिक विश्लेषण में गतिशील या प्रावैगिक अर्थशास्त्र का अधिक महत्व है।

Q. 16. किसी वस्तु के मूल्य में कमी के फलस्वरूप आय तथा प्रतिस्थापन प्रभावों की व्याख्या कीजिए । (Discuss the income and substitution effects of a fall in price.)

Or, मूल्य प्रभाव आय एवं प्रतिस्थापन प्रभावों का योग है।'' व्याख्या कीजिए। (Price effect is the sum total of income and substitution effects. Explain.)

Ans. परम्परागत माँग विश्लेषण (Traditional demand analysis) मुख्यत: दो बातों या मान्यताओं पर आधारित हैं-(i) एक वस्तु की कीमत में परिवर्तन होती है, जबकि अन्य वस्तुओं की कीमतें स्थिर रहती है । (ii) उपभाक्ता की आय स्थिर रहती है। यदि X वस्तु की कीमत में परिवर्तन होता है, या मान लिया जाय कि उसकी कीमत घट जाती है, तो सामान्य स्थिति में उसकी माँग में वृद्धि होगी, क्योंकि उपभोक्ता सस्ती वस्तु X को, अन्य वस्तुओं अर्थात् महँगी वस्तुओं के स्थान पर प्रतिस्थापन करेगा। इसे कीमत में परिवर्तन के परिणामस्वरूप प्रतिस्थापन प्रभाव (Substitution effect of a change in price) कहा जाता है । पुन: उपभोक्ता की आय स्थिर मानना भी व्यावहारिक जीवन में उचित नहीं लगता है। किसी एक वस्तु के कीमत में परिवर्तन होने से उपभोक्ता की वास्तविक आय (Income effect of a change in price) कहा जाता है । **मार्शल** (Marshall) ने माँग विश्लेषण के अन्तर्गत आय प्रभाव की उपेक्षा की है ।

हिक्स एवं एलेन (J.R.Hicks and R. G. D. Allen) के अनुसार कीमत परिवर्तन का

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

मांग पर कुल प्रभाव (Total effect of a price change on demand) दो प्रकार का होता है-(i) प्रतिस्थापन प्रभाव (Substitution effect) तथा (ii) आय प्रभाव (Income effect)। कीमत प्रभाव उपभोक्ता की किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप उस समस्त प्रभाव को मापता है, जो कि उस वस्तु की क्रय मात्रा पर पड़ता है। मूल्य प्रभाव उपभोक्ता की किसी वस्तु के मूल्य में परिवर्तन के फलस्वरूप उस समस्त प्रभाव को मापता है, जो कि उस वस्तु की खरीदी गई मात्रा पर पड़ता है। मूल्य प्रभाव के अन्तर्गत वस्तुओं के केवल सापेक्षिक मूल्यों में परिवर्तन होता है; आय में कोई क्षतिपूरक परिवर्तन (Compensating variation in income) नहीं होता जिससे कि उपभोक्ता पहले की अपेक्षा अधिक या कम संतोष प्राप्त करता है। जब किसी वस्तु के मूल्य में परिवर्तन होता है, तो उपभोक्ता की संतुष्टि में भी परिवर्तन होता है। दूसरे शब्दों में, वस्तु के मूल्य के घटने पर उपभोक्ता का संतुलन एक ऊँचे तटस्थता वक्र पर होगा और यदि मूल्य बढ़ेगा तो उपभोक्ता का संतुलन नीचे तटस्थता वक्र पर होगा। इस प्रकार मूल्य प्रभाव यह बताता है कि वस्तु X में मूल्य में परिवर्तन होने से उपभोक्ता द्वारा खरीदी गई, उसकी मात्रा में क्या परिवर्तन होता है, जबकि उपभोक्ता की आय, रुचियाँ अधिमान और अन्य वस्तु Y का मूल्य दिया हुआ हो। "The price effect indicates the way, the consumer's purchases of the good change when its price changes, given his income, tastes and preferences and the price of the other goods". इस प्रकार कहा जा सकता है कि कीमत में परिवर्तन के परिणामस्वरूप उपभोक्ता द्वारा किसी वस्तु की माँगी गयी मात्रा पर कुल प्रभाव को कीमत प्रभाव मापता है। (Price effect measures the 'total effect' of price change on the quantity demanded of a commodity by the consumer.)

कीमत प्रभाव निम्नलिखित मान्यताओं (Assumption) पर आधारित है-1. एक वस्तु X की कीमत में परिवर्तन होता है, या मान लें कि घटता है। (ii) दूसरी वस्तु Y की कीमत स्थिर रहता है। (iii) उपभोक्ता की मौद्रिक आय (Money income) स्थिर रहती है। (iv) वस्तु X की कीमत में कमी के परिणामस्वरूप उपभोक्ता की वास्तविक आय (Real income) बढ़ती है। वास्तविक आय की वृद्धि को नष्ट नहीं किया जा सकता है अर्थात् आय में क्षतिपूर्ण परिवर्तन (Compensating Variation in income) नहीं होता है, तथा उपभोक्ता की स्थिति पहले की तुलना में अच्छी होने दिया जाता है। कीमत बढ़ने पर उपभोक्ता की स्थिति खराब होती है।

इसे रेखा चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–उपभोक्ता की मौद्रिक आय दी हुई है, तथा Y वस्तु का मूल्य स्थिर रहता है और X वस्तु के मूल्य में परिवर्तन होता है। यहाँ हम मान लेते हैं, कि वस्तु के मूल्य में कमी होती है। उपभोक्ता अपनी दी हुई आय में शुरू में Y वस्तु की OA मात्रा अथवा X वस्तु की OP मात्रा खरीद सकता है। अर्थात् शुरू की कीमत रेखा (Price line) AP रहता है। किन्तु X वस्तु के मूल्य में कमी होने से उपभोक्ता उसी दी हुई आय से X वस्तु की अधिक मात्राएँ अर्थात् OP_1, OP_2 आदि खरीद सकता है। दूसरे शब्दों में, कीमत रेखा अब AP_1, AP_2 हो जाती है। अगर विभिन्न संतुलन बिन्दुओं अर्थात् M,M_1 तथा M_2 को मिला दिया जाय तो एक रेखा बन जाती है, जिसे 'मूल्य उपभोग रेखा' (Price

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

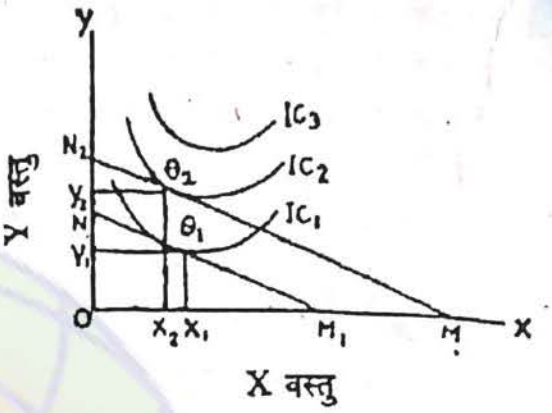

consumption curve—Pcc) कहते हैं। मूल्य उपभोग रेखा यह बताती है, कि एक वस्तु X की कीमत में परिवर्तन होने से उपभोक्ता के लिए उस वस्तु X की माँग को प्रभावित करती है, जबकि दूसरी वस्तु Y की कीमत तथा उपभोक्ता की द्रव्यिक आय स्थिर रहती है। दूसरे शब्दों में, कीमत उपभोग रेखा कीमत प्रभाव के रास्ते को बताती है। (Price consumption curve shows how the change in the price of one good BX affects the consumer's demand of X, price of the other good BY and his money income remain cnstant. In other words, price consumption curve traces the path of price effect.)मूल्य उपभोग रेखा X वस्तु के मूल्य के परिवर्तन होने से उपभोक्ता द्वारा खरीदी गई वस्तुओं X तथा Y के मूल्य प्रभाव को व्यक्त करती है, जबकि उपभोक्ता की आय, रुचि, अधिमान दिए हुए हों। दूसरे शब्दों में मूल्य उपभोग रेखा यह स्पष्ट करता है कि यदि अन्य बातें समान रहे तो, अगर दो वस्तुओं में से किसी एक वस्तु का मूल्य स्थिर और दूसरी का कम हो जाय तो उपभोक्ता की उस वस्तु की माँग या उपभोग पर क्या प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि माँग पर मूल्य परिवर्तन का जो प्रभाव पड़ता है, उसे मूल्य प्रभाव (Price effect) कहते हैं।

वस्तुत: मूल्य प्रभाव, आय प्रभाव तथा प्रतिस्थापन प्रभाव का योग होती है । (Price effect is the combination or sum total of income and substitution effect.) निम्नलिखित कारणों से किसी वस्तु के मूल्य में कमी के कारण उसकी माँग बढ़ती है-

1. जब मूल्य में कमी होती है तो उपभोक्ता की वास्तविक आय (Real income) में वृद्धि होती है, जिसका एक भाग वह उस वस्तु पर खर्च करके अपना उपभोग बढ़ा सकता है। वह मूल्य में कमी का आय-प्रभाव (Income effect) है ।

2. जब किसी वस्तु के मूल्य में कमी होती है, तो उस वस्तु के उपभोग में उन सभी वस्तुओं की तुलना में वृद्धि की जाती है, जिसके मूल्यों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ रहता है। यह मूल्य में कमी प्रतिस्थापन प्रभाव (Substitution effect) है ।

स्पष्ट है, किसी वस्तु के मूल्य में कमी के फलस्वरूप उसकी माँग में वृद्धि का होना आय प्रभाव तथा प्रतिस्थापन प्रभाव का परिणाम है। इसे रेखा चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है- चित्र में X वस्तु के मूल्य में कमी होने के कारण उपभोक्ता का संतुलन बिन्दु P से P_1 हो जाता है, जिससे X वस्तु की माँग OD से बढ़कर OD_2 हो जाता है अर्थात् माँग में DD_2 मात्रा में वृद्धि हो जाती है। चित्र से स्पष्ट है कि इस वृद्धि का DD_2 भाग आय प्रभाव (Incoe effect) के कारण है तथा बाकी D_1D_2 भाग प्रतिस्थापन प्रभाव (Substitution effect) के कारण है। इस प्रकार-$DD_2 = DD_1 + D_1D_2$ अर्थात् मूल्य प्रभाव = आय प्रभाव + प्रतिस्थापन प्रभाव (Price effect = Incme effect + Substitution effect)

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

इस प्रकार कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी माँग में परिवर्तन की दिशा को समझने के लिए कीमत प्रभाव को उसके दो भागों आय प्रभाव तथा प्रतिस्थापन प्रभाव में विभाजित करना अनिवार्य है। मूल्य प्रभाव, आय प्रभाव तथा प्रतिस्थापन प्रभाव का कुल परिणाम (Net effect) है। चित्र में P से P_2 तक बढ़ना आय प्रभाव तथा P से P_1 की ओर बढ़ना मूल्य प्रभाव को बताता है, जिसमें आय प्रभाव तथा प्रतिस्थापन प्रभाव दोनों शामिल है। अतः स्पष्ट है कि "Price is the combination or sum total of income effect and substitution effect."

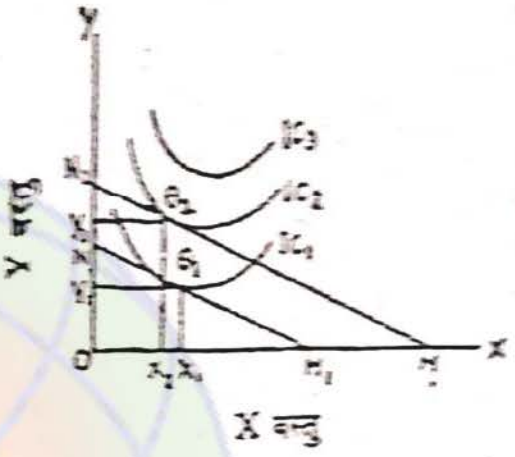

Q. 17. समोत्पाद वक्रों की सहायता से आय उत्पादक संतुलन की व्याख्या कीजिए। Explain the concept of Producer's equilibrium with the help of Equal Product curves. (Exam. 2013)

Ans. सम-उत्पाद वक्र साधनों के उन सभी संयोग को प्रकट करता है जिनसे को समान मात्रा प्राप्त होती है। इसलिए सम-उत्पाद वक्र तकनीकी दशाओं (Technical Conditions) को प्रकट करता है। सम-उत्पाद रेखाओं के द्वारा उत्पादन के संतुलन को स्पष्ट किया जा सकता है। उत्पादक के संतुलन का अर्थ यह है कि वह साधनों का कौन-सा संयोग चुने जिससे कम-से-कम लागत पर अधिकतम उत्पादन हो सके उत्पादक जिस साधनों के संयोग से कम-से-कम लागत पर अधिकतम उत्पादन प्राप्त करता है, उसे साधनों का न्यूनतम लागत संयोग (Least cost combination of factors) कहते हैं।

जिस प्रकार उपभोक्ता तटस्थता वक्र रेखाओं से संतुलन प्राप्त करता है, उसी प्रकार सम-उत्पादक रेखाओं की सहायता से उत्पादक भी संतुलन को प्राप्त करता है। सम-उत्पाद रेखाओं द्वारा उत्पादक के संतुलन के लिए बातें आवश्यक है :-

(i) उत्पादक द्वारा आगतों (Inputs) पर खर्च की जाने वाली रकम तथा बाजार में आगतों अथवा साधनों का मूल्य जिसके आधार पर साधन मूल्य रेखा (Factor price line) प्राप्त की जा सके।

(ii) उत्पादक का सम-उत्पाद मानचित्र (Iso-product Map)— मानलिया जाय कि एक उत्पादक है जिसको आगतों अथवा साधनों पर खर्च की जाने वाली रकम दी हुई है। उत्पादक इस रकम को केवल पूँजी (Capital) तथा श्रम (Labour) पर खर्च करता है। यह भी मानलिया जाय कि बाजार में इन दोनों साधनों का मूल्य ज्ञात है अब उत्पादक द्वारा खर्च की जाने वाली रकम तथा साधनों के मूल्य के आधार पर साधन मूल्य रेखा (Factor price line) तैयार किया जा सकता है। इसे रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :-

चित्र में OX रेखा पर श्रम की मात्रा तथा OY रेखा पर पूँजी की मात्रा को दिखाया गया है। AD रेखा साधन मूल्य रेखा (Factor price cline) या सम-उत्पाद रेखा (Iso cost line) है। मान लिया जाय कि उत्पादक यदि अपनी सम्पूर्ण रकम को केवल श्रम पर ही खर्च करे तो वह OB श्रम की मात्रा प्राप्त करता है। इसी प्रकार यदि उत्पादक अपनी सम्पूर्ण रकम

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

को पूँजी पर खर्च करे तो उसे पूँजी की OA मात्रा प्राप्त होगी। यदि A तथा B को मिला दिया जाय तो साधन मूल्य रेखा तैयार होगी। यदि AB के विभिन्न बिन्दुओं से OA तथा OB दोनों पर कई लम्बत् रेखाएँ (Prependiculars) खींची जाय तो पूंजी तथा श्रम के अनेक संयोग (Combinatios) बनेंगे, जिन्हें उत्पादक अपनी दी हुई रकम से खरीद सकता है। परन्तु उत्पादन के लिए विभिन्न संयोगों में किस संयोग को चूने जिससे कि न्यूनतम लागत पर अधिकतम उत्पादन संभव हो, कठिन हो जाता है। इसके लिए उत्पादक को सम-उत्पाद मानचित्र (Iso product map) से सहायता मिलती है । चित्र द्वारा उत्पादक के सम-उत्पाद मानत्रित्र को दर्शाया जा सकता है:–

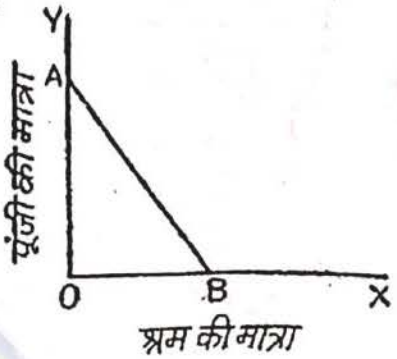

सम-उत्पाद मानचित्र IQ_1, IQ_2 तथा IQ_3 तीन सम उत्पाद रेखाएँ है जो उत्पादन की क्रमश: 20, 40 तथा 60 इकाइयों को बताती है। अत: उत्पादक किन सम-उत्पाद रेखा का चुनाव करेगा, इसके लिए साधन मूल्य रेखा की सहायता लेनी पड़ेगी ।

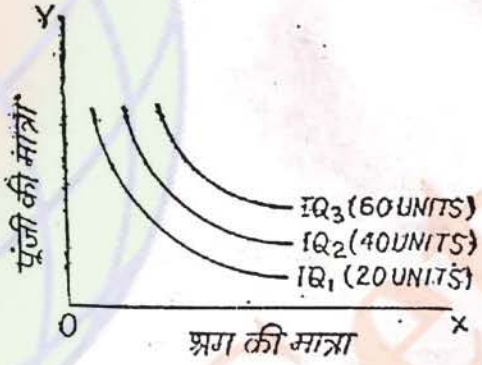

किसी भी उत्पादक के लिए सबसे कम लागत तथा अधिकतम उत्पादन देने वाला संयोग उस बिन्दु पर होगा, जिस बिन्दु पर साधन मूल्य रेखा सम-उत्पाद रेखा को स्पर्श करेगा । (The point at which the factor price line or Iso cost line is tangent price line or Iso cost line is tangent to an Iso product line.) इसे रेखा चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

चित्र में OX रेखा पर श्रम की मात्रा तथा OY रेखा पर पूँजी की मात्रा को दिखाया गया है। चित्र में साधन मूल्य रेखा (Factor price line) AB सम उत्पाद रेखा Iso product curve) IQ_2 को M बिन्दु पर स्पर्श करती है। अत: उत्पादक का संतुलन बिन्दु (producer's equilibrium point) M होगा तथा वह श्रम की OQ मात्रा तथा पूँजी का OR मात्रा का प्रयोग कर 40 इकाइयों का उत्पादन करेगा । इस बिन्दु पर साधनों की लागत न्यूनतम (Minimum) होगी तथा उत्पादन अधिकतम (Maximum) मात्रा में होगा। सम-उत्पाद रेखा IQ_3 साधन मूल्य रेखा से ऊपर हे जिसे उत्पादक प्राप्त नहीं कर सकता है। अत: वह IQ_3 का चुनाव नहीं करेगा। पुन: उत्पादक सम-उत्पाद रेखा IQ_1 का भी चुनाव नहीं कर करेगा, यद्यपि यह रेखा P तथा P_1 बिन्दु के बीच साधन मूल्य रेखा के अन्दर पड़ती है। उत्पादक के लिए P तथा P_1 बिन्दु उपयुक्त नहीं होगा, क्योंकि बिना किसी अतिरिक्त लागत के किसी अन्य बिन्दु का चुनाव कर उत्पादन में वृद्धि कर सकता है। अत: M बिन्दु ही उत्पादन का सन्तुलन बिन्दु होगा। दूसरे शब्दों में, M बिन्दु पर स्थित पूँजी और श्रम का संयोग उत्पादक के लिए आदर्श संयोग होगा.

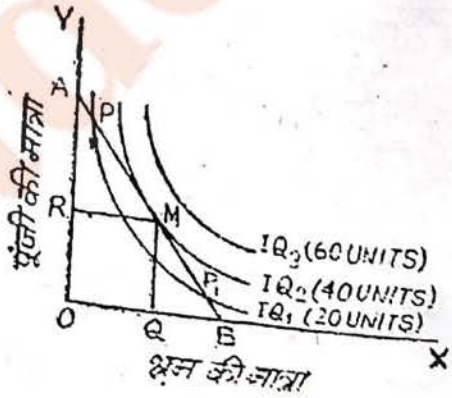

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

क्योंकि इसी बिन्दु या संयोग पर उत्पादक न्यूनतम लागत पर अधिकतम उत्पादन कर सकेगा। स्पष्ट है, सम उत्पाद रेखा विश्लेषण के आधार पर उत्पादक उस बिन्दु पर संतुलन में रहेगा जिस बिन्दु पर साधन मूल्य रेखा किसी सम-उत्पाद रेखा को स्पर्श करेगा। उत्पादक के संतुलन के लिए निम्नलिखित शर्तें आवश्यक है :-

(i) दो साधनों के बीच तकनीकी प्रतिस्थापन की दर (Marginal Rate of Technical Substitution) उनके मूल्य के अनुपात (Price Ratio) के बराबर होती है।

(ii) साधन मूल्य रेखा तथा सम-उत्पाद रेखा का झुकाव एक ही होता है। (The factor line and the Iso product curve have the same slop.)

(iii) सम-उत्पाद रेखा मूल बिन्दु से उन्नतोदर (Convex) होती है ।

(iv) दोनों साधनों के बीच तकनीकी प्रतिस्थापन की सीमान्त दर घटती हुई, (Diminishing Marginal Rate of technical Substitution) होती है।

उपर्युक्त शर्तों का पूरा होने पर ही उत्पादक संतुलन की अवस्था में रहता है।

QUESTION BANK

T.M. BHAGALPUR UNIVERSITY, EXAM., 2007

1. No. Objective के लिए पेज नं० 7 में देखें ।
2. तटस्थता वक्र रेखा के प्रमुख विशेषताओं का वर्णन करें। एक उपभोक्ता तटस्थता वक्र रेखा विश्लेषण के मदद से किस प्रकार संतुलन प्राप्त करता है ?
3. कीमत माँग की लोच से आप क्या समझते हैं ? कीमत माँग की लोच की माप की विभिन्न विधियों का वर्णन करें ।
4. परिवर्तनशील अनुपातों के नियम की आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करें ।
5. लागत रेखाएँ U आकार की क्यों होती है ? विश्लेषण करें।
6. मूल्य विभेदीकरण से आप क्या समझते हैं ? मूल्य विभेदीकरण के अन्तर्गत मूल्य निर्धारण किस प्रकार होता है ?
7. वितरण के सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करें।
8. शूम्पीटर द्वारा प्रतिपादित लाभ के सिद्धान्त का आलोचनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करें।
9. एक अर्थव्यवस्था में कल्याण बढ़ाने के पैरोटों के मानदंड का आलोचनात्मक विश्लेषण करें।
10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखें।
    (a) Ricardian theory of Rent रिकार्डो का लगान सिद्धान्त
    (b) Perfect Competition पूर्ण प्रतियोगिता
    (c) Iso-quant Curve समोत्पाद वक्र
    (d) Price Effect मूल्य प्रभाव।

T.M. BHAGALPUR UNIVERSITY, EXAM., 2008

1. No. Objective के लिए पेज नं० 9 में देखें ।
2. व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र में अन्तर कीजिए एवं दोनों के बीच परस्पर सम्बन्ध दर्शाइए।
3. एकाधिकार के अन्तर्गत कीमत का निर्धारण कैसे होता है ?
4. पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत फर्म के संतुलन की व्याख्या कीजिए।
5. लगान के आधुनिक सिद्धान्त की विवेचना करें।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

6. सम-उत्पाद वक्र को स्पष्ट करें तथा इसकी विशेषता बताएँ ।
7. प्रो0 नाइट के सिद्धान्त का आलोचनात्मक परीक्षण करें ।
8. मार्शल के उपभोक्ता की बचत की धारणा का आलोचनात्मक परीक्षण करें।
9. प्रतिष्ठित कल्याणवादी अर्थशास्त्र का मूल्यांकन कीजिए ।
10. उपयोगिता एक क्रमवाचक विचार है न कि गणनात्मक विचार। स्पष्ट करें।

T.M. BHAGALPUR UNIVERSITY, EXAM., 2009

1. नीचे दिये गये विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करें :

(i) समष्टि अर्थशास्त्र की निम्नलिखित में से कौन-सी सीमाएँ है ?
(a) सामूहिक अर्थशास्त्रीय विरोधाभास (b) वैयक्तिक इकाइयों की अवहेलना
(c) (a) और (b) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

(ii) जब कुल उपयोगिता अधिकतम होती है, तब सीमान्त उपयोगिता :
(a) धनात्मक (b) ऋणात्मक
(c) शून्य (d) उपरोक्त तीनों दशाएँ होती हैं

(iii) सम-सीमान्त उपयोगिता के नियम के प्रतिपादक कौन थे ?
(a) मार्शल (b) गोसेन
(c) रिकार्डो (d) जे. एस. मिल

(iv) किस प्रकार की वस्तुओं के मूल्य में कमी होने से माँग में वृद्धि नहीं होती ?
(a) अनिवार्य वस्तुयें (b) आरामदायक वस्तुयें
(c) विलासिता की वस्तुयें (d) इनमें से कोई नहीं

(v) 'गिफिन वस्तुओं' के लिए कीमत मांग की लोच होती है :
(a) ऋणात्मक (b) धनात्मक
(c) शून्य (d) इनमें कोई नहीं

(vi) उत्पादन फलन को व्यक्त करता है :
(a) $Qx = Px$ (b) $Qx = f(A, B, C, D)$
(c) $Qx = Dx$ (d) इनमें से कोई नहीं

(vii) किसी स्थिति में फर्म संतुलन में होता है ?
(a) $MR = MC$ (b) $MR > MC$
(c) $MR < MC$ (d) $MR = MC = 0$

(viii) लगान = ?
(a) वास्तविक आय-हस्तान्तरित आय (b) वास्तविक आय + हस्तान्तरित आय
(c) हस्तान्तरित आय (d) इनमें से कोई नहीं

(ix) 'लाभ' के नव-प्रवर्तन सिद्धान्त के प्रतिपादक कौन थे ?
(a) जे. बी. क्लार्क (b) शुम्पीटर
(c) कार्ल मार्क्स (d) वाकर

(x) उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ कुल लागत एवं कुल परिवर्तनशील लागत में अन्तर
(a) घटता जाता है (b) बढ़ता जाता है
(c) स्थिर रहता है (d) इनमें से कोई नहीं

2. उदासीनता वक्र की परिभाषा दें । उदासीनता वक्र की प्रमुख विशेषतायें क्या है ?
3. परिवर्तनशील अनुपात के नियम की व्याख्या कीजिए। क्या यह नियम केवल कृषि क्षेत्र में

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

लागू होता है ?

4. एक फर्म के औसत लागत वक्र की आकृति U आकार की क्यों होती हैं ?
5. पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत एक उद्योग के संतुलन के लिए आवश्यक शर्त्तें क्या है ?
6. रिकार्डो के लगान सिद्धांत का आलोचनात्मक व्याख्या करें ।
7. कीमत विभेद क्या है ?विभेदात्मक एकाधिकार के अन्तर्गत किस प्रकार कीमत का निर्धारण किया जाता है ?
8. एक पूर्ण प्रतियोगी बाजार में किस प्रकार मजदूरी निर्धारित होती है ?
9. पैपरेटो अनुकूलतम की महत्वपूर्ण मान्यतायें क्या है ? पैरेटो के कल्याण मापदण्ड का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।
10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखें :
    (a) व्यष्टि (सूक्ष्म) अर्थशास्त्र (b) ऋण रेखायें
    (c) उपभोक्ता की बचत (d) नाइट के लाभ का सिद्धांत

T.M. BHAGALPUR UNIVERSITY, EXAM., 2010

1. नीचे दिये गये विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करे :
    (a) तटस्थता वक्र का एक गुण होता है मूल बिन्दु के उन्नतोदर होना
    (b) उत्पादन का अर्थ है उपयोगिता का सृजन ।
    (c) माँग की रेखाएँ साधारणतया नीचे की ओर बाईं तरफ झुकती है।
    (d) एक तटस्थता वक्र रेखा एक समान उपयोगिता देनेवाली .रेखा नहीं है।
    (e) उत्पादन वृद्धि नियम मुख्यत: कृषि में लागू होता है।
    (f) लगान का सिद्धान्त मार्शल से जुड़ा हुआ है ।
    (g) एकाधिकार वस्तु की माँग की आड़ी लोच 1 है ।
    (h) आभास-लगान रिकार्डो से सम्बन्धित है ।
    (i) लाभ का नव-प्रवर्त्तन सिद्धान्त का प्रतिपादन क्लार्क द्वारा किया गया है।
    (j) सर्वसममत नियम पैरेटो द्वारा प्रतिपादित है ।
2. समष्टि एवं व्यष्टि अर्थशास्त्र के बीच अन्तर स्पष्ट करें ।
   Differentiate between Micro and Macro Economics.
3. माँग की लोच से आप क्या समझते हैं ? इसे कैसे मापा जा सकता है ?
   What do you mean by elasticity of demand ? How can it be measured ?
4. उपभोक्ता सन्तुलन विश्लेषण के उपयोगिता दृष्टिकोण की व्याख्या कीजिए ।
   Explain the utilitarian approach to consumer's equilibrium analysis.
5. एकाधिकार के अन्तर्गत कीमत-निर्धारण के शर्त्तों की व्याख्या कीजिए ?
   Discuss the conditions under which price is determined in monopoly.
6. शुम्पिटर के लाभ-सिद्धान्त की विवेचना कीजिए ।
   discuss the Schumpeter's theory of Profit.
7. मार्शल के 'उपभोक्ता की बचत' के विचार का आलोचनात्मक परीक्षण करें।
   Critically examine the Marshall's concept of 'Consumer's surplus'.
8. सम-उत्पाद वक्र एवं इनकी विशेषताओं को स्पष्ट करें ।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

Explain iso-product curve and its characteristics.

9. वितरण के सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए ।
Examine the marginal productivity theory of distribution.

10. क्या कल्याण की माप सम्भव है ? स्पष्ट करें ।
Is it possible to measure welfare ? Elucidate.

T.M. BHAGALPUR UNIVERSITY, EXAM., 2011

1. नीचे दिये गये विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करे :
   (a) मार्शल के अनुसार अर्थशास्त्र भौतिक कल्याण का विज्ञान है ।
   (b) किसी वस्तु में मानव आवश्यकताओं को संतुष्ट करने की क्षमता को उपयोगिता कहते हैं ।
   (c) उपभोग सभी आर्थिक क्रियाओं का आधार है ।
   (d) अनिवार्य वस्तुओं की माँग प्राय लोचदार होती है ।
   (e) श्रम उत्पादन का सक्रिय साधन है ।
   (f) नाशवान वस्तुओं का बाजार अन्तर्राष्ट्रीय होता है।
   (g) बाजार काल में माँग अहम भूमिका अदा करती है।
   (h) मौद्रिक मजदूरी नकद के रूप में दी जाती है।
   (i) लाभ जोखिम वहन का पुरस्कार होता है ।
   (j) वस्तु विनिमय प्रणाली सर्वश्रेष्ठ विनिमय प्रणाली है ।

2. "अर्थशास्त्र सीमितता तथा चुनाव का विज्ञान है ।" व्याख्या कीजिए।
"Economics is the Science of Scarcity and choice-making." Explain.

3. तटस्थता वक्र विश्लेषण की सहायता से आय, प्रतिस्थापन एवं मूल्य प्रभाव में अन्तर कीजिए।
Distinguish among income, substitution and price effect with the help of indifference curve analysis.

4. सीमान्त आगम तथ औसत आगम वक्रों के सम्बन्ध की विवेचना करें । Discuss the relationship between marginal revenue and average revenue curves.

5. पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत मूल्य-निर्धारण की विवेचना कीजिए ।
Discuss the determination of price under perfect competition.

6. किसी फर्म का औसत लागत वक्र U आकार का क्यों होता है ? क्या औसत लागत वक्र के आकार पर समय का कोई प्रभाव पड़ता है ?
Why is the everage cost curve of a firm U-shaped ? Does time bring any effect upon the shape of the average cost curve ?

7. उत्पादन ह्रास नियम की व्याख्या कीजिए। क्या यह सिर्फ कृषि के क्षेत्र में ही लागू होता है ? Explain the law of diminishing returns. Does it hold good in agriculture alone ?

8. लगान के रिकार्डो सिद्धान्त की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए।
Critically analyse the Ricardian theory of rent.

9. नाइट के लाभ-सिद्धान्त की आलोचनात्मक समीक्षा कीजिए।
Examine critically the Knight's theory of profit.

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

10. कल्याण अर्थशास्त्र के परेटो के सिद्धान्त की आलोचनात्मक समीक्षा कीजिए।
Examine critically Pareto's theory of Welfare Economics.

T.M. BHAGALPUR UNIVERSITY, EXAM., 2012

1. **वस्तुनिष्ठ प्रश्न के लिए देखें पेज नं. 11**
2. आर्थिक स्थैतिक एवं आर्थिक प्रावैधिक की धारणा की व्याख्या कीजिए।
Explain the concept of economic statics and economic dynamics.
3. माँग की लोच क्या है ? माँग की लोच को मापने की विभिन्न विधियों की विवेचना कीजिए।
What is elasticity of demand ? Discuss the various methods of measuring elasticity of demand.
4. एकाधिकार क्या है ? एकाधिकार के अन्तर्गत मूल्य का निर्धारण किस प्रकार होता है?
What is Monopoly ? How is price determined under monopoly.
5. तटस्थता वक्रों की सहायता से उपभोक्ता संतुलन की विवेचना कीजिए।
Discuss consumer's equilibrium with the help of indifference curves.
6. लगान के आधुनिक सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए।
Explain the modern theory of Rent.
7. मजदूरी निर्धारण के आधुनिक सिद्धांत की विवेचना कीजिए।
Discuss the determinations of modern theory of Wage.
8. परिवर्तनशील अनुपातों के नियम की व्याख्या कीजिए।
Explain the law of variable proportions.
9. पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म का संतुलन किस प्रकार होता है ?
Explain the equilibrium of the firm under Perfect Competition.
10. कल्याण अर्थशास्त्र के पीगू के सिद्धान्त की आलोचनात्मक समीक्षा कीजिए।
Explain critically Pigou's theory of Welfare Economics.

T.M. BHAGALPUR UNIVERSITY, EXAM., 2013

1. **वस्तुनिष्ठ प्रश्न के लिए देखें पेज नं. 12**
2. व्यष्टि अर्थशाला क्या है? इसके क्षेत्र, महत्व तथा सीमाओं की विवेचना कीजिए।
What is micro Economics ? Explain its scope, Importance and limitation.
3. उदासीनतम वक्र की परिभाषा दें। उदासीनता वक्र की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन करें।
Define Indifference curves. Describe the main characteristics of Indifference curves.
4. उपभोक्ता की बचत धारणा की आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। आर्थिक विश्लेषण में इसका क्या महत्व है ? Critically explain the concept of consumer's surplus. What is the significance of consumers surplus in Economic Analysis ?
5. अल्पकालीन औसत कुल इकाई लागत वक्र की आकृति U आकार का क्यों होती है।
Why the Short-Run Average Total Unit cost curve is 'U' Shaped ?
6. समोत्पाद वक्रों की सहायता से आप उत्पादक संतुलन की व्याख्या कीजिए।
Explain the concept of Producer's equilibrium with the help of Equal Product curves.

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

7. पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत उद्योग के अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन संतुलन के शर्तों की व्याख्या कीजिए। Discuss the condition of Short Run and Long Run equilibrium of an industry under perfect competition.
8. रिकार्डो के लगान सिद्धान्त की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए।
Critically analyse the Ricardian Theory of Rent.
9. शुम्पीटर द्वारा प्रतिपादित लाभ के नवप्रवर्तन सिद्धान्त की विवेचना करें।
Discuss Schumpeter's Innovation theory of profit.
10. कल्याण अर्थशास्त्र में पैरेटो के सिद्धान्त की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए।
Critically examine Parato's theory of Welfare Economics.

T.M. BHAGALPUR UNIVERSITY, EXAM., 2014

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न के लिए देखें पेज नं. 12
2. उदासीनता वक्र विश्लेषण की सहायता से यह स्पष्ट कीजिए कि उपभोक्ता किस प्रकार संतुलनावस्था प्राप्त करते हैं। Explain how the consumer attains equilibrium in terms of Indifference curve analysis.
3. उत्पादन फलन से आप क्या समझते हैं ? परिवर्तनशील अनुपात के नियम की व्याख्या कीजिए। What do you mean by Production Function ? Explain the Law of Variable Proportions.
4. पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत किस प्रकार कीमत निर्धारित की जाती है ?
How the price is determined under Perfect Competition ?
5. वितरण के सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त की आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।
Critically explain the marginal productivity theory of distribution.
6. लगान के आधुनिक सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए। किस प्रकार सभी साधनों की आय पर यह सिद्धान्त लागू किया जाता है।
Explain the Modern Theory of Rent.show how it can be applied to all factor incomes.
7. "पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत मजदूरी श्रम के सीमान्त और औसत लागत उत्पाद के बराबर होती है।" स्पष्ट कीजिए, क्या सामूहिक सौदेबाजी मजदूरी को प्रभावित कर सकती है ?
"Wages under Perfect Competition are equal to the marginal and average productivity of labour." Explain can collective bargaining affect wages ?
8. लाभ के अनिश्चितता वहन सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए।
Explain the Uncertainity-Bearing theory of Profit.
9. प्रोफेसर पीगू के कल्याणकारी अर्थशास्त्र की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए।
Critically explain the Professor Pigou's Welfare Economics.
10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखें :
Write notes on any two of the following :
(a) उपभोक्ता की बचत consumer's Surplus
(b) माँग की कीमत लोच Price Elasticity of Demand
(c) सीमा रेखायें Ridge Lines

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

(d) लगान एक विभेदात्मक बचत है । Rent is a Differential Surplus.

T.M. BHAGALPUR UNIVERSITY, EXAM., 2015

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न के लिए देखें पेज नं. 13
2. What is Micro and Macro Economcs ? Explain their importance and differentiate between them.
   व्यष्टि और समष्टि अर्थशास्त्र क्या है ? इनके महत्व को बतायें एवम् इनके बीच अन्तर को स्पष्ट करें ।
3. What do you mean by Elasticity of Demand ? How can it be measured ?
   माँग की लोच से आप क्या समझते हैं ? इसे कैसे मापा जा सकता है ?
4. Critically explain the concept of 'consumer's Surplus'.
   'उपभोक्ता की बचत' धारणा की आलोचनात्मक परीक्षण करें ।
5. Distinguish among income, substitution and price effect with the help of indifference curve analysis. तटस्थता वक्र विश्लेषण की सहायता से आय, प्रतिस्थापन एवम् मूल्य प्रभाव में अन्तर स्पष्ट करें ।
6. Explain iso-product curve and its characteristics.
   सम-उत्पाद वक्र एवम् इनकी विशेषताओं को स्पष्ट करें ।
7. Why is the average cost curve of a firm U-shaped ? Does time bring any effect upon the shape of the average cost curve ?
   किसी फर्म का औसत लागत वक्र U-आकार का क्यों होता है ? क्या औसत लागत वक्र के आकार पर समय का कोई प्रभाव पड़ता है?
8. What is Monopoly ? How price is determined under Monopoly ?
   एकाधिकार क्या है ? एकाधिकार के अन्तर्गत मूल्य का निर्धारण किस प्रकार होता है?
9. Critically analysis the Ricardian Theory of Rent.
   रिकार्डो के लगान सिद्धान्त की आलोचनात्मक व्याख्या करें ।
10. Critically examine Pareto's Theory of Welfare Economics.
    कल्याण अर्थशास्त्र के पैरेटो के सिद्धान्त की आलोचनात्मक समीक्षा करें ।

T.M. BHAGALPUR UNIVERSITY, EXAM., 2016

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न के लिए देखें पेज नं. 13
2. Is the nature of economics related to Art or Science ? Explain.
   अर्थशास्त्र की प्रकृति कला से सम्बन्धित है अथवा विज्ञान से ? उल्लेख करें ।
3. Explain the conditions of Consumer's Equilibrium with the help of Indifference Curve.
   तटस्थता वक्र की सहायता से उपभोक्ता के संतुलन की शर्तों का उल्लेख करें ।
4. Discuss the Law of Variable proportions.
   परिवर्तनशील अनुपात के नियम की विवेचना करें ।
5. Analyse the conditions of Firm's equilibrium under Perfect Competition.
   पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत फर्म के संतुलन की शर्तों का विश्लेषण करें ।
6. Outline the Modern Theory of Rent.
   लगान के आधुनिक सिद्धान्त का आकलन करें ।
7. Examine Knight's Theory of Profit.

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

नाइट के लाभ के सिद्धान्त का विश्लेषण करें ।

8. Is it possible to measure 'Welfare' ? Elucidate.
क्या 'कल्याण' की माप संभव है ? स्पष्ट करें ।

9. Discuss Marginal Productivity theory of distribution.
वितरण के सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त की विवेचना करें ।

10. Write short notes on any two of the following.
निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखें ।
(a) Law of Demand (मांग का नियम
(b) Micro Economics (व्यष्टि अर्थशास्त्र)
(c) isoquant (समोत्पाद वक्र)
(d) Price Discrimination (कीमत विभेद)

T.M. BHAGALPUR UNIVERSITY, EXAM., 2017

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न के लिए देखें पेज नं. 13

2. Define Micro ad Macro Economics. explain the importance and limitations of micro economics.
व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र को परिभाषित करें । व्यष्टि अर्थशास्त्र के महत्व एवं सीमाओं की विवेचना कीजिए ।

3. What do you mean by Elasticity of Demand? How can it be measured ?
माँग की लोच से आप क्या समझते हैं ? इसे कैसे मापा जा सकता है ?

4. Critically explain the concept of Consumer's Surplus. Discuss its significance in economic analysis.
उपभोक्ता की बचत अवधारणा की आलोचनात्मक परीक्षण करें । आर्थिक विश्लेषण में इसके महत्व का वर्णन करें ।

5. Critically examine Pigou's welfare economics.
पीगू के कल्याणकारी अर्थशास्त्र की आलोचनात्मक व्याख्या करें ।

6. Explain the concept of producer's equilibrium with the help of iso-quants.
सम-उत्पाद वक्र की सहायता से उत्पादक के संतुलन की व्याख्या करें ।

7. What is Monopoly ? How price determined under Monopoly ?
एकाधिकार क्या है? एकाधिकार के अन्तर्गत मूल्य का निर्धारण किस प्रकार होता है?

8. Discuss Schumpeter's Innovation Theory of Profit.
शुम्पीटर द्वारा प्रतिपादित लाभ के नवप्रवर्तन सिद्धान्त की विवेचना करें ।

9. Critically analyse the Ricardian Theory of Rent.
रिकार्डो के लगान सिद्धान्त की आलोचनात्मक व्याख्या करें ।

10. Write short notes on any two of the following.
निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखें ।
(a) Indifference Curve (तटस्थता वक्र)
(b) Perfect Competition (पूर्ण प्रतियोगिता)
(c) Fixed and Variable Costs (स्थिर तथा परिवर्तनशील लागत) (d) Wages (मजदूरी)

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

T.M. BHAGALPUR UNIVERSITY, EXAM., 2018

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न के लिए देखें पेज नं. 14
2. Explain consumer's equilibrium with the help of indifference curve analysis.
उदासीनता वक्र विश्लेषण की सहायता से उपभोक्ता सन्तुलन की व्याख्या करें।
3. What do you mean by production function ? Explain the law of variable proportions.
उत्पादन फलन से आप क्या समझते हैं ? परिवर्तनशील अनुपात के नियम की व्याख्या करें।
4. Critically explain the marginal productivity theory of distribution.
वितरण की सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त की आलोचनात्मक परीक्षण करें।
5. How price is determined under perfect competition ?
पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत किस प्रकार कीमत निर्धारित की जाती है ?
6. Critically examine Pareto's theory of Welfare Economics.
कल्याण अर्थशास्त्र के पैरेटो के सिद्धान्त की आलोचनात्मक समीक्षा करें।
7. Explain the Modern Theory of Rent. Show how it can be applied to all factor incomes.
लगान के आधुनिक सिद्धान्त की व्याख्या करें। किस प्रकार सभी साधनों की आय पर यह सिद्धान्त लागू किया जाता है ?
8. Why are average cost curves generally 'U' shaped ? Why are long period average cost curves flatter ?
औसत लागत वक्र सामान्यतः 'U' आकार के क्यों होते हैं ? दीर्घकालीन लागत वक्र अपेक्षाकृत फैले हुए क्यों होते हैं ?
9. What is price discrimination ? How is price determined under discriminating monopoly ? कीमत विभेद क्या है ? विभेदात्मक एकाधिकार के अन्तर्गत किस प्रकार कीमत का निर्धारण किया जाता है ?
10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें :
(a) Law of Demand मांग का नियम (b) Average Revenue and Marginal Revenue औसत आगत एवं सीमान्त आगत (c) Isoquant Curve समोत्पाद वक्र (d) Problems of measuring 'welfare' 'कल्याण' के मापन की समस्या।

T.M. BHAGALPUR UNIVERSITY, EXAM., 2019

किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दें जिसमें प्रश्न संख्या 1 अनिवार्य है।

1. निम्नलिखित कथन 'सत्य' हैं या 'असत्य' लिखें :
(a) मार्शल के उपयोगिता विश्लेषण की अवधारणा के अनुसार उपयोगिता को मापा जा सकता है।
(b) मूल्य-विभेदीकरण पूर्ण प्रतियोगिता से संबंधित है।
(c) उपभोक्ता की बचत मांग के नियम पर आधारित है।
(d) जितना ऊँचा उदासीनता वक्र उतनी कम सन्तुष्टि।
(e) लाभ का अनिश्चितता सिद्धान्त शुम्पीटर द्वारा प्रतिपादित है।
(f) पीगू कल्याणकारी अर्थशास्त्र के जनक हैं।
(g) अनुकूलतम फर्म न्यूनतम लागत संयोग वाली फर्म होती है।
(h) कुल लागत स्थिर लागत एवं परिवर्तनशील लागत का योग है।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

(i) आय-प्रभाव प्रतिस्थापन-प्रभाव मुख्य रूप से मूल्य प्रभाव का परिणाम है।

(j) रिकार्डो का लगान सिद्धान्त शास्त्रीय लगान सिद्धान्त के नाम से भी जाना जाता है।

2. What do you mean by Micro and Macro Economics ? Explain the difference between the two.
सूक्ष्म तथा व्यापक अर्थशास्त्र से आप क्या समझते हैं ? इन दोनों के बीच के अन्तर की व्याख्या कीजिए।

3. Discuss the main characteristics of Indifference Curve.
उदासीनता वक्र की मुख्य विशेषताओं की विवेचना करें।

4. What is Isoquant ? Explain producer's equilibrium with the help of isoquant.
समोत्पाद वक्र क्या है ? समोत्पाद वक्र की सहायता से उत्पादक के सन्तुलन की विवेचना कीजिए।

5. How price is determined under Monopoly ?
एकाधिकार के अन्तर्गत किस प्रकार कीमत निर्धारित की जाती है ?

6. Examine critically Knight's theory of Profit.
नाईट के लाभ सिद्धान्त की आलोचनात्मक समीक्षा करें।

7. Critically analyse the Classical Welfare Economics.
शास्त्रीय कल्याण अर्थशास्त्र का आलोचनात्मक विश्लेषण करें।

8. What do you mean by price elasticity of demand ? Explain the factors which influence the elasticity of demand.
मांग की कीमत लोच से आप क्या समझते हैं ? उन तत्वों का उल्लेख कीजिए जो मांग की लोच को प्रभावित करते हैं।

9. Explain the Ricardian Theory of Rent.
रिकार्डो के लगान सिद्धान्त का वर्णन करें।

10. Write short notes on any two of the following :
(a) Marginal Productivity Theory of Distribution.
वितरण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त
(b) Consumer's Surplus उपभोक्ता की बचत
(c) Short-run Cost Curves अल्पकालीन लागत वक्र
(d) Pareto Optimality पैरेटो अनुकूलतम

❖❖❖

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

शिक्षक, अभिभावक एवं परीक्षार्थी कहते हैं

अलका गेस पेपर है सबसे पुराना

परिणाम भी सबसे बढ़िया

पिछले कई वर्षों से लगातार भागलपुर विश्वविद्यालय परीक्षा के विभिन्न विषयों में सर्वाधिक प्रश्न इसी गेस पेपर से पूछे गए हैं ।

पिछले 50 वर्षों से आपकी सेवा में

सबसे लोकप्रिय नं. - 1 गेस पेपर

अलका गेस पेपर

Special Features

- विश्वविद्यालय में पूछे गए प्रश्न (Question Bank)
- शत-प्रतिशत प्रश्नों के आने की संभावना
- प्रश्नों के संक्षिप्त और स्पष्ट उत्तर
- अनुभवी प्राध्यापकों द्वारा तैयार
- परीक्षोपयोगी गाईडेन्स

सफलतम सर्वश्रेष्ठ एवं नं. 1 परीक्षा-पथ प्रदर्शक

अलका गेस पेपर

Alka Publication

Patna-4

नक्कलों से सावधान

₹ 80/-

अलका गेस पेपर खरीदने के पहले 3-D Hologram Sticker में हाथी जरूर से देख लें ।

WWW.GRADESETTER.COM